आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.
महारत्न कंपनी

आरईसी लिमिटेड की
गृह पत्रिका

तमसो मा ज्योतिर्गमय

ऊर्जायन

अंक-12 | जुलाई -दिसंबर, 2025

संस्कृति एवं पर्यटन विशेषांक

19 जून, 2025 को नई दिल्ली में आयोजित भारत सरकार के विद्युत मंत्रालय की हिंदी सलाहकार समिति की बैठक में आरईसी लिमिटेड को विद्युत मंत्रालय के अधीन सभी कार्यालयों एवं उपक्रमों में राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य के लिए राजभाषा दीप्ति शील्ड से पुरस्कृत किया गया। यह पुरस्कार वर्ष 2023-24 में भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रदान किया गया।

बैठक में आरईसी की पत्रिका "ऊर्जायन" का विमोचन

पत्रिका प्रबंधकीय मंडल

संरक्षक
श्री जितेन्द्र श्रीवास्तव, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

श्री हर्ष बवेजा
निदेशक (वित्त)

श्री टी. एस. सी. बोष
निदेशक (परियोजना)

श्री ए. के. त्यागी
कार्यपालक निदेशक (राजभाषा)

संपादक
डॉ. व्योमकेश शर्मा
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादन सहयोग
श्री सद्दाम खान
अधिकारी (राजभाषा)

श्री विकास भकत
अधिकारी (राजभाषा)

श्री रंजन कलिता
सहायक अधिकारी (राजभाषा)

साज-सज्जा एवं डिजाइन
बीडीएम - सीसीपीआर विभाग
आरईसी लिमिटेड

हमसे संपर्क करें
आरईसी लिमिटेड

प्लॉट नं. आई-4, सेक्टर-29,
गुरुग्राम, हरियाणा-122001

फोन: 91-124-4441300
ई-मेल: recrajbhasha@recindia.com
वेबसाइट: www.recindia.nic.in
सीआईएन: L40101DL1969GO1005095

इस पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं है कि आरईसी की उनसे सहमति हो। अत: पत्रिका में व्यक्त विचारों के लिए आरईसी अथवा संपादन टीम किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है, इसके लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी हैं।

अनुक्रम

संदेश

- अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश 03
- निदेशक (वित्त) का संदेश 04
- निदेशक (परियोजना) का संदेश 05
- कार्यपालक निदेशक (राजभाषा) का संदेश 06

लेख

- इनसाइडर ट्रेडिंग: कर्मचारी सावधान रहें-दिनेश गर्ग 07
- भारत में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न चरण: इतिहास एवं वर्तमान - श्रीमती अंशु बवेजा 10
- अमृतसर: खाने के शौकीनों का स्वर्ग- सिमरदीप सिंह 13
- भारत में दशहरा: धार्मिक संस्कृति के विविध रूप- सुमित सिंह 15
- उदयपुर: झीलों की नगरी की स्वप्निल यात्रा- अमन जायसवाल 17
- शिलांग के मावलिननॉन्ग गाँव में एक दिन - व्योमकेश शर्मा 19
- अहिल्या बाई होलकर 18वीं सदी के भारत में समृद्धि और समावेशी शासन की वास्तुकार- असीम गुप्ता 21
- आपणो शहर जोधपुर: मरुस्थलीय सौंदर्य, सांस्कृतिक वैभव एवं नवीकरणीय ऊर्जा का शहर- मुकेश 23
- रामायण की सीख, गीता का ज्ञान: मिथिला की पहचान- रवि कुमार 25
- सतपुड़ा की रानी "पचमढ़ी"-सद्दाम खान 27
- देवों की भूमि: केरल – विकास भकत 30
- फ़िरोज़ाबाद: कांच नगरी ही नहीं इतिहास के पन्ने समेटे एक जीवंत शहर- अशोक कुमार 32
- पूर्वोत्तर भारत और कार्बी जनजाति: शशांक कुमार 34
- बिहू: समृद्धि और उल्लास का संगीतमय पर्व- रंजन कलिता 36
- जल संकट: मौजूदा हालात और समाधान की और कदम – एकता भार्गव 39
- हरित भविष्य की ओर एक कदम: ऊर्जा की नई कहानी- एस एस गौतम कुमार 40
- ऊँ ध्वनि का महत्व और इसकी आवृतियों का प्रभाव- अनंता गोयल 41
- स्मार्ट मीटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: ऊर्जा के भविष्य के लिए एक शक्तिशाली साझेदारी- राहुल गुप्ता 43
- एआई और मानव अस्तित्व का भविष्य- मोनिका प्रियदर्शनी 47
- स्टार्टअप्स के लिए व्यवसाय नियोजन में बाज़ार अनुसंधान का महत्व- इरफ़ान राशिद 50
- राजभाषा: केंद्र सरकार बनाम निजी क्षेत्र- ऋषभ मुदगल 52
- व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन- कुन्दन लाल 54

कार्यक्षेत्र एवं कारोबार

- 56वां स्थापना दिवस 56
- 79वां स्वतंत्रता दिवस 60
- राष्ट्रीय खेल दिवस 62
- हिन्दी कवि सम्मेलन 64
- हिंदी पखवाड़ा समारोह 66
- संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषायी निरीक्षण 68

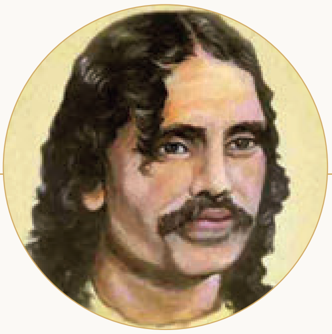

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।

उन्नति पूरी है तबहिं जब घर उन्नति होय
निज शरीर उन्नति किये, रहत मूढ़ सब कोय।

भारतेंदु हरिश्चंद्र
(आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक)
9 सितंबर 1850 - 6 जनवरी 1885

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश

हिंदी, केवल एक भाषा नहीं है, यह हमारी राष्ट्रीय अस्मिता, संस्कृति और संस्कारों की संवाहक है। संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को इसे संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, जो देश की एकता और अखंडता के लिए एक ऐतिहासिक निर्णय था। यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि हमारी कंपनी राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और सरकारी कामकाज में इसके उपयोग को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

आरईसी लिमिटेड, एक सरकारी उपक्रम के रूप में केंद्र सरकार की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। यह हमारा संवैधानिक और नैतिक दायित्व है कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दें। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि हिंदी देश के एक बड़े भू-भाग की जन-भाषा और संपर्क भाषा है। जब हम हिंदी में काम करते हैं, तो हम देश के आम नागरिकों के साथ अधिक प्रभावी ढंग से जुड़ते हैं और सरकारी योजनाओं और नीतियों को उन तक आसानी से पहुँचाते हैं।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आरईसी लिमिटेड की वार्षिक राजभाषा हिंदी पत्रिका "ऊर्जायन" का नवीनतम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत होने जा रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे निगम में राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है, बल्कि यह हमारे सभी कर्मचारियों की सृजनात्मकता और साहित्यिक अभिरुचि को भी एक मंच प्रदान करती है। इस अवसर पर, मैं आप सभी को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग और संपादकीय मंडल की पूरी टीम को शुभकामनाएँ देता हूँ।

जितेन्द्र श्रीवास्तव, आई.ए.एस.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

कार्यपालक निदेशक (वित्त) का संदेश

मुझे बेहद खुशी हो रही है कि आरईसी की राजभाषा गृह पत्रिका "ऊर्जायन" का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत है। राजभाषा गृह पत्रिका के इस नवीनतम और प्रेरणादायक अंक के प्रकाशन पर मैं आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। यह पत्रिका हमारे साहित्यिक और सांस्कृतिक प्रयासों की परिचायक है, और यह सिद्ध करती है कि वित्तीय क्षेत्र में उत्कृष्टता के साथ-साथ हम अपनी राजभाषा हिंदी के संवर्धन और प्रसार के प्रति भी उतने ही समर्पित हैं।

आरईसी, जो एक 'महारत्न' उपक्रम और भारत के ऊर्जा क्षेत्र की प्रमुख वित्तीय आधारशिला है, जिसने पिछले कुछ वर्षों में असाधारण वित्तीय स्थिरता और विकास प्रदर्शित किया है। हमारा उद्देश्य भारत के हर कोने में सतत ऊर्जा पहुँचाना है, और इस यात्रा में हमारे कर्मचारियों के बीच संवाद एकता और राष्ट्रीय भावनाओं का पोषण अत्यंत महत्वपूर्ण है।

यह गृह पत्रिका केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि हमारे कर्मचारियों की रचनात्मकता, वैचारिक अभिव्यक्ति और भाषा प्रेम का जीवंत प्रमाण है। वित्तीय तनावों के बीच, यह पत्रिका हमें साहित्यिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़ने का अवसर प्रदान करती है। इस अंक में प्रकाशित तकनीकी आलेख, कविताएँ, कहानियाँ और लेख न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि राजभाषा के प्रति हमारे सम्मान को भी प्रदर्शित करते हैं।

मैं इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए राजभाषा विभाग और पत्रिका से जुड़े सभी कार्मिकों को बधाई देता हूँ। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम सब मिलकर आरईसी को वित्तीय क्षेत्र में नई ऊँचाइयों पर ले जाएँगे, साथ ही राजभाषा हिंदी के गौरव को भी अक्षुण्ण रखेंगे।

हर्ष बवेजा
निदेशक (वित्त)

निदेशक (परियोजना) का संदेश

आरईसी लिमिटेड की राजभाषा गृह पत्रिका "ऊर्जायन" के नवीन संस्करण के प्रकाशन पर मैं अपनी हार्दिक बधाई देता हूँ। मैं निदेशक (परियोजना) के रूप में मानता हूँ कि यह पत्रिका न केवल हमारी कॉर्पोरेट यात्रा का एक दर्पण है, बल्कि यह ऊर्जा क्षेत्र में तकनीकी प्रगति और नवाचार की हमारे अथक परिश्रम को भी दर्शाती है। विद्युतीकरण के क्षेत्र में आरईसी, भारत सरकार के अधीन एक प्रमुख उपक्रम है, जिसने हमेशा से देश की ऊर्जा अवसंरचना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आज, जब भारत 'विकसित राष्ट्र' बनने के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, हमारी सबसे बड़ी जिम्मेदारी यह सुनिश्चित करना है कि देश की बढ़ती ऊर्जा माँग को विश्वसनीय, कुशल और टिकाऊ प्रौद्योगिकियों के माध्यम से पूरा किया जाए।

आरईसी ऊर्जा क्षेत्र की बदलती जरूरतों के अनुसार अपनी विशेषज्ञता को लगातार विकसित कर रहा है। हम जिन परियोजनाओं को वित्तपोषित करते हैं, उनके तकनीकी-आर्थिक मूल्यांकन में कठोरता बनाए रखते हैं। हिंदी और अंग्रजी भाषाओं के साथ तकनीकी नवाचार और डिजिटलीकरण हमारी परिचालन क्षमता की कुंजी हैं। इस अंक में भारतीय सभ्यता और संस्कृति तथा ज्ञान-विज्ञान के अनेक विषयों पर महत्वपूर्ण आलेख प्रकाशित हुए हैं।

मैं आरईसी की राजभाषा टीम को इस नवीनतम पत्रिका के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और साथ ही इसमें प्रकाशित हुए सभी रचनाओं के कलमकारों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

टी. एस. सी. बोष
निदेशक (परियोजना)

कार्यपालक निदेशक (राजभाषा) का संदेश

लेखन एक कला है, एक शक्ति है। यह हमारे विचारों को आकार देती है, हमारी भावनाओं को शब्दों में पिरोती है और दूसरों तक संवाद का पुल बनाती है। हिंदी में लेखन हमें अपनी बात कहने और सुनने का एक सशक्त जरिया देता है-चाहे वह साहित्य हो या कार्यालयीन संवाद। मानव संसाधन प्रमुख के रूप में, मैं यह देख पाता हूँ कि कैसे हिंदी हमारे कार्यस्थल पर संवाद को सरल और प्रभावी बनाती है, हमारे कार्मिकों को एक दूसरे से जोड़ती है और संगठन में एक सकारात्मक वातावरण का निर्माण करती है।

मुझे अत्यंत खुशी है कि राजभाषा विभाग की गृह पत्रिका "ऊर्जायन" का एक उत्कृष्ट विशेषांक हम सब के बीच प्रकाशित हुआ है। यह पत्रिका हिंदी का एक ऐसा संगम है जहां नदियों की तरह हमारे विचार मिलते हैं, भावनाएँ जुड़ती हैं और भाषा की समृद्धि का उत्सव मनाया जाता है। यह हमारे कार्मिकों को हिंदी में सृजन के लिए प्रेरित करती है। कार्यालय के कार्यों में हिंदी का प्रयोग न केवल संवाद को सरल बनाता है, बल्कि यह हमारी एकता और अखंडता को भी मजबूत करता है। हमारे कार्यालय में यह सदैव से प्रयास रहा है कि राजभाषा हिंदी का उपयोग न केवल राजभाषा नीति के अनुरूप बढ़े, बल्कि कार्मिकों की कार्यकुशलता और आत्मविश्वास को भी प्रोत्साहित करे। हिंदी का प्रयोग किसी भाषा विशेष को थोपने का प्रयास नहीं, बल्कि हमारे संवैधानिक उत्तरदायित्व और सांस्कृतिक गौरव का सम्मान है।

राजभाषा हिंदी के प्रगति की दिशा में राजभाषा विभाग द्वारा किए जा रहे सराहनीय कार्य के लिए तथा "ऊर्जायन" के नवीनतम प्रकाशन हेतु मैं राजभाषा विभाग की पूरी टीम को हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई देता हूँ।

अरूण कुमार त्यागी
कार्यपालक निदेशक (राजभाषा)

इनसाइडर ट्रेडिंग: कर्मचारी सावधान रहें

दिनेश गर्ग, महाप्रबंधक एवं कंपनी सचिव

इनसाइडर ट्रेडिंग: कर्मचारी सावधान रहें

तेजी से विकसित हो रहे वित्तीय वातावरण में, निवेशकों के विश्वास और कॉर्पोरेट प्रशासन को बनाए रखने के लिए प्रतिभूति व्यापार में पारदर्शिता और नैतिक आचरण सर्वोपरि है। इसे स्वीकार करते हुए, हाल ही में, "नामित व्यक्तियों और उनके तत्काल रिश्तेदारों द्वारा व्यापार के विनियमन, निगरानी और रिपोर्टिंग के लिए आरईसी की आचार संहिता" को सेबी (इनसाइडर ट्रेडिंग का निषेध) विनियम, 2015 के अनुरूप संशोधित किया गया था।

यह लेख संशोधित संहिता के सार, इसकी प्रयोज्यता और आरईसी में शासन के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए कर्मचारियों की जिम्मेदारी को उजागर करने का प्रयास करता है।

कोड क्या है?

आरईसी लिमिटेड की आचार संहिता कंपनी की प्रतिभूतियों से संबंधित अप्रकाशित मूल्य-संवेदनशील सूचना (यूपीएसआई) के दुरुपयोग को रोकने के लिए सेबी के इनसाइडर ट्रेडिंग विनियमों के तहत तैयार किया गया एक नियामक ढांचा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य निष्पक्ष और पारदर्शी प्रतिभूति व्यापार सुनिश्चित करने और निवेशकों के हितों की रक्षा करने के लिए यूपीएसआई तक पहुंच रखने वाले व्यक्तियों की व्यापारिक गतिविधियों को विनियमित करना, निगरानी करना और रिपोर्ट करना है। यह कंपनी के शेयरों के व्यापार के संबंध में अंदरूनी सूत्रों और नामित व्यक्तियों के लिए क्या करें और क्या न करें, घोषणाएं दायित्वों, पूर्व-निकासी प्रक्रियाओं और उल्लंघनों के लिए दंड निर्धारित करता है। संहिता संवेदनशील जानकारी को चुनिंदा रूप से जारी करने से बचने के लिए जनता और तंत्र के लिए निष्पक्ष प्रकटीकरण पर भी जोर देती है।

यह संहिता आरईसी लिमिटेड की प्रतिभूतियों में सभी लेन-देन को कवर करती है, जिसमें शेयर, परिवर्तनीय डिबेंचर, वारंट और डेरिवेटिव शामिल हैं।

यह किस पर लागू होता है?

लागू वैधानिक आवश्यकताओं के अनुपालन को सुनिश्चित करते हुए अधिक व्यावहारिक दृष्टिकोण पर विचार करते हुए संहिता की प्रयोज्यता को संशोधित किया गया है। यह संहिता नामित व्यक्तियों और उनके तत्काल रिश्तेदारों पर लागू होती है।

नामित व्यक्तियों में शामिल हैं:

- निदेशक मंडल के सभी सदस्य, प्रमुख प्रबंधकीय कार्मिक (केएमपी) और मुख्य सतर्कता अधिकारी।
- कार्यकारी संवर्ग के सभी नियमित कर्मचारी विशिष्ट उच्च जोखिम वाले प्रभागों जैसे कॉर्पोरेट लेखा और कराधान, ऋण और वसूली, व्यवसाय विकास और विपणन, संसाधन जुटाने, कंपनी सचिव प्रभाग, सीएमडी और पूर्णकालिक निदेशकों के कार्यालयों और अन्य अधिसूचित प्रभागों में काम कर रहे हैं।
- कंपनी और उसकी सहायक कंपनियों में ई-7 और उससे ऊपर के स्तर के कर्मचारी।
- सहायक कंपनियों में समान या उच्च स्तर पर निदेशक और कर्मचारी।
- कंपनी के सभी प्रमोटर।
- कोई भी व्यक्ति या सहायक कर्मचारी, मध्यस्थ या न्यासी (स्थायी या अनुबंधित), जिनके पास अनुपालन अधिकारी द्वारा अधिसूचित यूपीएसआई तक पहुंच हो सकती है।

पुराने कोड की तुलना में नए कोड में बड़े बदलाव:

- **नामित व्यक्तियों की संशोधित परिभाषा:** नई संहिता निचले स्तर के कर्मचारियों को बाहर करके नामित व्यक्तियों की परिभाषा को संकीर्ण और सुव्यवस्थित करती है, जिनकी UPSI तक पहुंच की संभावना नहीं है। यह केवल उच्च प्रबंधन स्तरों और प्रमुख कार्यात्मक प्रभागों में कार्यकारी कैडर के कर्मचारियों पर केंद्रित है।
- **UPSI की विस्तारित परिभाषा:** UPSI के दायरे को SEBI के संशोधनों के अनुरूप स्पष्ट और विस्तारित किया गया है, जिसमें विशिष्ट घटनाओं और परिस्थितियों को सूचीबद्ध किया गया है जो विलय, वित्तीय परिणाम, रेटिंग परिवर्तन, मुकदमेबाजी के परिणाम, फोरेंसिक ऑडिट और बहुत कुछ सहित मूल्य-संवेदनशील जानकारी का गठन करते हैं।
- **ट्रेडिंग विंडो संशोधन:** विंडो बंद करने की अवधि को सामग्री घटना की तारीखों और सेबी दिशानिर्देशों के साथ अधिक संरेखित करने के लिए अपडेट किया गया है - उदाहरण के लिए, पहले के दस दिनों के बजाय बोर्ड की बैठक या घटना से पांच दिन पहले व्यापार प्रतिबंधित है। संहिता अनुपालन अधिकारी को मानक अवधि से परे समापन का निर्णय लेने का अधिकार देती है।
- **ट्रेडिंग योजनाओं को औपचारिक रूप देना:** ट्रेडिंग योजनाओं (लेनदेन के अग्रिम अनुसूची) पर नए विस्तृत प्रावधानों में मूल्य सीमा, विशिष्ट तिथियां और अपरिवर्तनीयता के लिए दायित्व जैसे पैरामीटर शामिल हैं।
- **अनुपालन अधिकारी सशक्तिकरण:** सीएमडी के पास संशोधन के लिए पूरा अधिकार है। अनुपालन अधिकारी को वैधानिक संशोधनों के बाद संहिता में प्रक्रियात्मक परिवर्तन करने का अधिकार है।
- **प्रकटीकरण प्रारूपों का संरेखण:** अद्यतन प्रकटीकरण प्रारूप सेबी के संशोधित टेम्पलेट्स और बढ़ी हुई पारदर्शिता आवश्यकताओं के अनुरूप हैं।
- **मुखबिरों के लिए संरक्षण:** संहिता उन कर्मचारियों के लिए प्रतिशोध के खिलाफ सुरक्षा के प्रावधान पेश करती है जो उल्लंघन की रिपोर्ट करते हैं या यदि आवश्यक हो तो सेबी जांच में सहायता करते हैं।
- **दंड और प्रवर्तन:** दंड के प्रावधान ₹10 लाख से ₹25 करोड़ तक के न्यूनतम जुर्माने या इनसाइडर ट्रेडिंग से किए गए लाभ का तीन गुना दर्शाने के लिए निर्दिष्ट किए गए हैं।

कर्मचारियों को क्या जानने की जरूरत है?

- **गोपनीयता बनाए रखें:** कर्मचारियों को सभी UPSI को सख्ती से गोपनीय रखना चाहिए और वैध उद्देश्यों के लिए केवल "जानने की आवश्यकता" के आधार पर इसका खुलासा करना चाहिए। परिवार या दोस्तों सहित अनधिकृत व्यक्तियों के साथ UPSI साझा करना प्रतिबंधित है।

- **ट्रेडिंग विंडो का निरीक्षण करें:** आरईसी प्रतिभूतियों में किसी भी ट्रेडिंग की अनुमति नहीं है निषिद्ध अवधि या अनुपालन अधिकारी द्वारा बंद की गई ट्रेडिंग विंडो के दौरान। उल्लंघन करने पर दंड और अनुशासनात्मक कार्रवाई हो सकती है।

- **पूर्व-निकासी प्रक्रियाएं:** निर्दिष्ट स्तरों पर कर्मचारियों को सीमा से ऊपर व्यापार करने से पहले पूर्व-निकासी की तलाश करनी चाहिए और इस तरह की निकासी की निर्दिष्ट समयसीमा के भीतर लेनदेन पूरा करना चाहिए।

- **कॉन्ट्रा ट्रेडों से बचें:** कर्मचारियों को किसी भी पूर्व व्यापार के छह महीने के भीतर विपरीत लेनदेन (खरीदना और फिर बेचना या इसके विपरीत) नहीं करना चाहिए जब तक कि कोड में निर्दिष्ट न हो।

- **शीघ्र प्रकटीकरण:** नामित व्यक्तियों को निर्धारित प्रपत्रों और समयसीमा के अनुसार स्वयं और उनके तत्काल रिश्तेदारों द्वारा रखी गई प्रतिभूतियों के प्रारंभिक और निरंतर प्रकटीकरण प्रस्तुत करने होंगे।

- **रिपोर्ट संदिग्ध लीक:** कर्मचारियों को प्रतिशोध के डर के बिना व्हिसल ब्लोअर नीति के तहत यूपीएसआई के संदिग्ध लीक की रिपोर्ट करनी चाहिए।

इन जिम्मेदारियों को सामूहिक रूप से अपनाकर, कर्मचारी आरईसी को कॉर्पोरेट गवर्नेंस के उच्चतम मानकों को बनाए रखने, निवेशकों के हितों की रक्षा करने और पूंजी बाजारों में कंपनी की प्रतिष्ठा को मजबूत करने में मदद कर सकते हैं।

आइए सतर्क और आज्ञाकारी रहें।

विशेष आमंत्रित आलेख

भारत में महिला सशक्तिकरण के विभिन्न चरण: इतिहास एवं वर्तमान

श्रीमती अंशु बवेजा

स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था, "जैसे एक पक्षी एक पंख से नहीं उड़ सकता, वैसे ही कोई राष्ट्र तब तक उन्नति नहीं कर सकता जब तक कि उसकी महिलाओं की स्थिति में सुधार न हो।" महिला सशक्तिकरण का अर्थ महिलाओं को उनके जीवन से जुड़े निर्णय लेने, उन्हें समान अवसर प्रदान करने और समाज में उनकी गरिमा सुनिश्चित करने की प्रक्रिया है। आज 21वीं सदी के भारत में यह कथन बहुत अच्छे से चरितार्थ हो रहा है। आज भारत 'महिला विकास' की पुरानी धारणा को पीछे छोड़कर 'महिला नेतृत्व वाले विकास' के युग में प्रवेश कर चुका है। भारत में महिला सशक्तिकरण को अगर हमें अच्छे से समझना है तो हमें वैदिक काल को देखना होगा।

वैदिक काल (लगभग 1500–500 ई.पू.) भारतीय इतिहास का वह स्वर्णिम अध्याय है जहाँ महिलाओं की स्थिति न केवल सम्मानजनक थी, बल्कि कई मायनों में आधुनिक युग की तुलना में अधिक स्वतंत्र और सशक्त थी। वैदिक समाज में शिक्षा को मोक्ष और सामाजिक प्रतिष्ठा का द्वार माना जाता था, और यह द्वार महिलाओं के लिए पूरी तरह खुला था। उस काल में लड़कों की तरह लड़कियों का भी 'जनेऊ' संस्कार होता था, जिसके बाद वे वेदों का अध्ययन शुरू करती थीं। ऋग्वेद में लगभग 27 महिला ऋषियों का उल्लेख है जिन्होंने वैदिक ऋचाओं (मंत्रों) की रचना की। इनमें लोपामुद्रा, घोषा, अपाला, और विश्ववारा प्रमुख हैं।

वे महिलाएँ जो विवाह न कर अपना पूरा जीवन दर्शन और धर्मशास्त्र के अध्ययन में व्यतीत करती थीं, उन्हें ब्रह्मवादिनी कहा जाता था। वैदिक काल में महिलाएँ घर की 'साम्राज्ञी' मानी जाती थीं। उनके बिना कोई भी शुभ कार्य पूर्ण नहीं होता था। महिलाओं को अपना जीवनसाथी चुनने का अधिकार था। 'स्वयंवर' प्रथा इसका प्रमाण है। ऋग्वेद में वयस्क होने पर ही विवाह के प्रमाण मिलते हैं, बाल विवाह जैसी कुप्रथाएँ उस समय अस्तित्व में नहीं थीं। उस काल में स्त्रियों को 'अर्द्धांगिनी' कहा जाता था ,जिसका अर्थ है 'पति के शरीर का आधा हिस्सा'। धार्मिक अनुष्ठानों में पत्नी की उपस्थिति अनिवार्य थी; उसके बिना यज्ञ 'अपूर्ण' माना जाता था। विधवाओं को समाज में तिरस्कृत नहीं किया जाता था। उन्हें पुनर्विवाह (नियोग प्रथा के माध्यम से भी) की अनुमति थी। वैदिक काल की दो प्रमुख राजनीतिक संस्थाएँ 'सभा' और 'समिति' थीं। साक्ष्यों से पता चलता है कि महिलाएँ इन सभाओं में भाग लेती थीं और अपनी राय रखती थीं। वैदिक काल का सफर हमें सिखाता है कि भारतीय संस्कृति की जड़ें महिलाओं के सम्मान, शिक्षा और स्वायत्तता में निहित हैं। यह 'नारी शक्ति' का वह दौर था जहाँ लिंग आधारित भेदभाव के बजाय योग्यता को प्राथमिकता दी जाती थी। इसी गौरवशाली अतीत को आधार बनाकर आज भारत पुनः महिला नेतृत्व वाले विकास की ओर बढ़ रहा है।

उत्तर वैदिक काल (लगभग 1000 ई.पू. से 500 ई.पू.) भारतीय इतिहास का वह संक्रमण काल था जहाँ से महिलाओं की स्थिति में बदलाव आना शुरू हुआ। जहाँ ऋग्वैदिक काल में महिलाओं को पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त थी, वहीं उत्तर वैदिक काल में समाज के ढांचे में आए बदलावों ने महिलाओं के अधिकारों को सीमित करना शुरू कर दिया। फिर भी, इस काल को पूरी तरह 'अंधकार युग' नहीं कहा जा सकता, क्योंकि इसी दौरान गार्गी और मैत्रेयी जैसी महान महिला दार्शनिकों का उदय हुआ। इस काल के उपनिषदों में उच्च कोटि की महिला विद्वानों का उल्लेख मिलता है। जैसे मैत्रेयी (याज्ञवल्क्य की पत्नी) ने संपत्ति के स्थान पर आध्यात्मिक ज्ञान को चुना, जो उनकी उच्च चेतना को दर्शाता है। राजा जनक की सभा में गार्गी वाचक्नवी द्वारा महान ऋषि याज्ञवल्क्य को चुनौती देना यह सिद्ध करता है कि उस समय भी महिलाएँ दर्शन और तर्कशास्त्र में निपुण थीं। इस काल में धीरे-धीरे 'उपनयन संस्कार' (शिक्षा की शुरुआत का अनुष्ठान) केवल पुरुषों के लिए अनिवार्य होने लगा, जिससे आम महिलाओं की शिक्षा प्रभावित हुई। उत्तर वैदिक काल में पुत्री के जन्म को ऋग्वैदिक काल की तुलना में थोड़ा कम शुभ माना जाने लगा। 'ऐतरेय ब्राह्मण' जैसे ग्रंथों में पुत्री को 'दुखों का स्रोत' और पुत्र को 'परिवार का रक्षक' बताया गया। विवाह की आयु में कमी आने लगी, जिससे महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के अवसर कम हो गए। कुलीन वर्ग और राजाओं में बहुपत्नी प्रथा का प्रचलन बढ़ा, जिससे महिलाओं की घरेलू स्थिति पर प्रभाव पड़ा। ऋग्वैदिक काल की प्रसिद्ध संस्थाओं 'सभा' और 'समिति' में अब महिलाओं का प्रवेश वर्जित कर दिया गया। राजनीति अब पूरी तरह पुरुष-प्रधान हो गई। हालांकि वे यज्ञों में शामिल होती थीं, लेकिन अब स्वतंत्र रूप से यज्ञ करने या मंत्रोच्चार करने के उनके अधिकार कम हो गए। उन्हें धार्मिक अनुष्ठानों में पति की 'सहायक' के रूप में देखा जाने लगा। उत्तर वैदिक काल में महिला सशक्तिकरण का सफर 'समानता से अधीनता' की ओर बढ़ने लगा था। हालांकि गार्गी जैसी विदुषियों ने यह साबित किया कि बौद्धिक क्षमता में महिलाएँ किसी से कम नहीं थीं, परंतु सामाजिक और राजनीतिक ढांचे ने उन्हें हाशिए पर धकेलना शुरू कर दिया था। यही वह समय था जहाँ से बाद के मध्यकालीन समाज की रूढ़ियों की नींव पड़ी।

आधुनिक काल (19वीं सदी से वर्तमान तक) भारत में महिला सशक्तिकरण के इतिहास का सबसे क्रांतिकारी चरण रहा है। यह वह दौर था जब महिलाओं ने शिक्षा, कानून, राजनीति और अंतरिक्ष तक अपनी पहुँच बनाई। यह काल महिलाओं के लिए समाज सुधार और पुनर्जागरण का काल रहा।राजा राममोहन राय के प्रयासों से 1829 में सती प्रथा पर रोक लगी। ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह (1856) के लिए कानूनी मार्ग प्रशस्त किया। ज्योतिराव फुले और सावित्रीबाई फुले ने 1848 में पुणे में लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला। शिक्षा में उनके योगदान के लिए सावित्रीबाई फुले को भारत की पहली महिला शिक्षिका के रूप में जाना जाता है। 20वीं सदी में सशक्तिकरण का केंद्र 'समाज सुधार' से बदलकर 'स्वतंत्रता और अधिकार' हो गया। महात्मा गांधी के आह्वान पर महिलाएँ पहली बार बड़ी संख्या में घरों से बाहर निकलीं। नमक सत्याग्रह और भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भूमिका निर्णायक रही। आजाद भारत के संविधान ने महिलाओं को वह मजबूती दी, जिसका सपना समाज सुधारकों ने 19वीं सदी में देखा था। संविधान के अनुच्छेद 14, 15 और 16 ने महिलाओं को पुरुषों के समान मौलिक अधिकार और रोजगार के अवसर दिए। डॉ. बी.आर. अंबेडकर द्वारा समर्थित हिंदू कोड बिल (1950 के दशक) ने महिलाओं को उत्तराधिकार, गोद लेने और तलाक के कानूनी अधिकार दिए। आज का आधुनिक दौर 'सुधार' से ऊपर उठकर 'नेतृत्व' (Leadership) का है। 2023 में पारित नारी शक्ति वंदन अधिनियम ने संसद और विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण सुनिश्चित किया है, जो 2026 के परिदृश्य में एक मील का पत्थर है। 'मुद्रा योजना' और 'लखपति दीदी' जैसी योजनाओं ने करोड़ों महिलाओं को उद्यमी बनाया है। भारत की 'रॉकेट वुमन' ऋतु करिधाल और मुथैया वनिता ने मंगलयान और चंद्रयान मिशनों का नेतृत्व किया। नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, मनु

भाकर एवं स्मृति मंधाना जैसी महिलाओं ने अलग-अलग युगों और क्षेत्रों में भारतीय महिलाओं के लिए सफलता के नए प्रतिमान स्थापित किए हैं। इनका योगदान केवल उनकी व्यक्तिगत उपलब्धियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इन्होंने समाज की रूढ़िवादी सोच को बदलने का काम किया है। कल्पना चावला और सुनीता विलियम्स ने उस दौर में अंतरिक्ष की राह चुनी जब भारत के छोटे शहरों में लड़कियों के लिए उच्च शिक्षा भी एक संघर्ष था। उन्होंने साबित किया कि एक छोटे शहर (करनाल) की लड़की न केवल नासा (NASA) तक पहुँच सकती है, बल्कि अंतरिक्ष में भारत का प्रतिनिधित्व भी कर सकती है।उनकी शहादत और उनकी मेहनत ने विज्ञान और इंजीनियरिंग के प्रति भारतीय नारियों का नजरिया बदल दिया। उन्होंने सिखाया कि "सपनों से सफलता तक का रास्ता मौजूद है, बस उसे खोजने की इच्छाशक्ति होनी चाहिए।" जहाँ कल्पना और सुनीता ने आसमान को जीता, वहीं मनु भाकर और स्मृति मंधाना ने खेल के मैदान में भारत का सिर गर्व से ऊँचा किया है। मनु की सफलता यह दर्शाती है कि आधुनिक भारतीय नारी अब खेलों में भी विश्व स्तर पर दबदबा रखती है। उन्होंने युवाओं को यह संदेश दिया कि एकाग्रता और कड़ी मेहनत से किसी भी लक्ष्य को 'सटीक' निशाना बनाया जा सकता है। आईसीसी (ICC) महिला विश्व कप 2025 में भारतीय महिला टीम की ऐतिहासिक जीत ने न केवल खेल जगत में, बल्कि नारी सशक्तिकरण की दिशा में भी एक क्रांतिकारी बदलाव लाया है। आज की महिलाएँ भारतीय सेना में लड़ाकू विमान उड़ा रही हैं और 'परमानेंट कमीशन' प्राप्त कर रही हैं। आधुनिक काल का सफर यह दर्शाता है कि भारतीय महिला अब केवल अधिकारों की मांग करने वाली नहीं, बल्कि राष्ट्र की प्रगति का नेतृत्व करने वाली शक्ति बन गई है। चुनौतियाँ (जैसे डिजिटल डिवाइड और सुरक्षा) अभी भी हैं, लेकिन दिशा स्पष्ट रूप से आत्मनिर्भरता की ओर है। भारत में महिला सशक्तिकरण का सफर किसी एक कालखंड या आंदोलन की उपज नहीं है, बल्कि यह सदियों के संघर्ष, नीतिगत बदलावों और सामाजिक चेतना का परिणाम है।

इस प्रकार भारत में महिला सशक्तिकरण की यात्रा वैदिक काल की सम्मानजनक स्थिति से प्रारंभ होकर मध्यकाल की चुनौतियों से गुजरते हुए आधुनिक काल में अधिकार, शिक्षा और नेतृत्व तक पहुँची है। इसके साथ ही संविधान द्वारा प्रदत्त समानता और सरकारी योजनाओं ने महिलाओं को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अमृतसर: खाने के शौकीनों का स्वर्ग

सिमरदीप सिंह, उप महाप्रबंधक (वित्त)

अमृतसर को खाने-पीने के शौकीनों के लिए स्वर्ग माना जाता है और इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि जब आप शहर में घूमते हैं तो आपकी स्वाद कलिकाएँ हमेशा आनंदित होती रहती हैं। हालाँकि अमृतसर के विशेष खाद्य पदार्थों की सूची निश्चित रूप से लंबी है, मैंने खाने का आनंद लेते हुए एक दिन बिताने के लिए शहर के सर्वोत्तम शाकाहारी खाद्य पदार्थों को संकलित करने का प्रयास किया है।

1. कान्हा स्वीट्स में पूड़ी चने

अमृतसर में आपका दिन कान्हा स्वीट्स, लॉरेंस रोड, अमृतसर में नाश्ते के साथ शुरू होना चाहिए। चने और लौंजी (खट्टे स्वाद वाले आलू) के कॉम्बो और सलाद के साथ परोसी जाने वाली पूरी आपको प्लेट में मिलेगी। आप इसका आनंद एक गिलास लस्सी के साथ भी ले सकते हैं। मिठाई के रूप में स्वादिष्ट गुड़ का हलवा खाना न भूलें।

2. अमृतसरी कुलचा

यदि आप अमृतसर जाते हैं और अमृतसरी कुलचा नहीं खाते हैं, तो आपकी यात्रा आगरा जाने और ताज महल न देखने जैसी ही है। हर किसी को अपने शहर में भरवां नान, चूर-चूर नान जैसे अमृतसरी कुलचा के कई रूप मिल जाएंगे, लेकिन असली अमृतसरी कुलचा आपका दिल जरूर जीत लेगा।

अमृतसरी कुलचा एक भरवां मैदा रोटी है, जिसे तंदूर में तैयार किया जाता है और छोले/चने के साथ परोसा जाता है। आपको शहर के हर कोने में अमृतसरी कुलचे मिल सकते हैं, लेकिन मैं तीन जगहों की सिफारिश करूंगा - स्वर्ण मंदिर के पास कुलवंत कुलचे वाला, मकबूल रोड पर पुरानी चुंगी वाले कुलचे और आनंद एवेन्यू में हरबंस लाल के कुलचे। कैलोरी की गिनती किए बिना अमृतसरी कुलचा खाएं और आप निश्चित रूप से इसके स्वाद का आनंद लेंगे।

3. गुरदास राम जलेबियां वाला

जैसे ही आप हेरिटेज स्ट्रीट (पार्किंग क्षेत्र) से स्वर्ण मंदिर की ओर चलते हैं, कोने पर एक छोटी सी गली में हमारा अगला गंतव्य गुरदास राम जलेबियाँ वाला है जो शुद्ध देसी घी जलेबियाँ परोसने वाली एक पुरानी और प्रसिद्ध दुकान है। इस सड़क को पार करते समय कोई भी स्वादिष्ट जलेबी का लालच नहीं रोक सकता।

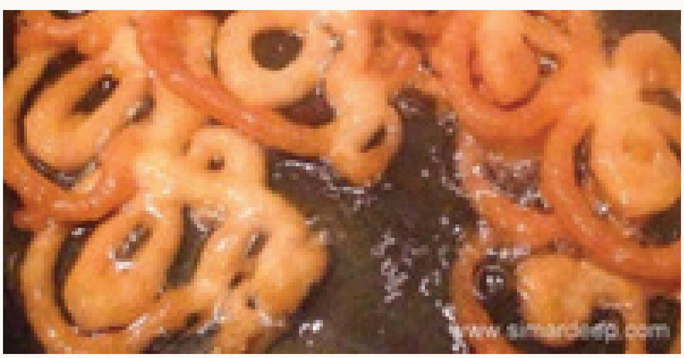

4. राजस्थानी चाट भंडार

खैर, अगर आपको जलेबी ही इतनी लुभा रही है तो गली के दूसरी तरफ भी देखने की कोशिश करें। जलेबी की दुकान के ठीक सामने राजस्थानी चाट भंडार है। एक ऐसा स्वाद जो आप निश्चित रूप से पसंद करेंगे, यह दुकान आपको दही भल्ला, पापड़ी चाट, दही भल्ला चाट

और गोलगप्पे/पानी पुरी प्रदान करती है। कुछ विशेष स्वाद के लिए चाट/दही भल्ला के साथ स्वादिष्ट चटनी को न भूलें।

5. केसर दा ढाबा

शाम को कुछ स्नैक्स के बाद अब रात के खाने का समय है और आपकी मंजिल निश्चित रूप से 'केसर दा ढाबा' होगी। यह स्वर्ण मंदिर से लगभग 5 मिनट की दूरी पर है जहाँ पैदल जाया जा सकता है। गुरु बाजार के पास एक छोटी सी गली में स्थित, आपको वहां पहुंचने के लिए चार पहिया वाहन पर निर्भर नहीं रहना चाहिए। आपको ढाबे तक पैदल जाना होगा या ई-रिक्शा ले सकते हैं। प्रामाणिक दाल मखनी और लच्छा परांठा थाली के साथ आज़माएँ और मुझे यकीन है कि आप निराश नहीं होंगे।

बस एक चेतावनी, परांठे और दाल से टपकने वाले घी को बेहतरीन स्वाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता में बाधा न बनने दें।

तो, अब जब आप अमृतसर शहर में खुद को एक स्वादिष्ट दावत दे चुके हैं, तो यह कोई आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि अगली बार जब आप अपना रक्त परीक्षण करवाएं, तो इसका परीक्षण 'घी पॉजिटिव' हो।

भारत में दशहरा: धार्मिक संस्कृति के विविध रूप

सुमित सिंह, मुख्य प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

भारत में दशहरा का पर्व अलग-अलग राज्यों में विभिन्न रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक परंपराओं के साथ मनाया जाता है, जो वहां की स्थानीय संस्कृति, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक सरोकारों से जुड़ा होता है। दशहरे का पर्व बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है लेकिन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इस उत्सव को मनाने का तरीका अलग-अलग होता है।

उत्तर भारत में दशहरा

उत्तर भारत के राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, दिल्ली, बिहार आदि में दशहरा मुख्य रूप से भगवान राम की रावण पर विजय के रूप में मनाया जाता है। यहां रामलीला का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ होता है, जिसमें रामायण के प्रसंगों का मंचन किया जाता है। दशमी के दिन रावण, मेघनाथ और कुम्भकर्ण के विशाल पुतले जलाए जाते हैं, जो बुराई के विनाश का प्रतीक हैं। इस दौरान मेलों का आयोजन होता है और पारंपरिक नृत्य-गीत भी होते हैं।

पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम में दुर्गा पूजा

पूर्वी भारत में खासकर पश्चिम बंगाल, ओडिशा और असम में दशहरा को दुर्गा पूजा के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व नवरात्रि के बाद देवी दुर्गा के विभिन्न रूपों की भव्य पूजा के साथ जुड़ा होता है। बंगाल में दशमी के दिन देवी की प्रतिमाओं का विसर्जन होता है और महिलाएं पारंपरिक 'सिंदूर खेला' नामक रस्म का पालन करती हैं, जिसमें वे एक-दूसरे को सिंदूर लगाती हैं। पूजा-पंडालों में कलाकारों की कलाकारी प्रमुख आकर्षण होती है।

दक्षिण भारत में दशहरा

तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे दक्षिण भारतीय राज्यों में दशहरा नौ दिनों तक चलता है जिसमें लक्ष्मी, सरस्वती और दुर्गा की पूजा होती है। यहां बोम्मई गोलू की परंपरा बेहद प्रसिद्ध है, जिसमें घरों में मूर्तियों और खिलौनों की श्रृंखला सजाई जाती है। कर्नाटक में मैसूर दशहरा विश्व प्रसिद्ध है, जहां राजा की सवारी, हाथियों की शोभा यात्रा और महल की रौनक देखते ही बनती है।

नादाहब्बा एक क्षेत्रीय त्योहार है जो मुख्य रूप से कर्नाटक में विजयादशमी के दौरान मनाया जाता है, जिसे क्षेत्रीय त्योहार' भी कहा जाता है। यह राक्षस महिषासुर पर मां दुर्गा की जीत का प्रतीक है, और इस उत्सव में पारंपरिक नृत्य भी शामिल होते हैं, खास तौर पर मैसूर का दशहरा बहुत लोकप्रिय है, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।

अन्य राज्यों की विशेष परंपराएं

- हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में दशहरा हर्षोल्लास से मनाया जाता है, जहां देवताओं की मूर्तियां लेकर जुलूस निकाला जाता है और लोक नृत्य प्रस्तुत किए जाते हैं।
- छत्तीसगढ़ के बस्तर में दशहरा 75 दिन तक चलता है और यह मां दंतेश्वरी की आराधना का पर्व माना जाता है, जो कि आदिवासी संस्कृति का प्रमुख उत्सव है।
- महाराष्ट्र में दशहरे पर एक-दूसरे को 'सोने के पत्ते' भेंट करना शुभ माना जाता है और गरबा-डांडिया के रंगीन नृत्य होते हैं।
- गुजरात में दशहरा गरबा और डांडिया डांस के साथ बड़े उत्साह से मनाया जाता है।
- आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में शमी वृक्ष की पूजा की जाती है, जो युद्ध में विजय का प्रतीक है।

सांस्कृतिक विविधता और दशहरा

दशहरा पूरे भारत में एक तो बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक है, वहीं इसके उत्सव की सांस्कृतिक विविधता देश की समृद्ध लोक परंपराओं को दर्शाती है। हर क्षेत्र के उत्सव वहां की भाषा, पहनावे, लोक नृत्य, संगीत और श्रद्धा की भावनाओं के अनुसार अनूठे रूप में प्रकट होते हैं। इस प्रकार, दशहरा केवल एक धार्मिक पर्व नहीं बल्कि भारतीय विविधता का उत्सव भी है, जो सभी राज्यों की सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ा है।

इस प्रकार बिहार, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, कर्नाटक, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात आदि राज्यों के दशहरा जश्न की विविधता भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को उजागर करती है।

उदयपुर: झीलों की नगरी की स्वप्निल यात्रा

अमन जायसवाल, मुख्य प्रबंधक (वित्त)

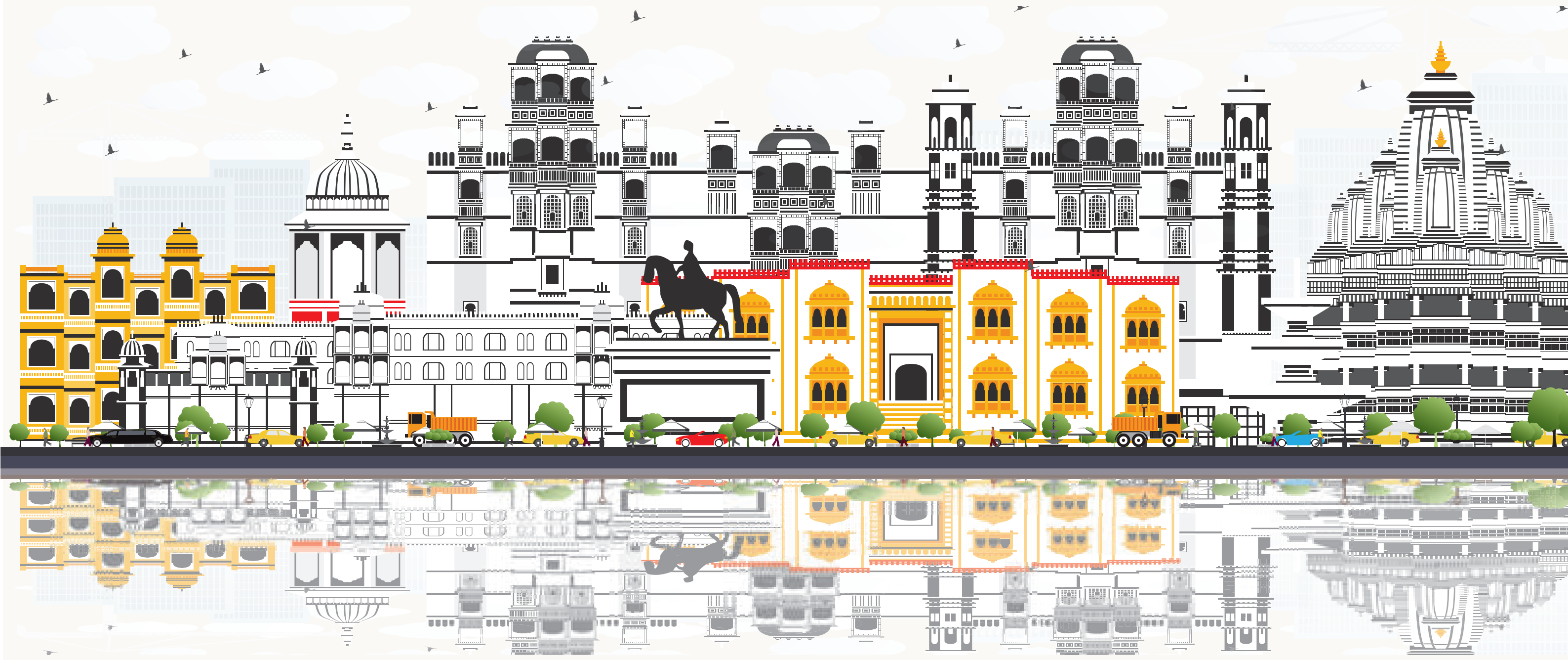

जब जीवन की आपाधापी से मन थकने लगे और हृदय को शांति की तलाश हो, तब मन करता है कि प्रकृति की गोद में चल पड़ें। वर्षों से मेरे हृदय में संजोया एक स्वप्न था — उदयपुर, जो केवल एक नगर नहीं, बल्कि एक जीवंत कविता, एक चित्रित स्वप्न, और राजसी सौंदर्य की अनुपम मिसाल है।

मेरी पत्नी, मेरी तीन वर्षीय पुत्री और मैं - तीनों ने मिलकर इस स्वप्न को जिया, महसूस किया और अपनी स्मृतियों में सहेज लिया।

उदयपुर की पहली झलक:

जैसे ही हमने उदयपुर की धरती पर कदम रखा, ऐसा प्रतीत हुआ मानो किसी चित्रकार की कल्पना साकार हो गई हो। अरावली की पहाड़ियों की गोद में बसा यह नगर, मानो कोई चित्र हो जो किसी पुस्तक से निकलकर सजीव हो उठा हो। ऐसा लगा मानो प्रकृति अपनी बाहें फैलाकर हमें आमंत्रित कर रही हो, जहाँ हर झोंका शांति का संदेश लाता है।

सिटी पैलेस: इतिहास की गोद में सौंदर्य का सिंहासन

सिटी पैलेस को देखकर ऐसा लगा मानो पत्थरों ने भी कविता लिखी हो। संगमरमर की दीवारों पर उकेरी गई नक्काशी, रंगीन कांचों से छनती धूप, और झरोखों से दिखती पिछोला झील — यह सब मिलकर एक राजसी रागिनी की रचना करते हैं। मेरी पत्नी की आँखों में इतिहास के प्रति श्रद्धा थी, और मेरी बेटी की आँखों में कौतूहल की चमक। महल के गलियारों में गूंजती पदचापें जैसे अतीत की कहानियाँ सुना रही थीं।

पिछोला झील: जल में बसी कविता

पिछोला झील, उदयपुर की आत्मा है। इसकी शांत जलराशि में जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं, तो ऐसा लगता है मानो सोने की चादर बिछ गई हो। हमने नौका विहार का आनंद लिया और झील के मध्य स्थित जग मंदिर तक पहुँचे। यह मंदिर संगमरमर से निर्मित है और चारों ओर हरियाली से घिरा हुआ है। वहाँ की शांति, वहाँ की हवा, और वहाँ की नीरवता — सब कुछ आत्मा को स्पर्श करता है। मेरी बेटी ने पहली बार जल की लहरों से खेला, और उसकी हँसी झील की लहरों में घुलकर एक मधुर संगीत बन गई।

गणगौर घाट: सूर्यास्त की स्वर्णिम आरती

'ये जवानी है दीवानी' फ़िल्म की शूटिंग के बाद से गणगौर घाट पर्यटकों की सूची में एक प्रमुख स्थल बन गया है। इसी कारणवश हमने भी अपना निवास घाट के समीप ही चुना। संध्या वेला में जब हम घाट पहुँचे, तो सूर्यदेव अपनी केसरिया पालकी में बैठकर झील के जल में समा रहे थे। वह दृश्य ऐसा था, मानो प्रकृति स्वयं आरती उतार रही हो। घाट पर बैठे लोक कलाकारों की बांसुरी और वीणा की मधुर धुनें उस क्षण को अलौकिक बना रही थीं।

बागोर की हवेली: एक सांस्कृतिक धरोहर

सूर्यास्त के पश्चात् हम पहुँचे बागोर की हवेली, जहाँ राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप में देखा। वहाँ स्थानीय कलाकारों द्वारा प्रस्तुत लोकनृत्य अविस्मरणीय थे। मेरी बेटी के लिए ये नृत्य केवल दृश्य नहीं, बल्कि उसकी मासूम दुनिया में रंग भरने वाले जीवंत अनुभव बन गए। घूमर में रंग-बिरंगे घाघरों की लहराती छवियाँ उसे मंत्रमुग्ध कर गईं। तेरहताली में नर्तकों के शरीर से झांझों की लयबद्ध ध्वनि उसे चकित कर गई। कालबेलिया की सर्पीली चाल और चमकदार पोशाकें उसकी आँखों में बस गईं। कच्ची घोड़ी के नकली घोड़ों पर सवार कलाकारों ने उसे खूब हँसाया। कठपुतली की कहानियों ने उसकी कल्पना को पंख दिए।

राजस्थानी व्यंजन: स्वाद की शाही कविता

उदयपुर का भोजन केवल स्वाद नहीं, बल्कि संवेदनाओं का उत्सव है। हम पहुँचे पिछोला झील के किनारे स्थित हरिगढ़ रेस्टोरेंट, जहाँ हमने दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्ज़ी, मिर्ची बड़ा और केर-सांगरी का स्वाद लिया। हर व्यंजन में देसी घी की खुशबू और मिट्टी की सौंधी महक थी। मिठाइयों में घेवर और मालपुआ ने हमारी बेटी का दिल जीत लिया, और उनकी मिठास उसकी मुस्कान में उतर आई।

सज्जनगढ़ किला: बादलों की गोद में बसा स्वप्न

सज्जनगढ़, जिसे 'मॉनसून पैलेस' भी कहा जाता है, वहाँ से उदयपुर का दृश्य ऐसा प्रतीत होता है मानो धरती ने आकाश को आलिंगन में ले लिया हो। वर्षा ऋतु में बादलों के बीच से झांकता यह महल, एक स्वप्निल महाकाव्य की भांति प्रतीत होता है।

बाजारों की रंगीनियाँ: लोककला की जीवंत प्रदर्शनी

हाथीपोल और बापू बाजार की गलियाँ, जैसे किसी रंगमंच की पृष्ठभूमि हों। रंग-बिरंगी बंधेज की साड़ियाँ, मीनाकारी के आभूषण, लकड़ी के खिलौने, और कांच की चूड़ियाँ — हर वस्तु में हस्तकला की आत्मा बसती है। मेरी पत्नी ने वहाँ से कुछ सुंदर दुपट्टे और चूड़ियाँ खरीदीं, और मेरी बेटी ने रंग-बिरंगे खिलौनों से अपनी झोली भर ली।

परिवार के साथ बिताए पल: संवेदनाओं की सरिता

इस यात्रा में हमने केवल स्थान नहीं देखे, हमने एक-दूसरे को और गहराई से जाना। मेरी पत्नी की आँखों में संतोष था, मेरी बेटी की हँसी में जीवन की सरलता, और मेरे हृदय में कृतज्ञता। यह यात्रा एक भावनात्मक संगम बन गई - जहाँ प्रेम, सौंदर्य और आत्मीयता एक साथ बहते रहे।

उदयपुर: जहाँ पत्थर भी बोलते हैं, और झीलें भी गाती हैं

उदयपुर केवल एक नगर नहीं, वह एक जीवंत काव्य है। वहाँ की हवाओं में इतिहास की गंध, झीलों में प्रेम की गहराई, और महलों में गौरव की गूंज है। यह वह स्थान है जहाँ आत्मा को विश्राम मिलता है, और हृदय को नवजीवन।

यदि जीवन की भागदौड़ से कुछ क्षण चुराकर, आप अपने प्रियजनों संग सौंदर्य, संस्कृति और संवेदना की सरिता में डुबकी लगाना चाहें, तो उदयपुर अपनी झीलों की लहरों, महलों की छाँव और हवाओं की मधुर सरगम के साथ, अपने राजसी आँचल में आपको स्नेहिल आलिंगन देने को आतुर है।

शिलांग के मावलिननॉन्ग गाँव में एक दिन

डॉ. व्योमकेश शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा)

हाल ही में मुझे शिलांग जाने का मौका मिला। शिलांग आने से पहले हमने एशिया के सबसे स्वच्छ गांव मावलिनॉन्ग गांव के बारे में सुना था जो शिलांग से लगभग 80 किलोमीटर दूर पूर्वी खासी हिल्स जिले में बसा हुआ है। इस जगह को देखने की इच्छा मेरे मन में बहुत दिनों से थी। हमने अपने व्यस्त कार्यक्रम में से थोड़ा समय निकाला और हम लोग मावलिनॉन्ग गांव को देखने गए। शिलांग से इस गांव तक का रास्ता बेहद खूबसूरत था। शिलांग को वैसे भी 'स्कॉटलैंड ऑफ दि ईस्ट' कहा जाता है। हम लोगों ने इस गांव में दो 4 घंटे गुजारे। यहाँ जितना साफ लोगों का अपना घर था उतनी ही साफ यहां की गलियां और रास्ते भी थे। सड़क पर हमें कोई भी प्लास्टिक या कूड़ा नहीं दिखा। स्वच्छता यहां के लोगों की संस्कृति में रच-बस चुकी है। इस गांव की साफ-सफाई कोई सरकारी संस्था नहीं बल्कि यहां रहने वाले लोग खुद ही करते हैं और ऐसा भी नहीं था कि यहां पर लोग दिन भर सफाई ही कर रहे थे।

लगभग 600 लोगों की जनसंख्या वाले इस छोटे से गांव में 100 से अधिक खासी जनजातीय परिवार रहते हैं। मावलिननॉन्ग गाँव में स्वच्छता की

इस संस्कृति की शुरुआत लगभग 130 साल पहले शुरू हुई थी जब इस गांव में हैजे की बीमारी का आतंक छा गया था। किसी भी तरह की मेडिकल सुविधा न होने की वजह से इस बीमारी से छुटकारा पाने के लिए सफाई ही एकमात्र तरीका था। हमें यहां के लोगों ने बताया कि क्रिश्चियन मिशनरियों ने यह बात दूर-दूर तक फैला दी कि साफ-सफाई से ही हैजे से बचा जा सकता है। इसी के बाद से यहां साफ-सफाई की इस अद्‌भुत जीवन-शैली का विकास होता गया। यहां के लोगों को कंक्रीट के मकान की जगह बांस के बने मकान ज्यादा पसंद हैं। गांव के रास्तों पर जगह-जगह बांस की डस्टबिन लगी हुई है। गाँव की पगडंडियों और रास्तों दोनों ओर फूल-पौधों की क्यारियां हैं और स्वच्छता संबंधी निर्देश के बोर्ड लगे हैं। बातचीत के क्रम में हमें पता चला कि हर परिवार का सदस्य गांव की साफ-सफाई में भाग लेता है।

मावलिननॉन्ग गांव का समाज मातृसत्तात्मक है। यहाँ के सार्वजनिक जीवन में महिलाओं का ज्यादा प्रभाव है और वे गांव को साफ रखने में अपने अधिकारों का प्रयोग करती हैं। यहां के खासी आदिवासियों में मां अपनी संपत्ति बेटी के नाम करती है और बच्चों के नाम के साथ मां का उपनाम जोड़ने की प्रथा है। गांव को 'भगवान का अपना बगीचा' (God's Own Garden) भी कहा जाता है। हमने ऐसी ही कई और विशेष बातें हमें इस गांव के बारे में पता चलीं।

साल 2003 तक इस गांव में पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र नहीं था। यहां आने के लिए ठीक से सड़कें भी नहीं बनीं थी। लेकिन डिस्कवरी इंडिया ट्रैवल मैगेज़ीन के एक पत्रकार ने जबसे इस गांव पर एक स्टोरी दिखाई, यह पूरी दुनिया में चर्चा का केंद्र बन गया।

हम जब वापस गुवाहाटी जा रहे थे तो पूरे रास्ते में हम सिर्फ इसी गांव के बारे में बात कर रहे थे कि किस तरह आज इस गाँव ने अपनी स्वच्छता की संस्कृति के चलते पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया है।

अहिल्या बाई होल्कर:
18वीं सदी के भारत में समृद्धि और समावेशी शासन की वास्तुकार

असीम गुप्ता, मुख्य प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

31 मई, 2025 का दिन कुछ खास था, देवी अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती का अवसर, इसी दिन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने भोपाल में देवी अहिल्याबाई को समर्पित एक स्मारक डाक टिकट और एक विशेष सिक्का जारी किया। 300 रुपये के इस सिक्के पर अहिल्याबाई होल्कर का चित्र अंकित हैं।

20 सितंबर, 2024 को प्रधानमंत्री ने 'पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर महिला स्टार्टअप योजना' का भी शुभारंभ किया, जिसके तहत महाराष्ट्र में महिलाओं के नेतृत्व वाले स्टार्टअप्स को शुरुआती चरण में सहायता प्रदान की जाएगी। इस योजना के तहत ₹25 लाख तक की वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी।

आखिर कौन थी मालवा की यह महिला शासक, जिसे इतिहास में एक कुशल शासक माना जाता हैं, अहिल्या बाई होल्कर का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी गाँव में हुआ था।

वे एक साधारण परिवार से थीं, और उनके पिता माणकोजी राव शिंदे गाँव के पाटिल (ग्रामप्रधान)थे। बचपन से ही उनकी बुद्धिमत्ता और सरलता लोगों को आकर्षित करती थी। छोटी उम्र में उनका विवाह मल्हारराव होल्कर के पुत्र खंडेराव से हुआ। खंडेराव, मराठा योद्धा मल्हारराव होल्कर के पुत्र थे|

मल्हारराव होल्कर (16 मार्च 1693 – 20 मई 1766), मराठा साम्राज्य के एक प्रसिद्ध सेनापति थे जो कि होल्कर राजवंश के संस्थापक बने । उन्होंने मालवा क्षेत्र में मराठा सैन्य और प्रशासनिक सत्ता का विस्तार किया था|

वे भी एक साधारण परिवार से थे, लेकिन अपनी वीरता, पराक्रम और संगठन क्षमता के कारण मराठा साम्राज्य में उच्च स्थान प्राप्त किया।

पेशवा बाजीराव प्रथम ने उन्हें 1728 में मालवा का सूबेदार बनाया। उन्होंने बहुत से से युद्ध लड़े, 1728 में हैदराबाद के निजाम के खिलाफ लड़ाई, की जहां मल्हार राव की छोटी सेना ने निजाम की रसद सप्लाई रोक दी और मराठों को जीत दिलाई, 1737 में दिल्ली की लड़ाई जिसमें उन्होंने अहम भूमिका निभाई,पुर्तगालियों के खिलाफ लड़ाइयां लड़ी,

1758 में सरहिंद पर कब्जा और फिर लाहौर तक मराठा साम्राज्य का विस्तार करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया । इस प्रकार अपनी कुशल रणनीति और राज्य चलाने की क्षमता के कारण वह इंदौर के पहले राजा बने|

1754 में कुंभेरी की लड़ाई के दौरान खंडेराव की मृत्यु हो गई। उस समय अहिल्या बाई पर गहरा सदमा लगा। ऐसे समय में मल्हार राव होल्कर ने उन्हें प्रोत्साहन दिया और उन्होंने उसे अपने संरक्षण में लिया और सैन्य और प्रशासनिक मामलों में प्रशिक्षित किया

मल्हार राव का निधन 1766 में हुआ और अगले ही वर्ष अहिल्या बाई के पुत्र माले राव का भी देहांत हो गया। उन्होंने इतने बड़े दुःख को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। राज्य और प्रजा के कल्याण को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने पेशवा से मालवा का शासन संभालने की अनुमति मांगी। हालाँकि कुछ सरदारों ने इसका विरोध किया, फिर भी उन्हें सेना का समर्थन प्राप्त था, जिन्हें उन पर पूरा भरोसा था, क्योंकि वे सैन्य और प्रशासनिक मामलों में अच्छी तरह प्रशिक्षित थीं। सन् 1767 में, पेशवा ने अहिल्याबाई को मालवा पर शासन करने की अनुमति दे दी। 11 दिसंबर, 1767 को वे गद्दी पर बैठीं और इंदौर की शासक बनीं।

अहिल्याबाई होल्कर एक विशेष रानी थीं, क्योंकि उन्होंने अपने शासन में न्यायप्रियता, धर्म और समाजसेवा का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उनके द्वारा कराये गए मुख्य कार्य निम्न लिखित हैं :

- अहिल्याबाई होल्कर ने काशी, सोमनाथ, त्र्यम्बकेश्वर, गया, पुष्कर, वृंदावन जैसे तीर्थ स्थलों पर मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया और पवित्र स्थलों का संरक्षण किया। उनका सबसे उल्लेखनीय योगदान 1780 में प्रसिद्ध काशी विश्वनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार और मरम्मत था।
- उन्होंने अपने राज्य में विधवाओं, गरीब महिलाओं, और पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए योजनाएं बनाई और कार्यवाही की, जिससे सामाजिक समरसता बढ़ी।
- उनके शासन के दौरान महेश्वर जो कि (उनकी राजधानी भी थी) में प्रसिद्ध महेश्वरी साड़ी की शुरुआत कर महिलाओं को रोजगार दिलाया।
- उन्होंने जल संरक्षण के लिए कुएं, बावड़ियाँ, प्याऊ और घाट बनवाए, जिससे जनता को स्वच्छ पानी की सुविधा मिली। इसके अलावा, भूखों के लिए अन्नक्षेत्र खोले और समाज के गरीब, असहाय वर्ग और विधवाओं की सहायता की।
- शिक्षा के महत्व को समझते हुए उन्होंने कई गुरुकुल और स्कूल स्थापित किए।

ये सभी कार्य उनके जनकल्याण के प्रति समर्पण को दर्शाते हैं। अहिल्याबाई ने न केवल मंदिर बनवाए, बल्कि भारतीय संस्कृति को फिर से जीवित किया, अहिल्याबाई का निधन 13 अगस्त, 1795 को सत्तर वर्ष की आयु में हुआ था। उनकी विरासत आज भी भारत में जीवित है और उनके द्वारा निर्मित विभिन्न मंदिर, धर्मशालाएँ और सार्वजनिक कार्य, उनके महान रानी होने के प्रमाण हैं। उनका जीवन समाज के लिए आज भी एक प्रेरणा का स्रोत है।

आपणो शहर जोधपुर :
मरुस्थलीय सौंदर्य, सांस्कृतिक वैभव एवं नवीकरणीय ऊर्जा का शहर

मुकेश, मुख्य प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

आज मैं बता रहा हूं मेरे प्यारे शहर जोधपुर के बारे में। जिंदगी में प्रगति के लिए आदमी अपना शहर छोड़ कर महानगरों में जीवनयापन करता है। लेकिन उसके दिल में हमेशा अपना शहर बसा रहता है, जहां वो पाला पढ़ा, दोस्तों के साथ खेला, स्कूलिंग ली, गली मोहल्ले में घुमा, दोस्त चचेरे भाईयों के साथ शादी ब्याव में शामिल हुआ उसे वो अपने दिल से नहीं भूला सकता.

जैसे जैसे वो तरक्की करता है जीवन में,उसके मन में हमेशा रहता है काश मेरी नौकरी मेरे शहर में होती............... और पुरानी वाली जिंदगी जी लू.....

जोधपुर की स्थापना 12 मई 1459 को राठौड़ वंश के राजा राव जोधा ने की थी। इसको जोधाणा भी कहा जाता है. यह शहर पहले मंडोर में स्थित था, लेकिन सुरक्षा कारणों से राव जोधा ने इसे मारवाड़ की राजधानी बनाया। जोधपुर का किला मेहरानगढ़ किला, जो शहर के केंद्र में स्थित है, इसकी भव्यता और ऐतिहासिकता का प्रतीक है। जोधपुर को " सूर्यनगरी " और "ब्लू सिटी" के नाम से भी जाना जाता है, क्योंकि यहाँ के घरों को नीले रंग से रंगा जाता है जो गर्मी से राहत देता है ।

जोधपुर के खास बात ये है कि यहां बिलकुल ट्रैफिक नहीं है.... जहां आप 10-15 मिनट में शहर के एक कौने से दूसरे कौने में पहुंच सकते हैं।

जोधपुर के लोगो की अपणायत और यहाँ की मारवाड़ी भाषा बहुत ही मीठी भाषा है.....गाली भी दे तो मीठी लागे। यहां घर आए मेहमान को बिना खाना और नेक दिए जाने नहीं देते...आदर सत्कार और आतिथ्य यहां के लोगो की रगो में बसा है...

ये अकेला अनोखा शहर होगा जहां मिठाई सबसे पहले खाया जाता है खाने में...फिर कुछ जगह बचे पेट में तो दूसरे व्यंजन खाये जाते हैं.........शादी ब्याव में गुलाब जामुन खाने का कॉम्पिटिशन चलता है...चाहे जिनके घर में शादी हो या कोई फंक्शन हो वो भले ही टेंशन में घुमता रहे की कही मिठाई कम ना पड़ जाए..... जोधपुर के लोगो को " खावण खंडा" भी कहा जाता है

जोधपुर का पत्थर पूरी दुनिया में प्रसिद्द है ...बड़े बड़े पत्थर के टुकड़ों को यहाँ की भाषा में "खंडा" कहा जाता है.

जोधपुर के पुराने मोहल्ले जैसे ब्रहपुरी, जालोरी गेट, सिवांची गेट, उदयमंदिर, चांदपोल, सोजती गेट ....और यहां के हाट बाजार या रंग बिरंगी मन मोहक दुकाने......देसी विदेशी सैलानी आते हैं....घूमते-घूमते मद मस्त हो जाते हैं, आज भी अपनी पारंपरिक पहचान बनाए हुए हैं। यहाँ की गलियाँ संकरी हैं, लेकिन इनमें संस्कृति की खुशबू रची-बसी है। घंटाघर, जो शहर का प्रमुख बाजार है.

जोधपुर का खानपान इसकी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। मिर्ची बड़ा, जो हरी मिर्च में मसाले भरकर बेसन में तलकर बनाया जाता है, यहाँ का प्रसिद्ध स्नैक है। इसके अलावा मावे की कचौरी, प्याज की कचौरी, गट्टे की सब्जी, केर-सांगरी, और बाजरे की रोटी भी यहाँ के पारंपरिक व्यंजन हैं।

जोधपुर चूंकि सुखे प्रदेश में आता है...यहां पानी का समय समय पर अभाव है...इसलिये जल संरक्षण की परंपरा बहुत पुरानी है...यहाँ की बावड़ियाँ जैसे राणीसर पदम सर, सूरज कुंड, खरबूजा बावरी,,तूरजी का झालरा, गुलाब सागर, और मंडोर की बावड़ी स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण हैं। ये बावड़ियाँ न केवल जल स्रोत थीं, बल्कि सामाजिक मेलजोल का केंद्र भी थीं। नदियों की बात करें तो लूणी नदी इस क्षेत्र की प्रमुख नदी है, जो थार मरुस्थल में जीवन का संचार करती है। हालांकी अभी यहां पे इंदिरा गांधी नहर आ चुकी है तो पानी के समस्या अब नहीं है।

जोधपुर की हस्तशिल्प कला विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ की मोजड़ी (जोधपुरी जूती) चमड़े से बनी होती है और उस पर हाथ से कढ़ाई की जाती है। ये जूतियाँ पारंपरिक परिधान के साथ पहनी जाती हैं और देश-विदेश में निर्यात की जाती हैं। इसके अलावा लकड़ी की नक्काशी, धातु की मूर्तियाँ, रंगीन कपड़े, और बंधेज की साड़ियाँ भी यहाँ की पहचान हैं।

जोधपुर में फर्नीचर उद्योग, हथकरघा, टेक्सटाइल, और हस्तशिल्प के क्षेत्र में हजारों लोग कार्यरत हैं। यहाँ की लकड़ी की फर्नीचर, लोहे की कलाकृतियाँ और रंगीन वस्त्रों की मांग अंतरराष्ट्रीय स्तर पर है। सरकार द्वारा हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ चलाई जा रही हैं।

जोधपुर अब तकनीकी के क्षेत्र में आगे बढ़ रहा है...यहाँ एमबीएम इंजीनियरिंग कॉलेज, आईआईटी जोधपुर और एआईआईएमए जोधपुर स्थापित है..जो इंजीनियरिंग और चिकित्सा क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं। यहां का सबसे पुराना इंजीनियरिंग कॉलेज एमबीएम, जिसे आईईएस की फैक्ट्री भी कहते हैं... एक जमाने में यहां से अधिकतम आईईएस अधिकारी निकलते थे।

जोधपुर अब सिर्फ सांस्कृतिक शहर नहीं रहा, बल्कि यह सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी अग्रणी बन चुका है। यहाँ कई सोलर प्लांट्स स्थापित किए गए हैं, जो राजस्थान को ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बना रहे हैं। आरईसी ने जोधपुर और आसपास के क्षेत्रों में सौर और पवन टर्बाइन स्थापित करने के लिए विभिन्न डेवलपर्स (अडानी ग्रीन, एक्मे सोलर आदि) को भी वित्त पोषित किया है।

रामायण की सीख, गीता का ज्ञान: मिथिला की पहचान

रवि कुमार, सहायक प्रबंधक (वित्त)

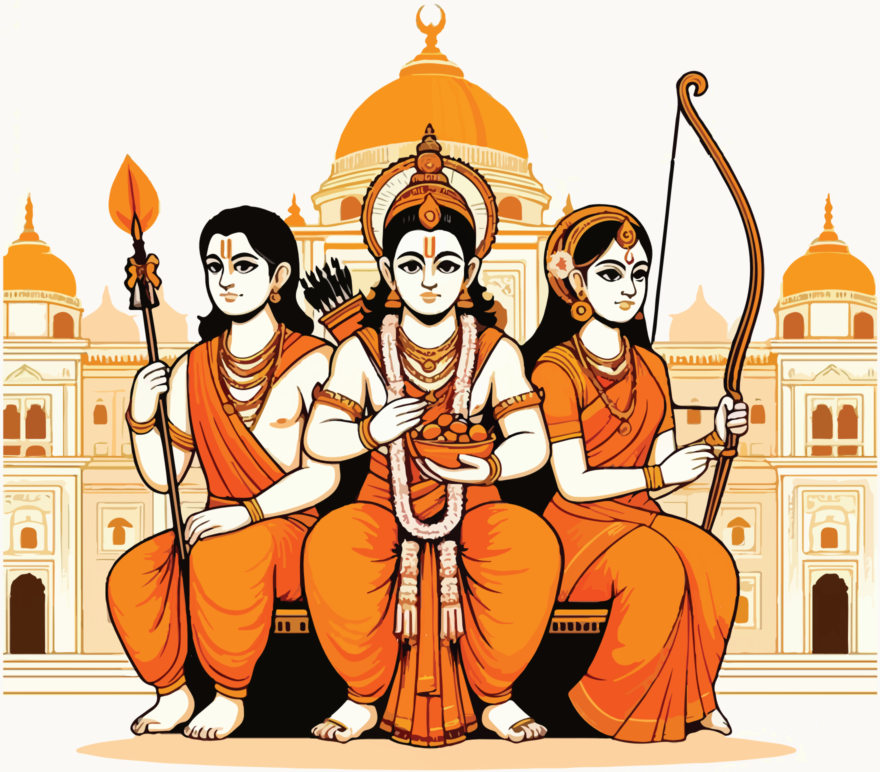

"जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादि गरीयसी" - माँ और जन्मभूमि, दोनों ही स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

गीता का यह उपदेश हमेशा मेरे हृदय में गूंजता रहता है। मैं रवि कुमार, बिहार के दरभंगा जिले के छोटे से गाँव सहसपुर से आता हूँ। यह वही मिथिला है - माता सीता की जन्मभूमि। यहाँ की मिट्टी में रामायण की गूँज और आस्था की महक बसी है। जनकपुर में जब श्रीराम और माता सीता का विवाह हुआ, तब से यह भूमि त्याग और विश्वास का प्रतीक बन गई।

जड़ें मजबूत, पहचान स्पष्ट

मिथिला सिखाती है - कठिनाई चाहे कितनी भी बड़ी हो, धैर्य और संयम ही असली शक्ति है।

"समत्वं योग उच्यते" (सुख-दुःख, लाभ-हानि में समान भाव रखने वाला ही सच्चा योगी है)।

मधुबनी की चित्रकारी, मैथिली भाषा की मधुरता, लोकगीतों की धुन और छठ पूजा की सामूहिक आस्था - ये सभी उस सांस्कृतिक धरोहर

के रंग हैं, जो हमें जड़ें देती हैं। इन जड़ों की ताकत से हम सुख-दुःख और जीवन की कठिनाइयों में भी धैर्यपूर्वक कदम बढ़ाते हैं और संयम के साथ हर चुनौती का सामना करते हैं।

ज्ञान और श्रम: बिहार की शक्ति

बिहार की आत्मा दो स्तंभों पर टिकी है - ज्ञान और श्रम।

चाणक्य की नीति, आर्यभट्ट का गणित, डॉ. राजेंद्र प्रसाद का नेतृत्व और जयप्रकाश नारायण की क्रांति - ये सब बिहार के उपहार हैं। यही वह भूमि है जहाँ से सबसे अधिक IAS अधिकारी बनते हैं, और यही से लाखों श्रमिक अपने परिश्रम से देश की रीढ़ मजबूत करते हैं।

"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" (कर्म करो, फल की चिंता मत करो)।

संस्कृति और स्वाद: जीवन उत्सव

बिहार की संस्कृति उसके गीतों और भोजन में बसती है। विवाह में गाए जाने वाले मैथिली गीत, आँगन में गूँजते सोहर, और छठ पूजा की सामूहिक आस्था - जीवन को एक उत्सव में बदल देती हैं। लिट्टी-चोखा की सादगी और ठेकुआ का स्वाद हमें यह सिखाते हैं कि संतोष ही सच्चा सुख है - जैसे वनवास के समय प्रभु श्रीराम और माता सीता ने सादा भोजन कर सादगी और मर्यादा का आदर्श प्रस्तुत किया था।

"युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु" (संतुलित आहार, संयमित जीवन और संतुलित कर्म ही सच्चा सुख है)।

बिहार का स्वाद केवल भोजन में नहीं, उसकी सादगी और संतोष में भी है।

बदलता बिहार: अंधकार से प्रकाश

कभी जो बिहार बिजली और विकास की कमी से जूझता था, आज वही उजाले की मिसाल बन गया है। गाँव-गाँव बिजली पहुँची, बच्चे देर रात तक पढ़ने लगे, किसान आधुनिक उपकरणों से खेती करने लगे और छोटे उद्योगों को नई ऊर्जा मिली।

आरईसी लिमिटेड और विद्युत संस्थाओं ने ग्रामीण विद्युतीकरण और नवीकरणीय ऊर्जा में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

"उद्धरेदात्मनात्मानं" (मनुष्य को स्वयं के प्रयास से ही उठना चाहिए)।

बिहार ने अंधकार को हराया, क्योंकि उसने खुद को जगाया।

निष्कर्ष: उजाले की नई गाथा

बिहार की कहानी रामायण और गीता दोनों से प्रेरित है।

- रामायण सिखाती है मर्यादा, त्याग और आस्था।
- गीता देती है धैर्य, संतुलन और कर्म का संदेश।

मिथिला हमें जड़ें देती है, शिक्षा और परिश्रम पंख देते हैं, संस्कृति पहचान देती है और विकास उज्ज्वल भविष्य की ओर ले जाता है।

सतपुड़ा की रानी "पचमढ़ी"

सद्दाम खान, अधिकारी (राजभाषा)

मध्यप्रदेश के एक मात्र पर्वतीय स्थल (हिल्स स्टेशन) होशंगाबाद जिले में स्थित पचमढ़ी समुद्र तल से 1067 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। पचमढ़ी पिपरिया तहसील में पिपरिया-पचमढ़ी मार्ग पर तहसील मुख्यालय से 54 किमी की दूरी पर स्थित है। भोपाल से पचमढ़ी की दूरी 204 किमी है जहाँ से नियमित बसे चलती है। मध्य रेलवे की ईटारसी-जबलपुर शाखा पर स्थित पिपरिया रेलवे स्टेशन जोकि पचमढ़ी सड़कमार्ग पर लगभग 52 किमी की दूरी पर स्थित है।

सतपुड़ा की श्रेणियों के बीच स्थित होने एवं अपने सुंदर स्थलों के कारण इसे सतपुड़ा की रानी भी कहा जाता है। यहाँ घने जंगल, जंगली जानवर एवं मन को मोह लेने वाले जलप्रपात, झील एवं तालाब है। सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान होने के कारण यहाँ आस-पास बहुत घने जंगल है। इन जंगलो का वर्णन **महाकवि मैथिलीशरण गुप्त जी** ने अपनी कविता पंचवटी में भी किया है। यहाँ के जंगलों में मुख्यत: तेंदुआ, शेर, चीतल, भैंसा, गौर आदि जानवर पाएं जाते है। यहाँ की गुफाएं पुरातात्विक महत्व की है, क्योंकि यहाँ की गुफाओं में शैलचित्र भी मिले है। कहा जाता है की पांडवों ने अपने 12 वर्षों के वनवास का कुछ समय पचमढ़ी में ही व्यतीत किया था।

सामान्य जानकारी

पचमढ़ी को सतपुड़ा की रानी के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि पचमढ़ी सदाबहार सतपुड़ा पर्वत श्रेणी पर सुंदर पहाड़ियों से घिरा पठार है। इस पठार का वनक्षेत्र सहित कुल क्षेत्रफल 60 वर्ग किमी है। सामान्य मान्यता के अनुसार पचमढ़ी पांडवों की पांच गुफाओं से उत्पन्न हुआ है, जिनके संबंध में माना जाता है कि पांडवों ने इस क्षेत्र में अपना अज्ञातवास का अधिकांश समय बिताया था। अंग्रेजों के शासन काल में पचमढ़ी मध्य प्रांत की राजधानी थी। अभी भी मध्यप्रदेश के मंत्रियों तथा उच्च शासकीय अधिकारियों के कार्यालप, कुछ दिनों के लिए पचमढ़ी में लगते है। यह स्थान आरोग्य निवास के रुप में उपयोगी है।

इस स्थान की खोज कैप्टन जे. फॉरसेथ ने की थी। उन्हें यहाँ सन् 1862 में सतपुड़ा के इस भाग के अन्वेषण के लिए भेजा गया था। उन्होनें यहाँ एक फॉरेस्ट लॉज का निर्माण किया एवं हाईलेंडस ऑफ सेंट्रल इंडिया नामक एक प्रसिद्ध पुस्तक लिखी, जिसमें सतपुड़ा पर्वत श्रेणी की उत्कृष्ट सुंदरता का चित्रण किया गया है।

पचमढ़ी एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल होने के कारण यह सड़क, रेल एवं वायुमार्ग से अच्छे से जुड़ा हुआ है। किसी भी साधन से यहाँ आसानी से पहुंचा जा सकता है।

जलवायु

पचमढ़ी का ठंडा सुहाना मौसम यहाँ की सबसे बड़ी विशेषता है सर्दियों के मौसम में यहाँ का तापमान लगभग माईनस 4-5 डिग्री सेंटीग्रेड रहता है, लेकिन मई-जून की गर्मियों में जब मध्यप्रदेश के अन्य भागों में तापमान 45 डिग्री तक पहुंच जाता है, पचमढ़ी में 35 डिग्री से अधिक नहीं होता। इस कारण यहाँ गर्मियों में पर्यटकों की बहुत भीड़ होती है।

यहाँ की सदाबहार हरियाली घास और हर्रा, सागौन, साल, चीड़, देवदारु, गुलमोहर, सफेद ओक एवं अन्य छोटे-बड़े सघन वृक्षों से आच्छिदत वन गलियारों एवं घाटियों के कारण दृश्य मनमोहक लगता है।

दर्शनीय स्थल

1. **जटाशंकर** - पचमढ़ी नगर से डेढ़ किलोमीटर की दूरी पर स्थित जटाशंकर एक पवित्र गुफा है। इसके ऊपर एक बिना किसी सहारे के झुलता हुआ विशाल शिलाखंड है। यहाँ शिव का एक प्राकृतिक शिवलिंग बना हुआ है। जटाशंकर मार्ग पर एक हनुमान मंदिर है जहाँ हनुमान की मूर्ति एक शिलाखंड पर उकेरी गई है। जटाशंकर गुफा के नजदीक ही हारपर्स गुफा है। इस गुफा में वीणा बजाते हुए एक व्यक्ति का चित्र है।

2. **पांडव गुफाएं** - एक छोटी पहाड़ी पर यह पांच प्राचीन गुफाएं बनी है। इस पांच गुफाओं के कारण ही इस स्थान को पचमढ़ी कहा जाता है। कहा जाता है कि पांडव अपने अज्ञातवास के दौरान यहाँ

ठहरे थे। सबसे साफसुथरी एवं हवादार गुफा को द्रोपदी कुटी कहा जाता है, जबकि सबसे अंधेरी गुफा भीम कुटीर के नाम से लोकप्रिय है। पुरातात्विक विभाग के अनुसार इन गुफाओं को 9वीं एवं 10वीं शताब्दी में गुप्त काल के दौरान बनवाया गया था।

3. **अप्सरा विहार** - पांडव गुफा के साथ ही अप्सरा विहार या परी ताल को मार्ग जाता है जहाँ पैदल ही पहुंचा जा सकता है। यह तालाब एक छोटे झरने से बना है जो 30 फीट उंचा है। अधिक गहरा ना होने के कारण यह तालाब तैराकी एवं गोताखोरी के लिए बिल्कुल उपयुक्त है। इस तालाब को पचमढ़ी का सबसे सुंदर ताल माना जाता है।

4. **महादेव गुफा** - नगर से 10 किलोमीटर दूर स्थित महादेव हिंदुओं के लिए पूजनीय स्थल है। यह पवित्र गुफा भगवान शिव को समर्पित है। यह गुफा 30 मीटर लम्बी है एवं यहाँ हमेशा पानी बहता रहता है। कहा जाता है कि भस्मासुर से बचने के लिए भगवान शिव यहीं पर छिपे थे। भगवान शिव ने भस्मासुर को वरदान दिया था कि वह जिस के सिर पर हाथ रख देगा वह भस्म हो जायेगा। गुफा के भीतर शिवलिंग बना हुआ है। शिवरात्री का पर्व यहाँ पूरे जोश के साथ मनाया जाता है। महादेव गुफा पहुंचने का मार्ग काफी दुर्गम है।

5. **प्रिदर्शनी पाईंट** - यह सतपुड़ा पहाड़ी का सबसे ऊँचा पाईंट है। इसी स्थान से कैप्टन जेम्स फॉरसिथ द्वारा 1857 में इस खूबसूरत हिल स्टेशन की खोज की गई थी। इस पाईंट का मूल नाम फॉरसिथ पाईंट था लेकिन बाद में इसका नाम बदलकर प्रियदर्शिनी पाईंट रख दिया गया। यहाँ से सूर्यास्त का नजारा बेहद मनमोहक लगता है। चौरादेव, महादेव, धूपगढ़ नामक सतपुड़ा की तीन प्रमुख चोटियां यहाँ से देखी जा सकती है।

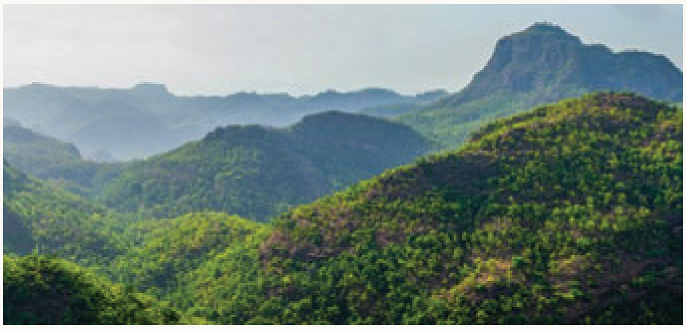

6. **रजत प्रपात** - अप्सरा विहार के आधा किमी पूर्व दिशा में रजत प्रपात है। इस प्रपात की ऊंचाई 350 फीट है। झरने से गिरता जल यहाँ तरल चांदी के समान प्रतीत होता है। झरने तक पहुंचने का मार्ग काफी दुर्गम है। केवल साहसिक पर्यटक ही ट्रेकिंग के माध्यम से झरने तक पहुंच सकते है।

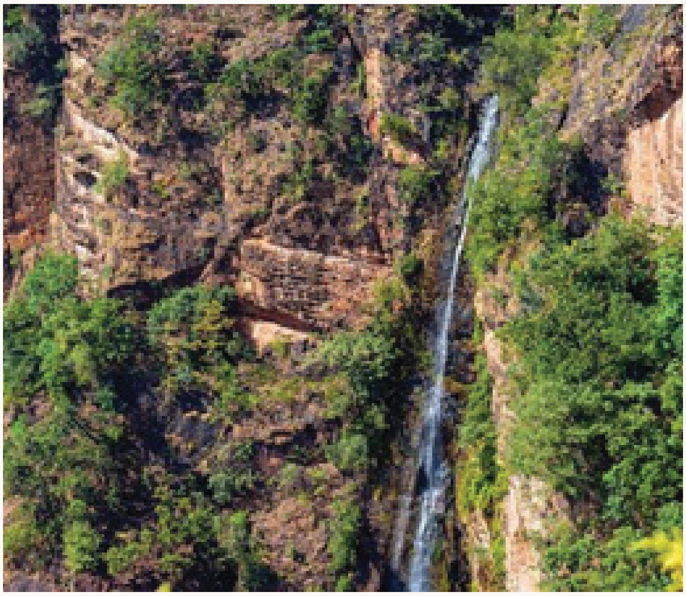

7. **राजेंद्र गिरि** – इस पहाड़ी ने भारत के प्रथम राष्ट्रपति को बहुत ज्यादा लुभाया था। वह यहाँ की खूबसूरती से प्रभावित होकर कई बार यहाँ आएं थे। उनके नाम पर ही इस पहाड़ी का नाम राजेंद्र गिरि रखा गया था। उनके ठहरने के लिए यहाँ रविशंकर भवन बनवाया गया था। पहाड़ी के आस-पास का दृश्य सैलानियों को मंत्रमुग्ध कर देता है।

8. **अंधो खो** - यह पचमढ़ी की सबसे गहरी एवं तंग घाटी है। जिसकी गहराई 300 फीट है। दोनों ओर घने जंगलों से घिरी इस घाटी के नीचे बहते पानी की स्पष्ट आवाज सुनाई देती है। कहा जाता है कि भगवान शिव ने यहाँ एक असुर सर्प को दफनाया था। स्थानीय लोगों में यह घाटी अंधो खो के नाम से जानी जाती है।

9. **चौरागढ़** - महादेव गुफा से 4 किमी की खड़ी चढ़ाई से चौरागढ़ पहुंचा जा सकता है। पहाड़ी के आयातकार शिखर पर एक मंदिर है जहाँ भगवान शिव की प्रतिमा स्थापित है। भगवान शिव को त्रिशूल भेंट करने के लिए श्रद्धालु बड़े जोश के साथ मंदिर जाते है। आराम करने के लिए वहाँ एक धर्मशाला भी बनी है।

10. **मधुमक्खी झरना** - नगर से 3 किमी दूर स्थित मधुमक्खी झरना यमुना प्रपात के नाम से जाना जाता है। नदी में गिरते इस खूबसूरत झरने से पचमढ़ी को पानी की आपूर्ति की जाती है। नहाने के लिए यह जलप्रपात काफी लोकप्रिय है। इस झरने तक आसानी से पहुंचा जा सकता है।

11. **तामिया** - हमेशा पर्यटकों से भरा रहने वाला तामिया खूबसूरती के मामले में पचमढ़ी से कम नहीं है. तामिया के सनसेट पाईंट में घंटो बैठकर सूर्यास्त की खूबसूरती देखी जा सकती है। सतपुड़ा की पहाड़ियां यहाँ अपनी सुंदरतम रुप में दिखाई देती है। तामिया पचमढ़ी से 8 किमी की दूरी पर स्थित है एवं यहाँ जीप या बसों के माध्यम से पहुंचा जा सकता है।

12. **सतपुड़ा राष्ट्रीय पार्क** - 1981 में स्थापित सतपुड़ा राष्ट्रीय पार्क 524 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला है। यह पार्क अत्यंत दुर्लभ पक्षियों का घर है। यहाँ टाईगर, बिसन, चार सींग वाले हिरण जैसे जानवरों को देखा जा सकता है। यह पार्क सदाबहार साल, टीक एवं बांस के पेड़ों से भरपूर है। पार्क के आसपास ठहरने की उत्तम व्यवस्था है।

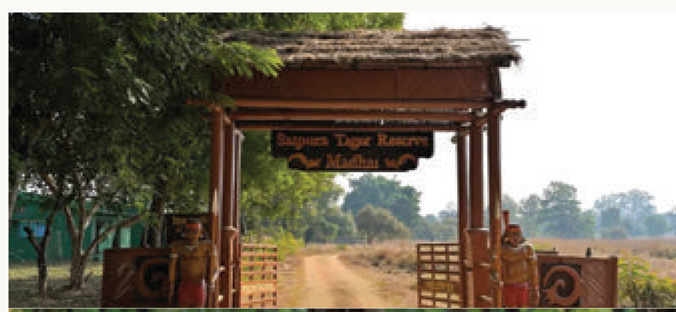

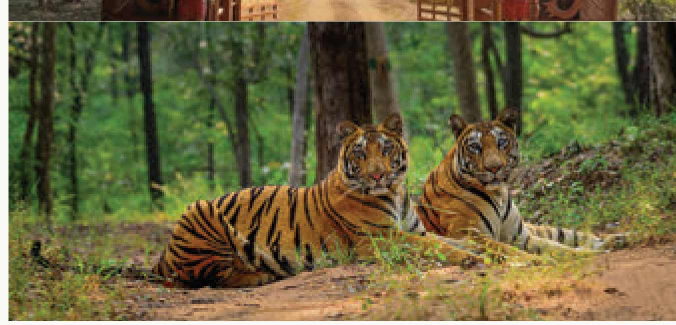

13. **उपसंहार** - पचमढ़ी प्रकृति की गोद में मोती के सामान चमकने वाला पर्यटन स्थल है, जो सभी पर्यटक को अपने में समाहित कर लेता है। पर्यटक चाहे देशी हो या विदेशी दोनों ही इस स्थल की सुंदरता से मंत्रमुग्ध हो जाते है।

देवों की भूमि: केरल

विकास भकत, अधिकारी (राजभाषा)

बचपन से ही मैं सुनता और पढ़ता आ रहा था कि हमारे देश के दक्षिण भू-भाग में एक स्वर्ग जैसा सुंदर भूमि स्थित है , जो केरल के नाम से प्रसिद्ध है। केरल, एक ऐसा राज्य जो अपनी प्राकृतिक सुंदरता, समृद्ध संस्कृति और परंपरा तथा विश्वप्रसिद्ध मसालों के स्वाद से जाना जाता है। मेरे अध्ययन काल के दौरान मैंने कभी सोचा नहीं था कि मेरी नौकरी की पहली तैनाती इस स्वर्ग जैसा सुंदर जगह पर होगी। जी हाँ , यह अनुभव उस वक्त का है जिस समय पूरे उत्तर भारत के अधिकतर राज्यों में कड़ाके की ठंड पड़ रही थी। दिसंबर महीने का वह वक्त और तारीख थी 23.12.2019। हम मध्यम वर्गीय परिवार के बच्चे जब कभी भी अपने घर से बाहर निकलते हैं तो माँ दो -तीन वक्त की रोटी और साथ में किसी भी तरह की दिक्कत न हो जिसके लिए हर तरह का सामान उपलब्ध करा देती है। जाड़े का वक्त था, इसलिये माँ ने भी साथ में अच्छे खासे गर्म कपड़े दे दी। इस क्रम में मुझे तनिक भी अंदाजा नहीं था कि जिन संसाधनों के साथ मैं केरल के लिए निकल रहा था , वहाँ पहुचते ही मुझे कभी ठंड का एहसास ही नहीं होगा। और यह अनुभव मैं जब तक केरल में रहा तब तक मेरे साथ था। केरल के मौसम का अधिक ठंड न होने के पीछे कुछ भौगोलिक कारण हैं जिसपर मैं ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहता हूँ।

दिनांक 23.12.2019 को मेरी पहली नियुक्ति केरल के कोच्ची शहर स्थित एफ ए सी टी लिमिटेड, उर्वरक एवं रसायन मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है, में हिंदी अधिकारी के पद पर हुई। नई जगह, नए लोग, रहन सहन, खान-पान, भाषा बोली सब

कुछ अलग थी। कुछ दिनों तक तो मैं स्वयं को कोसने लगा कि क्यों मैंने घर से इतनी दूर की नौकरी स्वीकार कर ली। मुझे तनिक भी मन नहीं लग रहा था। कार्यालय में भी अपने साथ के अधिकारों एवं साथियों से बात करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। केरल की क्षेत्रीय/आधिकारिक भाषा मलयालम है। मेरी जिस शहर में न्युक्ति हुई थी , वह शहर कोच्ची है। केरल का कोच्ची शहर — जिसे कोचीन (Cochin) भी कहा जाता है — भारत के केरल राज्य का एक प्रमुख तटीय महानगर है। यह राज्य का व्यावसायिक और समुद्री व्यापार का केंद्र माना जाता है। यह शहर अरब, चीनी, पुर्तगाली, डच और ब्रिटिश व्यापारियों का ऐतिहासिक केंद्र भी रहा है। इसे **"क्वीन ऑफ अरेबियन सी"** भी कहा जाता है। भारत का पहला पूरी तरह सौर ऊर्जा से चलने वाला हवाईअड्डा, कोचीन इंटरनेशनल एयरपोर्ट इसी शहर में स्थित है। इस शहर में सरकारी एवं अन्य बड़ी बड़ी निजी क्षेत्र की कंपनियों के कारण यहाँ काम करने वाले अधिकतर लोग अंग्रेजी अथवा अन्य भाषाओं का प्रयोग कर अपने विचारों का आदान प्रदान आसानी से कर लेते हैं। केरल में आने के बाद अंग्रेजी भाषा से मुझे काफ़ी हद तक सहायता मिली। यही एक वजह है कि हिंदी अधिकारी होने के नाते मेरी अंग्रेजी भी अच्छी हो गई। मैं केरल में तक़रीबन साढ़े चार वर्ष कार्यरत रहा। इस कार्यकाल के दौरान मैंने केरल को बहुत ही करीब से देखा और इसे एंजॉय किया, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से आपके समक्ष भी रखना चाहूँगा।

केरल के प्रमुख पर्यटन स्थल-

मुन्नार (Munnar) यात्रा:- नई जगह पर अगर आपके कोई मित्र संगी न हो तो जीवन बेजान सा लगने लगता है। इसी उद्देश्य से सबसे पहले केरल में मैंने कुछ मित्र बनाए। कुल 6 लोगों की हमारी टीम मिलकर जब कभी भी कार्यालय से छुट्टी मिलती, हम निकल जाते केरल की खुबसुरती का मजे लेने। हमारी पहली यात्रा मुन्नार की थी। दूर-दूर तक फैले मुन्नार के विशाल चाय के बागान, करीने से कटे हुए चाय के पौधे, जो हरे मखमली कालीन की तरह दिखते हैं। यह मुन्नार की पहचान है। यहाँ की पहाड़ियाँ कोहरे और बादलों से ढकी रहती हैं, जो एक जादुई और शांत वातावरण बनाती हैं। कई छोटे-बड़े झरने और नदियाँ इस क्षेत्र को और भी मनमोहक बनाती हैं। यह स्थान गर्मी से राहत दिलाता है और एक सुकून भरी छुट्टी के लिए आदर्श है। पास के **एराविकुलम राष्ट्रीय उद्यान (Eravikulam National Park)** में स्थानिक नीलगिरि तहर जैसे दुर्लभ जानवर देखे जा सकते हैं। मुन्नार की खुबसूरती देखकर सचमुच हमारे मन में "गोड्स ऑन कंट्री अर्थात ईश्वर की अपनी धरती" कथन चरितार्थ हो गई।

अलेप्पी (Alleppey) यात्रा:- अलेप्पी, जिसे आधिकारिक तौर पर आलप्पुष़ा (Alappuzha) के नाम से जाना जाता है, केरल के सबसे प्रसिद्ध और खूबसूरत पर्यटन स्थलों में से एक है। इसे अक्सर "पूरब का वेनिस" कहा जाता है। यह नहरों, झीलों, और लैगून का एक अंतःसंबद्ध (interconnected) जाल है, जो वेम्बनाड झील तक फैला हुआ है। इन जलमार्गों से गुज़रते हुए, आपको नारियल के पेड़ों, धान के हरे-भरे खेतों और स्थानीय गाँव के जीवन की झलक देखने को मिलती है, जो एक अविस्मरणीय अनुभव होता है। पारंपरिक रूप से धान की ढुलाई के लिए इस्तेमाल होने वाली बड़ी नावों (जिन्हें **केट्टुवल्लम** कहा जाता है) को अब लक्जरी हाउसबोट में बदल दिया गया है। पर्यटक इन हाउसबोट में दिन का क्रूज या रात भर का ठहराव बुक कर सकते हैं। यह ठहरना किसी चलते-फिरते होटल में रहने जैसा होता है, जहाँ आप आराम से प्रकृति का आनंद ले सकते हैं और स्थानीय भोजन का स्वाद चख सकते हैं। अगस्त से मार्च के बीच, खासकर मानसून के बाद का मौसम (सितंबर से मार्च) बहुत सुहावना होता है। यदि आप नेहरू ट्रॉफी बोट रेस (अगस्त के दूसरे शनिवार को) देखना चाहते हैं, तो अगस्त में अवश्य जाएँ। मुन्नार के बाद अलेप्पी हमारा दूसरा सबसे बडा पर्यटन केंद्र रहा।

केरल की सांस्कृतिक धरोहर ओणम (Onam):- ओणम (Onam) केरल का एक प्रमुख और भव्य फसल उत्सव है, जिसे मलयाली समुदाय द्वारा बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। यह 10 दिनों तक चलता है और केरल का आधिकारिक त्योहार भी है। यह त्योहार असुर राजा **महाबली** की घर वापसी की याद में मनाया जाता है। पौराणिक कथा के अनुसार, राजा महाबली अपनी प्रजा से मिलने के लिए साल में एक बार पाताल लोक से धरती पर आते हैं। इसे अच्छी फसल आने की खुशी में भी मनाया जाता है। यह मलयालम कैलेंडर के **चिंगम** माह (जो आम तौर पर अगस्त और सितंबर के बीच आता है) में मनाया जाता है। 10 दिनों के उत्सव के दौरान कई कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें शामिल हैं: लोग घरों के आंगन में फूलों से आकर्षक रंगोली बनाते हैं। पारंपरिक नाव दौड़ कराए जाते हैं। इस त्योहार का उत्सव ओणम साध्या (Onam Sadya) जैसे एक भव्य पारंपरिक दावत, जिसमें कई तरह के शाकाहारी व्यंजन बनाए जाते हैं, के साथ मनाते हैं।

इन तमाम प्रमुख पर्यटन केंद्र के अलावा केरल शास्त्रीय और लोक कलाओं का एक भंडार है। **कथकली (Kathakali):** यह केरल का सबसे प्रसिद्ध शास्त्रीय नृत्य-नाटिका है। इसमें विस्तृत वेशभूषा, चेहरे के रंग (मेकअप) और विस्तृत हावभाव (मुद्राएँ) के माध्यम से पौराणिक कहानियाँ प्रस्तुत की जाती हैं। **मोहिनीअट्टम (Mohiniyattam):** यह एक सुंदर और कोमल शास्त्रीय एकल नृत्य है, जिसे मुख्य रूप से महिलाएँ करती हैं। **थेय्यम (Theyyam):** यह उत्तरी केरल का एक **जीवंत अनुष्ठानिक (Ritualistic)** कला रूप है जिसमें देवता का रूप धारण किया जाता है। **कलारीपयट्टु (Kalaripayattu):** यह दुनिया के सबसे पुराने मार्शल आर्ट रूपों में से एक है। पूरे चार वर्ष के दौरान मैने कई जगहों का दौरा किया, अनेकों कला एवं संस्कृतियों को करीब से समझा, जिसकी अनुभूती आज भी मेरे दिल में संजोय हुए है।

फ़िरोज़ाबाद: कांच नगरी ही नहीं इतिहास के पन्ने समेटे एक जीवंत शहर

अशोक कुमार, कार्यपालक सहायक

पहले इश्क की तरह है ये शहर, फ़िरोज़ाबाद... किसी शायर ने अपने शहर की याद में ये पंक्तियाँ लिखी । उत्तर प्रदेश का फ़िरोज़ाबाद जिला जिसे "काँच की राजधानी" या फ्लास कैपिटल भी कहते हैं, खुद में सदियों का इतिहास, किस्से, कहानियाँ समेटे है। पारंपरिक काँच की चूड़ियों के उत्पादन के लिए दुनियाभर में प्रसिद्ध ये शहर, जीवंत है । यहाँ घर-घर में चुड़ियाँ बनती हैं। 'सुहागनगरी' के नाम से विख्यात इस शहर का प्राचीन नाम चंदद्वार (चंद्रवाड़) था। जैन राजा चंदरसेन ने चंदद्वार बसाया था। यहां हिन्दू मंदिरों के साथ- साथ मुगलकालीन शाही मस्जिद और जैन मंदिर भी है।

फिरोजाबाद शहर की अपनी खासियत है। यह शहर आज़ादी की लड़ाई का भी गवाह रहा। यहां के लोग भारत छोड़ो आंदोलन, खिलाफत आंदोलन, नमक सत्याग्रह में शामिल हुए। कईयों को जेल भी हुई थी। बाद के वर्षों में 1929 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी , 1935 में खान अब्दुल गफ्फार खान (सीमांत गांधी), 1937 में पंडित जवाहर लाल नेहरू और 1940 में सुभाष चन्द्र बोस फिरोजाबाद आए थे।

1566 में मिला फिरोजाबाद नाम:

इतिहासकार बताते हैं, वर्ष 1566 में मुगल शासक अकबर के शासनकाल में फिरोज शाह मंसब डार की ओर से फिरोजाबाद का नाम दिया गया था। बताया जाता है, अकबर के नवरत्नों ने से एक राजा टोडरमल इस शहर से होते हुए तीर्थयात्रा को जा रहे थे, लेकिन उन्हें लुटेरों ने लूट लिया। उनके अनुरोध पर अकबर ने अपने मनसबदार

फिरोज शाह को यहां भेजा। प्रमाण के तौर पर निगम के सामने फिरोज शाह की कब्र है।

दिलचस्प है चूड़ी निर्माण का इतिहास:

फिरोजाबाद की बातें कांच की चूड़ियों और बर्तनों के बिना अधूरी हैं। यहां कांच के कारखाने पीढ़ी दर पीढ़ी पारंपरिक तरीकों से चलाए जाते रहे हैं। गलियों में घूमते हर तरफ रंग-बिरंगी आकर्षक चूड़ियाँ देख आपका मन रंगीन हो जाएगा। साहित्यरत्न गणेश शर्मा (प्राणेश) द्वारा लिखित और वर्ष 1962 में प्रकाशित पुस्तक 'फिरोजाबाद परिचय' के अनुसार, यहां कांच निर्माण की शुरुआत चंद्रवाड़ के राजाओं तथा आगरा के मुगल शासकों की राजधानी बनाने से तकरीबन 250 से 300 साल पहले मानी जाती है। दरअसल, गाँव उरमुरा और रपड़ी में आसानी से रेता और सींग प्राप्त हो जाते थे। इसलिए फ़िरोज़ाबाद के निवासी अपने मकान के पास ही छोटी भट्टी तैयार कर काँच की चूड़ियाँ बनाने लगे थे। तब चूड़ियां न तो आकर्षक होती थीं और न ही उनका कोई रंग था।

1910 में स्थापित हुआ पहला कारख़ाना:

फ़िरोज़ाबाद समय के साथ बदलता गया। देहरादून में बंद हो चुकी कांच फैक्ट्री से जर्मन विशेषज्ञ फ़िरोज़ाबाद आए। उन्होंने साल 1910 में यहां पहला कारख़ाना 'द इंडियन ग्लास वर्क्स' स्थापित किया। शहर के सेठ नंदराम के प्रयासों ने कारख़ाना स्थापित करने में सहयोग किया। इस कारखाने की भट्टी में कोयले की गैस से सिर्फ कांच पकाया और ब्लॉक ग्लास बनाया जाता था। द इंडियन ग्लास वर्क्स के पैर जमते ही फिरोजाबाद में कांच बनाने की नींव पड़ी। इसके बाद अन्य जगहों पर भी कांच जाने लगे। शुरुआती दौर में बनी चूड़ियां सिर्फ लाल, पीले, नीले रंग की मोटी और भरी हुआ करती थी। लेकिन समय के साथ चूड़ियों को आकर्षक बनाया जाने लगा । वर्तमान में फ़िरोजाबाद की चूड़ियों की मांग देश ही नहीं विदेशों में भी है।

चूड़ी उद्योग के जनक हाज़ी रुस्तम उस्ताद:

फिरोजाबाद चूड़ी उद्योग का जनक हाजी उस्ताद रुस्तम को कहा जाता है। उनकी कब्र आज भी फ़िरोज़ाबाद में है। उस्ताद रुस्तम यहीं रहकर चूड़ियाँ बनाते थे। धीरे-धीरे यह काम शहर में फैल गया। वर्तमान समय में सैकड़ों फैक्ट्रियां चूड़ी निर्माण कार्य करती है। कहते हैं, 1920 में चूड़ियों के आधुनिक कारखाने की नींव हाजी रुस्तम उस्ताद ने रखी थी। हाजी कल्लू उस्ताद, कादिर बाक्स और उस्ताद भूरे खान का उत्साह, मेहनत और लगन से फ़िरोजाबाद में सुंदर चूड़ियां बनने लगी। ये सभी केमिकल का काम करने और रंग बनाने मे माहिर थे। इन्होंने ही लकड़ी के बेलन का इस्तेमाल कर चूड़ियां बनाना शुरू किया। आखिरकार, इनकी मेहनत रंग लाई। फ़िरोजाबाद की चूड़ियों की खनक चारों ओर सुनाई देने लगी।

मुगलकालीन इतिहास का गवाह शाही मस्जिद:

फ़िरोज़ाबाद शहर एतिहासिक शहर है। आस्था के कई स्थल भी हैं। शहर के बीचों बीच स्थित है, शाही मस्जिद। मुगलकालीन इतिहास का जीता – जागता उदाहरण है। इस मस्जिद का निर्माण 1648 ई0 में शुरू हुआ था, जिसे बनाकर तैयार होने में करीब 5 साल लगे थे। मुगल शासक शाहजहां ने इसका निर्माण करवाया था। शाही मस्जिद की वास्तुकला लोगों को आकर्षित करती है। मस्जिद में तीन गुंबद हैं। वहीं, इसका प्रांगण भी काफी बड़ा है। यह फ़िरोज़ाबाद की सबसे प्राचीन मस्जिद है। पर्यटन के लिहाज से भी ये स्थान खासा लोकप्रिय है। शाही मस्जिद के अलावा यहां जैन मंदिर है जिसमें महावीर स्वामी की प्रतिमा है। इतिहासकार बताते हैं कि वर्ष 1976 में भगवान बाहुवली स्वामी की प्रतिमा स्थापित हुई, यहां चंद्रप्रभु की मूर्ति भी स्थापित है। और यहां माँ वैष्णो देवी का मंदिर है, साल 2010 में इस मंदिर में जम्मू स्थित माँ वैष्णो मंदिर से अखंड ज्योति लाई गई थी। इसके अलावा यहाँ यमुना किनारे श्री हनुमान जी का बहुत प्रसिद्ध प्राचीन मंदिर है, और कोटला किला भी है जिसका निर्माण सुल्तान फिरोज शाह तुगलक ने करवाया था।

चंद्रसेन का किला:

इसी तरह, फ़िरोज़ाबाद के खास पर्यटन स्थलों में से एक चंद्रसेन का किला भी है। राजा चंद्रसेन का किला प्राचीनतम इतिहास का साक्षी रहा है , इस किले को चंद्रसेन के बेटे ने 13वीं शताब्दी में बनवाया था।

इतिहासकारों कि मानें तो यहां कई एतिहासिक युद्ध हुए हैं। किले का निर्माण चंद्रसेन के बेटे चंद्रपाल ने करवाया था। सन 1193 के आसपास राजा जयचंद और मोहम्म्द गौरी के बीच भीषण युद्ध इसी जगह हुआ था। यह किला आज भले ही खंडहर का रूप ले चुका हो, सदियों का इतिहास खुद में समेटे है। जैन विद्वानों कि मान्यता थी, कि ये भगवान के पिता वासुदेव द्वारा शासित रहा है।

पूर्वोत्तर भारत और कार्बी जनजाति

शशांक कुमार, सहायक कार्यपालक (राजभाषा)

दिल्ली की निरंतर आपाधापी से निकलकर, जब मैं अपनी पीएचडी पूरी करने के लिए असम राज्य के एक जनजातीय क्षेत्र कार्बी अंगलोंग में गया था। हल्की घबराहट के साथ मेरे भीतर एक अनजाना रोमांच भी था, जो मुझे इतनी दूर तक खींच लाया था। सुदूर इलाके में रहने का यह मेरा पहला अनुभव था, और जिन लोगों के बीच मुझे रहना था, उनसे मेरी मुलाकात तब तक केवल फोन की औपचारिक बातचीत तक सीमित थी। पूर्वोत्तर भारत के बारे में समाज में व्याप्त आम धारणाओं और सुरक्षा चुनौतियों से मेरे शुभचिंतकों ने मुझे पहले ही अवगत करा दिया था। मैंने उन चेतावनियों को सुना, लेकिन भीतर की तीव्र जिज्ञासा ने जाने का साहस दिया। दिफू पहुँचते ही, पहले ही दिन मेरे सहपाठी लोंगबीर इंगति, जो स्वयं कार्बी समुदाय से हैं, ने मेरा स्वागत किया। उन्होंने मुझे पहले ही दिन दिफू शहर के प्रमुख स्थलों और असम विश्वविद्यालय परिसर का भ्रमण कराया, अपने घर ले जाकर परिवार के सदस्यों से मिलाया, और सुस्वादु भोजन कराया। लोंगबीर और उनके परिवार का वह सरल, स्नेहपूर्ण और आत्मीय आतिथ्य मेरे भीतर के किसी भी प्रकार के भय या संकोच को तुरंत मिटा दिया। उस सहज जुड़ाव ने मुझे यहाँ के लोगों और परिवेश के साथ घुलने-मिलने का आत्मविश्वास प्रदान किया। मैं वहाँ रहने के साथ न केवल अपना शोध कार्य पूरा किया, बल्कि कार्बी संस्कृति से जुड़ी एक बेहतरीन और अविस्मरणीय अनुभव को साथ लेकर लौटा।

असम के कार्बी आंगलोंग और पर्वतीय क्षेत्रों में बसी कार्बी जनजाति एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है, जिसका जीवन दर्शन प्रकृति के साथ सहजीवन और सामुदायिक सहभागिता पर आधारित है। मंगोलॉयड मूल और तिब्बती-बर्मी भाषाई समूह से संबंधित यह समुदाय प्राचीन काल में पश्चिमी चीन से प्रवासन कर ब्रह्मपुत्र घाटी पहुँचा, चूँकि कार्बी के शुरुआती बसावट का कोई लिखित या पुरातात्विक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हैं, उनके इतिहास की जानकारी का एकमात्र स्रोत उनके लोकगीत और दंतकथाएँ हैं। इन लोक कथाओं के अनुसार, वे कभी कलांग और कपिली नदियों के तटों पर, यानी पूरे काजीरंगा क्षेत्र में निवास करते थे। कार्बी समुदाय को कछारी राजाओं के काल में जयंतिया समुदाय के निरंतर उत्पीड़न ने कार्बी के एक बड़े समूह को उत्तर की ओर प्रवास करने के लिए मजबूर किया। और इसी बीच उन्हें बर्मी आक्रमणों का तीव्र संघर्ष भी झेलना पड़ा; इसी संघर्ष के दौरान महिलाओं द्वारा सुरक्षात्मक दृष्टि से चेहरे पर काली रेखा (दुक) खींचने की परंपरा शुरू हुई। वर्तमान में यह समुदाय अपनी अनूठी पहचान के साथ असम के विभिन्न अंचलों में सुव्यवस्थित है।

सामाजिक जीवन:

I) गोत्र (वंश) और विवाह परंपरा:

कार्बी लोगों के पाँच गोत्र (वंश) हैं जिन्हें "कुर" कहा जाता है। ये तेरंग, तेरोन, एंघी, इंगति और तिमुंग हैं। ये गोत्र पूर्णतः बहिर्विवाही (exogamous) होते हैं। एक ही गोत्र के लड़के और लड़की के बीच विवाह कदापि नहीं हो सकता, क्योंकि एक ही गोत्र के संतानों को भाई-बहन माना जाता है। इस प्रथागत कानून का उल्लंघन करने पर संबंधित जोड़े को निश्चित रूप से समाज

से बहिष्कृत कर दिया जाता है। यद्यपि एकविवाह (monogamy) ही प्रचलित प्रथा है, बहुविवाह (polygamy) पर कोई रोक नहीं है, हालांकि बहुविवाह के मामले अत्यंत दुर्लभ हैं। अन्य जनजातीय समाजों की तरह, कार्बी लोगों में वधू मूल्य (bride price) की प्रथा नहीं है। विवाह के बाद, पत्नी अपने पिता का उपनाम (surname) ही उपयोग करना जारी रखती है, जबकि बच्चे अपने पिता का उपनाम ग्रहण करते हैं। इस प्रकार, कार्बी परिवार संरचना की पितृसत्तात्मक प्रणाली का पालन करते हैं।

II) ग्राम संरचना:

कार्बी लोगों के बसाव का तरीका गाँव के रूप में होता है। प्रत्येक गाँव में कई बस्तियाँ होती हैं जो एक-दूसरे से काफी दूरी पर स्थित होती हैं, और इन सभी बस्तियों का भी अपना एक गाँवबुरा होता है। प्रचलित शब्दों में हम उसे मुखिया कह सकते हैं। प्रत्येक कार्बी गाँव का नाम गाँवबुरा के नाम पर रखा जाता है।

कार्बी लोग, अन्य पहाड़ी जनजातियों की तरह, पहाड़ी चोटियों पर निवास करने की प्रवृत्ति रखते हैं, किंतु ये सामान्यतः सघन क्षेत्रों में नहीं रहते। गाँव न केवल आकार में छोटे होते हैं, बल्कि बिखरे हुए भी होते हैं। कार्बी आंगलोंग जिले के मैदानी हिस्से में, जहाँ कार्बी लोग स्थायी कृषि करते हैं, वहाँ गाँव के लोग एक ही जगह पर स्थिर रहते हैं। लेकिन आंतरिक क्षेत्रों में, जहाँ स्थानांतरण खेती (झूम खेती) की जाती है, वहाँ गाँव के स्थान को बदलने की प्रथा आज भी जारी है।

III) मकान:

एक विशिष्ट कार्बी मकान न तो बहुत छोटा होता है और न ही बहुत बड़ा। इसके नींव की संरचना लकड़ी के खंभों का उपयोग करके एक बाँस के मंच पर बनाई जाती है। यह मंच ज़मीन से कई फीट ऊपर ऊँचा होता है। छत के लिए फूस का इस्तेमाल किया जाता है। बाँस से बनी दीवारों पर मिट्टी का लेप लगाया जाता है।

IV) पर्व एवं त्योहार:

कार्बी लोगों के सामाजिक जीवन में त्योहारों का महत्वपूर्ण स्थान है, जिनमें प्रमुखतः पांच मुख्य त्योहार शामिल हैं: सबसे पहला, "चोजुन पूजा" या "स्वरक पूजा", दूसरा, "रोंगकर", जो नए वर्ष की शुरुआत में पूरे गाँव की सामूहिक भलाई, बीमारियों और आपदाओं से मुक्ति तथा अच्छी फसल सुनिश्चित करने के लिए सभी बुजुर्ग पुरुषों द्वारा मनाया जाता है, तीसरा, "सोक्क-एरोई", चौथा, "हाचा-केकान", पाँचवां, :" चोमंगकन" जो चार दिन और चार रात तक चलने वाला सामाजिक-धार्मिक समारोह है, जो मृतक के दाह संस्कार के बाद उसकी आत्मा की शांति के लिए मनाया जाता है।

V) वेशभूषा:

कार्बी लोगों की पारंपरिक वेशभूषा उनके पारिवारिक करघों पर कलात्मक ढंग से बुनी जाती है और पुरुषों तथा महिलाओं के लिए विशिष्ट होती है। पुरुष पारंपरिक रूप से चॉय-नांगपो या चॉय-होंगथोर (कमीज), चॉय-आन, रेकोंग-के-एर, और एंडि रेशम की पगड़ी पोहो पहनते हैं; हालाँकि, अब रिकोंग और पोहो का प्रचलन घट रहा है। इसके विपरीत, कार्बी महिलाएँ और लड़कियाँ कमर पर पिनिकमफ्लक (मेखला सदृश्य वस्त्र) और ऊपरी शरीर को ढकने के लिए पे-कोक नामक कलात्मक वस्त्र का उपयोग करती हैं। वे साथ ही वानकोक नामक एक अत्यंत कलात्मक कमरबंद भी पहनती हैं।

VI) आभूषण:

कार्बी समुदाय का पुरुष पीतल से बनी नारिक नामक कान की बाली, प्रिंसरोई नामक चाँदी का कंगन, और लेकरोआ तथा लेक-एंजी नामक भारी चाँदी के हार पहनता था। कार्बी महिला द्वारा पहने जाने वाले सबसे सुंदर आभूषण नोथेनपी हैं, जो चाँदी से बनी बहुत बड़ी कान की बालियों का एक जोड़ा है। यह कान की बाली दो हिस्सों में अलग की जा सकती है।

दिफू में रहकर इस समुदाय के बारे में मैंने बहुत करीब से जाना कि यह समाज जड़ता की किसी पकड़ में नहीं है, बल्कि गतिशील और जागरूक है। हालाँकि कार्बी समाज में हाल के वर्षों में कई रूपांतरण और परिवर्तन आए हैं, तब पर भी संस्कृति के संरक्षण के लिए किए जा रहे अथक प्रयास देखे। इसका एक ज्वलंत उदाहरण प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला "कार्बी यूथ फेस्टिवल" है, जो युवा पीढ़ी को पारंपरिक खान-पान, त्योहारों और कलाओं से जोड़कर विरासत को जीवंत रखता है। साहित्यिक मोर्चे पर भी, पद्मश्री प्रोफेसर रोंगबोंग तेरंग और 'कार्बी लमेट अमेई' (कार्बी साहित्य सभा) जैसे प्रयासों ने मौखिक परंपरा को लिखित रूप में समृद्ध करने का प्रयास किया है।

बिहू: समृद्धि और उल्लास का संगीतमय पर्व

रंजन कलिता, सहायक अधिकारी (राजभाषा)

बिहू असम का सबसे प्रमुख, पावन और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक उत्सव है, जो असमिया संस्कृति का अभिन्न अंग है। बिहू' संस्कृत का शब्द है। जिसका अर्थ "आशीर्वाद और समृद्धि के लिए प्रार्थना करना" है। यह उत्सव कृषि आधारित समाज में वर्ष के विभिन्न चक्रों को दर्शाता है और एकता, समृद्धि तथा नई शुरुआत का प्रतीक है। इसे प्रतिवर्ष तीन बार मनाया जाता है, जो कृषि चक्र के अलग-अलग चरणों और ऋतुओं के परिवर्तन को दर्शाते हैं।

पहला 'बोहाग बिहू', जो 'बोहाग' (वैशाख, मध्य अप्रैल) के महीने में मनाया जाता है; दूसरा 'माघ बिहू', जो 'माघ' (मध्य जनवरी) के महीने में आता है; और तीसरा 'काटी बिहू', जो 'काटी' (कार्तिक, मध्य अक्टूबर) के महीने में मनाया जाता है। प्रत्येक बिहू का अपना विशेष महत्व है और इन्हें अपनी-अपनी विशिष्ट परंपराओं के अनुसार मनाया जाता है।

बोहाग बिहू को 'रंगाली बिहू' के नाम से भी जाना जाता है। यह असमिया नव वर्ष के आगमन और फसल कटाई का प्रतीक है, जो प्रायः अप्रैल माह में मेष संक्रांति (वैशाख संक्रांति) के अवसर पर मनाया जाता है। यह सात दिनों तक चलने वाला एक वृहद उत्सव है, जो प्रतिवर्ष 14 से 20 अप्रैल तक आयोजित होता है। वर्ष 2026 में भी इसकी शुरुआत 14 अप्रैल से होगी और यह 20 अप्रैल को संपन्न होगा।

बोहाग बिहू के प्रथम दिन परिवार के सदस्य कच्ची हल्दी और उड़द की दाल का उबटन लगाकर स्नान करते हैं और इसके पश्चात बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं। इस अवसर पर पालतू पशुओं को नहलाया जाता है और बिहू नृत्य व लोक गीतों का आयोजन किया जाता है। बोहाग बिहू सात चरणों (सात दिनों) में मनाया जाता है, जो इस प्रकार हैं:"

- **दिन 1: गोरू बिहू (Goru Bihu)–** इस दिन पशुओं, विशेषकर गाय की पूजा की जाती है। इस दिन उन्हें हल्दी से नहलाया जाता है, लौकी और बैंगन जैसे फल-सब्जियां खिलाई जाती हैं। पशुओं की पुरानी रस्सियां बदलकर नई रस्सियां बांधी जाती हैं। कृषि और अच्छी फसल में पशुओं के बहुमूल्य योगदान के लिए इस दिन उनके प्रति आभार व्यक्त किया जाता है।

- **दिन 2: मानुह बिहू (Manuh Bihu) –** इस दिन परिवार के सदस्य हल्दी-उड़द दाल के उबटन से स्नान करते हैं, बुजुर्गों का आशीर्वाद लेते हैं और असमिया नव वर्ष का स्वागत करते हैं। इस मौके पर परिवार के सदस्य अपने से छोटे एवं बड़ों को सम्मान के प्रतीक के तौर पर "बिहुवान या गामोसा" देते है।

- **दिन 3: गोहांय बिहू (Gohain Bihu) –** यह बोहाग बिहू के तीसरे दिन मनाया जाता है। असमिया भाषा में 'गोहांय' का

अर्थ 'ईश्वर' या 'भगवान' होता है। इस दिन श्रद्धालु नामघर और कीर्तनघर जाकर अच्छी फसल, सुरक्षा और सुख-समृद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं। इस अवसर पर 'बिहू नाम', 'कीर्तन घोषा' और 'नाम घोषा' जैसे पारंपरिक भक्ति गीतों का गायन किया जाता है। देवताओं की विशेष पूजा-अर्चना की जाती है और पीठा, तिल के लड्डू आदि जैसे पारंपरिक पकवान बनाए जाते हैं।

- **दिन 4: कुटुम बिहू (Kutum Bihu) –** बोहाग माह का चौथा दिन 'कुटुम बिहू' के रूप में मनाया जाता है (असमिया में 'कुटुम' का अर्थ 'स्वजन' या 'परिवार' होता है)। इस दिन लोग अपने रिश्तेदारों, मित्रों और निकट संबंधियों के घर जाते हैं तथा उनके साथ मिलकर सामुदायिक भोज का आनंद लेते हैं। यह दिन आपसी संबंधों को प्रगाढ़ करने और मेल-मिलाप के लिए समर्पित है।

- **दिन 5: तातोर बिहू या नांगोल बिहू (Tatxaal Bihu or Nangol Bihu)-** यह दिन कृषि यंत्रों और हथकरघा को समर्पित है। इस दिन मुख्य रूप से नांगोल (Nangol अर्थात् हल) की पूजा की जाती है और तातहाल (Tatxaal अर्थात् पारंपरिक असमिया हथकरघा) पर बुनाई का कार्य पुनः आरंभ किया जाता है। असमिया संस्कृति और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में हल और हथकरघा का अत्यंत महत्व रहा है, इसीलिए पुराने समय से ही लोग इन संसाधनों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए इनकी पूजा करते आए हैं। तातहाल असम की महिलाओं की कुशलता और गौरव का प्रतीक है, क्योंकि असम के बुनकर प्राचीन काल से ही अपनी उत्कृष्ट कारीगरी के लिए सुविख्यात रहे हैं। वहीं, असम में धान की व्यापक खेती के कारण 'नांगोल बिहू' का विशेष महत्व है। सामान्यतः तातोर बिहू महिलाओं के लिए और नांगोल बिहू पुरुषों के लिए मुख्य उत्सव का दिन माना जाता है।

- **दिन 6: जियोरी बिहू या सेनेही बिहू (Jiyori or Senehi Bihu)-** बिहू के छठे दिन को 'जियोरी बिहू' के रूप में मनाया जाता है, जब विवाहित पुत्रियाँ उत्सव मनाने के लिए अपने मायके (माता-पिता के घर) आती हैं। यह दोस्तों और प्रियजनों से मिलने और उपहारों का आदान-प्रदान करने का दिन है। यह दिन प्रेम और पारिवारिक बंधन का प्रतीक है।

- **दिन 7: मेला बिहू या सेरा बिहू (Mela Bihu or Chera Bihu)** - बिहू के अंतिम दिन को 'मेला बिहू' या 'सेरा बिहू' के रूप में मनाया जाता है। 'मेला' शब्द उत्सव और जन-समूह के मिलन का प्रतीक है। इस दिन सार्वजनिक स्थानों पर विभिन्न प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भव्य आयोजन किया जाता है। इन कार्यक्रमों में विभिन्न बिहू समितियाँ सामुदायिक स्तर पर बोहाग बिहू का भव्य आयोजन करती हैं। इन आयोजनों में बिहू नृत्य प्रदर्शन, पारंपरिक प्रतियोगिताएं, कला प्रदर्शनियां और विविध सांस्कृतिक गतिविधियां मुख्य आकर्षण होती हैं।

ऐतिहासिक रूप से, राजा और उनके दरबारी इन मेलों में सम्मिलित होकर बिहू के उल्लास को साझा करते थे। यही परंपरा आज भी आधुनिक बिहू मेलों के रूप में जीवंत है, जो पूरे असम के लोगों को एक सूत्र में पिरोती है। यह दिन सांप्रदायिक सद्भाव को सुदृढ़ करने के साथ-साथ इस सात दिवसीय महापर्व के गरिमापूर्ण समापन का प्रतीक है।

माघ / भोगाली बिहू

सद्भाव और एकजुटता की भावना बिहू के प्रत्येक रूप में रची-बसी है। भोगली बिहू (माघ बिहू) के एक दिन पूर्व की रात को 'उरुका' कहा जाता है। इस अवसर पर गाँव के लोग बाँस, लकड़ी, घास और नोरा (धान के पुआल) से 'भेलाघोर' नामक एक अस्थायी संरचना का निर्माण करते हैं, जहाँ सामूहिक भोज (दावत) का आयोजन होता है। माघ बिहू के लिए निर्मित एक अन्य महत्वपूर्ण संरचना 'मेजी' है, जो बाँस, लकड़ी और सूखी घास से तैयार की गई एक मीनार जैसी आकृति होती है। इसे प्रायः नामघर (सामुदायिक प्रार्थना-घर) के परिसर में या घर के आंगन में बनाया जाता है।

माघ बिहू की सुबह परिवार के सदस्य पारंपरिक रूप से 'मेजी' को जलाते हैं। अग्नि देवता और सूर्य की आराधना करते हुए मेजी में चावल, पीठा, पान और पुष्प अर्पित किए जाते हैं। मेजी का जलना अंधकार पर प्रकाश और मृत्यु पर जीवन की विजय का प्रतीक माना जाता है। असम के विभिन्न जातीय समुदाय, जैसे कि सोनोवाल, कछारी, दिमासा और राभा, मेजी जलाने की परंपरा को अपने पूर्वजों की पूजा से भी जोड़ते हैं।

भेलाघोर एवं मेजी

इस उत्सव के दौरान विभिन्न प्रकार के पारंपरिक जलपान परोसे जाते हैं, जिनमें नारियल एवं तिल पीठा, सुंगा-पीठा, घिला पीठा (मालपुआ) और खोला-सापोरी-पीठा प्रमुख हैं। इनके साथ ही नारियल व तिल के लड्डू, दही-मलाई और गुड़ के साथ चिड़वा (सिरा), तथा कोमल-साऊल (चावल की एक विशिष्ट किस्म जो केवल भिगोने से ही नरम एवं खाने योग्य हो जाती है) और बोरा- साऊल (चिपचिपा चावल) का आनंद लिया जाता है। एक अन्य विशेष व्यंजन 'माह-करई' है, जो भुने हुए चावल, तिल, काले चने और सूखी अदरक का एक कुरकुरा मिश्रण होता है। भोगली बिहू की सुबह इन्ही विविध और स्वादिष्ट व्यंजनों के साथ उत्सव का उल्लास मनाया जाता है।

काटी बिहू

काटी या कोंगाली बिहू फसल की वृद्धि और संरक्षण का उत्सव है। बिहू के तीन प्रमुख रूपों में से एक, 'काटी बिहू' मुख्य रूप से धान की रोपाई के पूर्ण होने का प्रतीक है। इसे 'कोंगाली बिहू' भी कहा जाता है,

विभिन्न पकवान

क्योंकि यह वर्ष के उस समय आता है जब पुराने अन्न का भंडार समाप्त होने लगता है और भोजन की उपलब्धता कम हो जाती है। इस त्योहार को मनाने के लिए घरों और धान के खेतों के विभिन्न स्थानों पर मिट्टी के दीपक जलाए जाते हैं। मुख्य दीपक घर के आंगन में तुलसी के पौधे के सम्मुख प्रज्वलित किया जाता है। उत्सव के लिए तुलसी के पौधे के आसपास की सफाई कर उसे एक विशेष मिट्टी के चबूतरे पर स्थापित किया जाता है, जिसे 'तुलसी भेटी' कहते हैं। लोग देवी तुलसी को प्रसाद अर्पित कर अपने परिवार की सुख-समृद्धि और भरपूर फसल के लिए मंगल कामना करते हैं। यह दीप-दान का अनुष्ठान पूरे 'काटी' माह तक श्रद्धापूर्वक चलता है।

धान के खेत के विभिन्न स्थानों पर दीपक

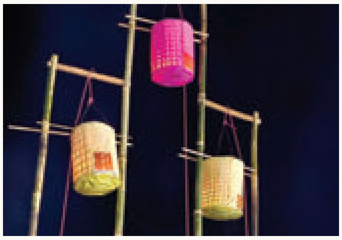

आकाश बंटी

धान के खेतों में "आकाश बंटी" नामक एक विशेष दीपक जलाने की भी परंपरा है। ये दीपक सरसों के तेल से जलाए जाते हैं और बाँस के ऊँचे डंडों के शीर्ष पर स्थापित किए जाते हैं। जनमानस में यह विश्वास प्रचलित है कि ये प्रज्वलित दीपक उनके पूर्वजों की आत्माओं को स्वर्ग का मार्ग दिखाते हैं। इन दीपकों को जलाने का एक व्यावहारिक और वैज्ञानिक उद्देश्य फसलों को हानिकारक कीटों से बचाना भी है, जो प्रकाश की ओर आकर्षित होकर नष्ट हो जाते हैं।

रंगाली बिहू नृत्य में उपयोग होने वाले कुछ वाद्य यंत्र निम्न है :

ढोल – यह लकड़ी से बना होता है। कुछ प्रकार के ढोल जो आमतौर पर उपयोग किए जाते हैं वे हैं बिहू ढोल, ओजा ढोल, ख्राम, ढेपा ढोल, जय ढोल, मडोल, बोर-ढोल।

पेपा - यह मुख्य रुप से भैंस के सींग, बांस और पीतल से बनी वाद्य यंत्र है।

गोगोना – बांस से बना यह पारंपारिक वाद्य यंत्र अपनी विशिष्ट ध्वनि के जाना जाता है।

सुतुली – मिट्टी से बना यह वाद्य यंत्र है। जिसमें एक छेद होता है तथा इसे बजाए जाने पर एशियाई कोयल की ध्वनि उत्पन्न होती है। वर्षों से सुतुली बनाने के लिए बांस का भी उपयोग किया जाता रहा है।

बिहू ताल – इस वाद्य यंत्र में पीतल से बनी दो झांझ होती हैं।

बाही – बाही को बांसुरी भी कहते है।

अंततः, बिहू असम के जनजीवन के लिए अपार हर्ष, उल्लास और सामुदायिक एकजुटता का महापर्व है। यह न केवल राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिंब है, बल्कि प्रकृति के प्रति आभार व्यक्त करने और भरपूर फसल का उत्सव मनाने का एक पावन अवसर भी है।

जल संकट – मौजूदा हालात और समाधान की और कदम

एकता भार्गव, उप महाप्रबंधक (वित्त)

इस बात को लगभग एक साल हो गया जब बेंगलुरु मे जल संकट की खबर सभी न्यूज़ चैनल्स पर आयी थी। एक मेट्रो शहर मे ऐसा होने पर थोड़ी आतुरता हुई और गूगल पर सर्च किया तो पता चला कि 2030 तक संभावना है कि भारत के 40% शहरों मे जल की समस्या होगी, खास तौर पर मेट्रो शहरों में। ये भी पता चला कि भारत में विश्व का केवल 4% शुद्ध पानी है, वहीं भारत की जनसंख्या विश्व की 18% है। नीति आयोग के अनुसार 60 करोड़ भारतीय रोजाना पानी पीने की समस्या का सामना करते हैं।

भारत का जल संकट पिछले कुछ दशकों से बढ़ रहा है। जनसंख्या का तीव्रता से बढ़ना, शहरीकरण को बढ़ावा, औद्योगीकरण, जलवायु परिवर्तन, आदि जल संकट के प्रमुख कारण हैं।

जल संकट की समस्या के समाधान के लिए जल संरक्षण अति महत्वपूर्ण है। जल संरक्षण के प्रमुख तरीके हैं – वर्षा के पानी को सुरक्षित संग्रह करना, कृषि के लिये उपयुक्त तकनीक का उपयोग करना, सीवेज जल उपचार, रोजाना की जिंदगी मे जल का सतर्कता से उपयोग करना, मृदा संरक्षण, वनीकरण आदि।

जल संरक्षण के लिए भारत सरकार ने पिछले दशक में महत्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत की है। इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएं हैं जल जीवन मिशन, अटल जल, अमृत 2.0, जल शक्ति अधिनियम, नमामि गंगे आदि, सभी योजनाओं का मिशन जल संरक्षण और पीने का पानी को गांवों-गांवों तक पहुचाना है।

किसी भी समस्या के समाधान के लिए रणनीति और फंड का होना अनिवार्य है। इसलिए भारत सरकार ने जो योजनाएं शुरू की हैं, वो न केवल जल संरक्षण को सुनिश्चित करती हैं, बाल्की निजी उद्योग को आय कमाने का अवसर देकर योजनाओं मे हिस्सा लेने के लिए प्रेरित भी करती हैं।

मौजूदा समय मे सरकार उपरोक्त योजनाओं के तहत सार्वजनिक निजी भागीदारी मॉडल का अनुसरण करती है, जिसे हाइब्रिड वार्षिक मॉडल भी कहा जाता है। किसी भी विशिष्ट परियोजना को अमल करने के लिए निजी कंपनियों से बोली मांगते हैं और सबसे कम बोली और उपयुक्त अनुभव वाली कंपनी को चुना जाता है।

पिछले कुछ सालों मे भारत की काफी कंपनी इस व्यवसाय मे आयी हैं, जिनमें कुछ प्रमुख नाम हैं –वा टेक वबाग, आयन एक्सचेंज, त्रिवेणी इंजीनियरिंग, जिंदल वॉटर आदि। **यहाँ ये ज़रूर बता दूं कि जल संरक्षण की योजना की वित्तीय ज़रूरत का आरईसी एक मुख्य प्रदाता है।**

एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, हम भी अपनी दैनिक आदतों में बदलाव करके जल संरक्षण में अपना योगदान दे सकते हैं, उदाहरण के लिए, पौधों को पानी देने के लिए बारिश का पानी इकट्ठा करना, डिशवॉशर और वाहसिंग मशीनें तभी चालाना जब वे भर जाएं, नहाते समय पानी बर्बाद ना करना, ब्रश करते समय नल बंद करना, लीकेज को ठीक करना आदि।

हरित भविष्य की ओर एक कदम: ऊर्जा की नई कहानी

एस एस गौतम कुमार, मुख्य प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

आज हम एक ऐसे दौर में हैं जहाँ ऊर्जा केवल बिजली पैदा करने का जरिया नहीं रही—यह हमारे भविष्य की दिशा तय कर रही है। जलवायु परिवर्तन, बढ़ती मांग और सीमित संसाधनों के बीच, नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकें उम्मीद की किरण बनकर उभरी हैं। और सबसे अच्छी बात? ये तकनीकें हर दिन और बेहतर होती जा रही हैं।

सौर ऊर्जा: सूरज की रोशनी से नई संभावनाएँ

सौर ऊर्जा अब सिर्फ छतों पर लगे पैनलों तक सीमित नहीं है। नई फोटोवोल्टिक तकनीक—जैसे पेरोव्स्काइट सोलर सेल—इतनी प्रभावशाली हो गई हैं कि ये 30% से ज़्यादा दक्षता तक पहुँच चुकी हैं। ये हल्की हैं, लचीली हैं और खिड़कियों, बैगों या मोबाइल चार्जर में भी फिट हो सकती हैं।

और बात यहीं खत्म नहीं होती! अब ऐसे बाइफेशियल पैनल आ गए हैं जो दोनों तरफ से रोशनी लेकर ऊर्जा बनाते हैं। साथ ही, केंद्रित सौर ऊर्जा तकनीक दर्पणों की मदद से सूरज की किरणों को इकट्ठा करके और ज़्यादा बिजली पैदा कर रही है।

हरित हाइड्रोजन: हवा से हल्की, ऊर्जा से भारी

क्या आपने कभी सोचा है कि पानी से भी ऊर्जा निकल सकती है? हरित हाइड्रोजन यही कर रहा है। नवीकरणीय स्रोतों से पानी को हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में बाँटकर एक ऐसा ईंधन तैयार किया जा रहा है जो भारी उद्योगों और ट्रांसपोर्ट जैसे क्षेत्रों में क्रांति ला सकता है।

नई तकनीकों ने इसे सस्ता और अधिक प्रभावी बना दिया है, और अब दुनिया भर में इसके बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू हो चुके हैं।

ऊर्जा भंडारण: जब सूरज छिप जाए, तब भी रोशनी रहे

सौर और पवन ऊर्जा दिन और मौसम पर निर्भर होती है। तो सवाल उठता है—जब सूरज न निकले या हवा न चले, तब क्या?

यहीं पर ऊर्जा भंडारण तकनीकें काम आती हैं। नई बैटरियाँ ज़्यादा सुरक्षित हैं, ज़्यादा ऊर्जा स्टोर कर सकती हैं और लंबे समय तक चलती हैं। फ्लो बैटरियाँ और थर्मल स्टोरेज जैसे विकल्प अब बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किए जा रहे हैं। कुछ तकनीकें तो गुरुत्वाकर्षण का इस्तेमाल करके ऊर्जा को ऊँचाई पर स्टोर करती हैं—सचमुच विज्ञान की कमाल की बात!

अपतटीय पवन ऊर्जा: समंदर की लहरों में छिपी शक्ति

अब पवन ऊर्जा सिर्फ ज़मीन तक सीमित नहीं रही। फ्लोटिंग टर्बाइनों की मदद से समंदर के बीचों-बीच, जहाँ हवा तेज़ और लगातार चलती है, वहाँ भी बिजली बनाई जा रही है।

यूरोप और एशिया में इसके कई पायलट प्रोजेक्ट चल रहे हैं, और जल्द ही ये तकनीक आम हो जाएगी।

स्मार्ट ग्रिड: जब बिजली खुद समझदार हो जाए

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) अब बिजली के नेटवर्क को भी स्मार्ट बना रहा है। स्मार्ट ग्रिड सिस्टम खुद तय कर सकते हैं कि कहाँ कितनी बिजली चाहिए, कब ज़्यादा माँग होगी, और अगर कहीं कोई गड़बड़ी हो तो तुरंत प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

इससे न सिर्फ बिजली की बर्बादी कम होती है, बल्कि लागत भी घटती है और पूरे सिस्टम की विश्वसनीयता बढ़ती है।

निष्कर्ष: एक हरित, स्मार्ट और सशक्त भारत की ओर

नवीनतम नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकें सिर्फ मशीनों की बात नहीं हैं—ये हमारे जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश हैं। जब सूरज, हवा, पानी और बुद्धिमत्ता मिलकर काम करते हैं, तो एक ऐसा भविष्य बनता है जो साफ़, सुरक्षित और सबके लिए सुलभ होता है।

हम उस मोड़ पर हैं जहाँ तकनीक और प्रकृति साथ चल रहे हैं। और यही है असली ऊर्जा की क्रांति।

ॐ ध्वनि का महत्व और इसकी आवृतियों का प्रभाव

अनंता गोयल, मुख्य प्रबंधक (वित्त)

लाभकारी ध्वनि आवृत्तियाँ

- **निम्न आवृत्तियाँ (250 एचजेड से नीचे, जिसमें 1-16 एचजेड की इन्फ्रासाउंड शामिल है):** विश्राम को बढ़ावा देती हैं, रक्तचाप कम करती हैं, हृदय गति धीमी करती हैं और मांसपेशियों के तनाव को कम करती हैं क्योंकि ये पैरासंपेथेटिक तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करती हैं ।
- **10-100 एचजेड कंपन:** हड्डियों के विकास को समर्थन देते हैं, ऑस्टियोपोरोसिस को रोकते हैं, काठ का दर्द कम करते हैं और गतिशीलता बढ़ाते हैं ।
- **40-80 एचजेड स्वर:** काठ असुविधा कम करते हैं, गतिशीलता बढ़ाते हैं और चिंता, अवसाद तथा दर्द को कम करते हैं गाबा जैसे न्यूरोट्रांसमीटर के स्राव के माध्यम से ।
- **बाइनॉरल बीट्स (1-30 एचजेड):** ध्यान की मस्तिष्क तरंगों की नकल करते हैं, विश्राम और फोकस में सहायक ।

हानिकारक ध्वनि आवृत्तियाँ

- **उच्च शोर (>85 डीबी, उदाहरण 80+ डीबी (क) व्यावसायिक):** उच्च रक्तचाप, इस्केमिक हृदय रोग (29% अधिक जोखिम), नींद विकार, टिनिटस, रक्तवाहिकाओं का संकुचन, माइग्रेन और प्रतिरक्षा समस्याएँ पैदा करता है ।
- **बहुत उच्च आवृत्तियाँ (13.5-20 केएचजेड 82-92 डीबी पर):**

असुविधा, सिरदर्द, थकान, एकाग्रता में कठिनाई, चिढ़ और तनाव बढ़ाता है ।

नियंत्रित उपचारात्मक निम्न आवृत्तियों का संपर्क स्वास्थ्य बढ़ाता है, जबकि लंबे समय तक उच्च शोर कई प्रणालियों को नुकसान पहुँचाता है

लाभकारी ध्वनि आवृत्तियों के उदाहरण

1. **ॐ ध्वनि:** ॐ की ध्वनि का वैज्ञानिक स्पेक्ट्रम विभिन्न अध्ययनों में भिन्न बताया गया है, लेकिन मुख्य रूप से यह निम्न आवृत्तियों पर केंद्रित है।

- **7.86 एचजेड:** ॐ की मूल आवृत्ति, जो मानव श्रव्य सीमा (20 एचजेड -15 केएचजेड) से नीचे इन्फ्रासाउंड रेंज में है। यह ऋषियों द्वारा उच्च चेतना में सुनी गई ब्रह्मांडीय ध्वनि मानी जाती है ।
- **136.1 एचजेड या 432 एचजेड:** जाप के दौरान उत्पन्न प्रमुख कंपन, जो शरीर की प्राकृतिक आवृत्तियों से अनुनाद करते हैं। यह थायरॉइड, रीढ़ और मस्तिष्क को प्रभावित करता है ।
- **समय-आवृत्ति विश्लेषण (स्पेक्ट्रल डेंसिटी):** ॐ में पिच और फ्रीक्वेंसी मॉडुलेशन होता है, जो कम स्विंग वाली एकरूप तरंगें पैदा करता है। ऊर्जा प्रति हर्ट्ज अधिक होती है, जो तंत्रिका तंत्र को शांत करती है ।
- ये स्पेक्ट्रम गामा तरंगें बढ़ाते हैं, वैगस नर्व सक्रिय करते हैं तथा उपचारात्मक प्रभाव देते हैं।

यहाँ ॐ जाप के लाभों का विस्तार है:

शारीरिक लाभ

- **श्वसन और हृदय स्वास्थ्य में सुधार:** ॐ जाप के दौरान नियंत्रित श्वास और दीर्घ श्वास प्रश्वास से वैगस तंत्रिका उत्तेजित होती है, जो पैरासंपेथेटिक तंत्रिका तंत्र को सक्रिय करती है। इससे हृदय गति और रक्तचाप कम होता है, जिससे शारीरिक शांति मिलती है।
- **प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत बनाना:** ध्यान के कारण तनाव हार्मोन जैसे कोर्टिसोल का स्तर घटता है, जिससे प्रतिरक्षा तंत्र मजबूत होता है। जहाँ नियमित ॐ जाप करने वालों में प्राकृतिक हत्यारा कोशिकाओं तथा अन्य प्रतिरक्षा कोशिकाओं की क्रिया बढ़ जाती है।
- **तंत्रिका तंत्र का संतुलन:** ॐ की ध्वनि से उत्पन्न कंपन सीधे मस्तिष्क तरंगों और तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करते हैं, पारस्परिक संतुलन में मदद करते हैं।

मानसिक और भावनात्मक लाभ

- **तनाव और चिंता कम करना:** ॐ की ध्वनि तंत्रिका तंत्र को शांत कर, सेरोटोनिन और गाबा जैसे न्यूरोट्रांसमीटर की रिहाई बढ़ाकर तनाव और चिंता कम करती है।
- **भावनात्मक स्थिरता बढ़ाना:** नियमित जाप नकारात्मक भावनाओं को साफ करता है और सकारात्मकता को बढ़ावा देता है, जिससे आंतरिक शांति मिलती है।
- **मस्तिष्क क्रियाएं बेहतर बनाना:** ॐ जाप मस्तिष्क के ध्यान, स्मृति और आत्म-नियंत्रण क्षेत्रों को सक्रिय करता है, जिससे ध्यान केंद्रित करने और मानसिक स्पष्टता में सुधार होता है।

आध्यात्मिक और ऊर्जात्मक लाभ

- **शांतिपूर्ण स्थिति का निर्माण:** ॐ का कंपन शरीर और मन को संरेखित करता है, जिससे गहरा विश्राम और ध्यान की स्थिति प्राप्त होती है।
- **मन और वातावरण की शुद्धि:** ॐ जाप नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है और सकारात्मक ऊर्जा का वातावरण बनाता है, जिससे आध्यात्मिक विकास होता है।
- **सर्वव्यापी चेतना से जुड़ाव:** पारंपरिक रूप से ॐ को ब्रह्मांड की मूल ध्वनि माना जाता है, इसलिए इसका उच्चारण व्यक्ति को उच्च चेतना से जोड़ता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण

- हृदय दर परिवर्तन के अध्ययन बताते हैं कि ॐ जाप से स्वायत्त तंत्रिका तंत्र बेहतर होता है।
- ईईजी अध्ययन में ॐ जाप से गामा मस्तिष्क तरंगों की वृद्धि देखी गई है, जो उच्च चेतना और संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं से जुड़ी होती हैं।
- वैज्ञानिक शोध से पता चलता है कि गाबा जैसे न्यूरोट्रांसमीटर का स्राव बढ़ता है, जो विश्राम और मानसिक शांति प्रदान करता है।

ॐ जाप एक समग्र अभ्यास है जो मन, शरीर, और आत्मा को लाभ पहुंचाता है, जिससे समग्र कल्याण और आध्यात्मिक विकास में सहायता मिलती है।

संक्षेप में, ॐ ध्वनि एक उपचारात्मक ध्वनि आवृत्ति का उदाहरण है जो विश्राम बढ़ाकर, तनाव कम करके और समग्र कल्याण सुधारकर मानव स्वास्थ्य को लाभ पहुँचाती है, जो निम्न-आवृत्ति उपचार ध्वनियों के सिद्धांतों से अच्छी तरह मेल खाती है।

स्मार्ट मीटर और कृत्रिम बुद्धिमत्ता: ऊर्जा के भविष्य के लिए एक शक्तिशाली साझेदारी

राहुल गुप्ता, प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence or AI) आज की दुनिया में एक चर्चित शब्द है। ज़्यादातर निर्माता (manufacturers) या सेवा प्रदाता (service providers) बेहतर ग्राहक अनुभव के लिए किसी न किसी तरह के एआई-सक्षम उपकरण व समाधान लेकर आ रहे हैं। AI की परिवर्तनकारी शक्ति बड़ी मात्रा में डेटा को संसाधित (process) करने और उसका विश्लेषण (analysis) करने की इसकी मौलिक क्षमता में निहित है, जो उन पैटर्न और अंतर्दृष्टि (insights) को उजागर करती है जो मानव विश्लेषण से छूट सकती हैं। इन जानकारियों का उपयोग ग्राहकों की विशिष्ट ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किया जाता है। आज, AI दुनिया भर के उद्योगों और अर्थव्यवस्थाओं को नया रूप दे रही है, जिससे दक्षता, नवाचार और नए अवसरों को बढ़ावा मिल रहा है। विशाल डेटासेट का विश्लेषण करने और कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्राप्त करने की AI की क्षमता पारंपरिक कार्यशैलियों और प्रक्रियाओं में पूरी तरह से क्रांति ला रही है। ऊर्जा क्षेत्र भी इसका अपवाद नहीं है।

ज्ञात हो कि भारत सरकार ने वर्ष 2021 में आरडीएसएस (RDSS) योजना शुरू की है, जिसका लक्ष्य 1.5 लाख करोड़ रुपये के अनुमानित योजना व्यय के साथ पूरे देश में 25 करोड़ स्मार्ट मीटर लगाना है। पारंपरिक बिजली मीटरों के स्थान पर स्मार्ट मीटर लगाने से, बिजली कम्पनियां (DISCOM या डिस्कॉम) अब एक ही स्थान पर बैठकर प्रचुर मात्रा में मीटर डेटा तक पहुँच प्राप्त करने में सक्षम हो गए हैं। यह विशाल डेटा डिस्कॉम के लिए उपभोक्ताओं को सभी प्रकार की सुविधा प्रदान करने व अधिक कुशल तरीके से अपने उपभोक्ताओं की सेवा करने हेतु संभावित अवसर पैदा करता है और इसमें AI की बड़ी भूमिका है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि स्मार्ट मीटर में बिजली खपत से संबंधित डेटा को मापने, संग्रहित करने और डिस्कॉम के केंद्रीकृत (centralised) सर्वर पर भेजने की क्षमता होती है। इन स्मार्ट मीटरों में एक अंतर्निहित (in-built) रिले या स्विच होता है जिसे डिस्कॉम द्वारा आवश्यकतानुसार बिजली आपूर्ति को जोड़ने या काटने के लिए केंद्रीकृत सर्वर से दूरस्थ रूप से (remotely) संचालित किया जा सकता है। स्मार्ट मीटर की ये दो प्रमुख विशेषताएँ डिस्कॉम को सटीक बिलिंग और समय पर राजस्व संग्रह सुनिश्चित करने में मदद करती हैं। इस प्रकार, यह डिस्कॉम के सकल तकनीकी और वाणिज्यिक हानि (AT&C loss) को कम करने में मदद करता है। लेकिन क्या स्मार्ट मीटर की केवल यही सीमित क्षमता है? और क्या स्मार्ट मीटर का यह उपयोग मात्र ही इस पूरे तंत्र को स्थापित करने में आने वाली भारी लागत को उचित ठहराता है? बिल्कुल नहीं ! यहीं पर AI की वास्तविक भूमिका सामने आती है, यानी बड़ी मात्रा में मीटर डेटा का प्रसंस्करण और विश्लेषण करके डिस्कॉम और उपभोक्ताओं को स्मार्ट मीटर का अधिकतम उपयोग करने में सहायता करना और उसे कार्रवाई योग्य जानकारी में बदलना।

स्मार्ट मीटर में मुख्यतः कौन सी जानकारी या डेटा रिकॉर्ड और संग्रहित किया जाता है, आइए समझते हैं।

- स्मार्ट मीटर पूरे दिन में प्रत्येक 15 या 30 मिनट के ब्लॉक अवधि में ऊर्जा खपत का डेटा और अन्य संबंधित पैरामीटरों को रिकॉर्ड करता है।
- स्मार्ट मीटर सभी घटनाओं (events) को भी रिकॉर्ड करता है जैसे कि बिजली की विफलता (failure) या बहाली (restoration), अंतर्निहित रिले या स्विच की स्थिति, वोल्टेज में कमी या अधिकता, लोड या भार की अधिकता, ख़राब पावर फैक्टर आदि और विभिन्न छेड़छाड़ (tampers) जैसे मीटर कवर खोलना, चुंबकीय छेड़छाड़, न्यूट्रल तार में गड़बड़ी आदि।

उपरोक्त जानकारी को AI का उपयोग करके संसाधित और विश्लेषित करने पर, कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि (insights) प्राप्त हो सकती है जो न केवल डिस्कॉम की परिचालन और वित्तीय दक्षता (operational and financial efficiency) में सुधार लाने में सहायक होगी, बल्कि उपभोक्ताओं के लिए अपने ऊर्जा उपभोग पैटर्न को समझना और ऊर्जा दक्ष (energy efficient) उपाय अपनाकर ऊर्जा खपत और बिलों को कम करना भी आसान बनाएगी। डिस्कॉम और उपभोक्ताओं के संयुक्त प्रयासों से विद्युत ग्रिड की समग्र स्थिरता बनाए रखने में मदद मिलेगी।

AI द्वारा स्मार्ट मीटर की क्षमता का भरपूर उपयोग करने के कुछ वास्तविक जीवन के उदाहरण इस प्रकार हैं:

1) **भार प्रबंधन (Load Management):** वितरण ट्रांसफार्मरों (DT) की बार-बार विफलता का एक प्रमुख कारण अत्यधिक भार या विभिन्न फेजों में भार का असंतुलन है। भार की अधिकता

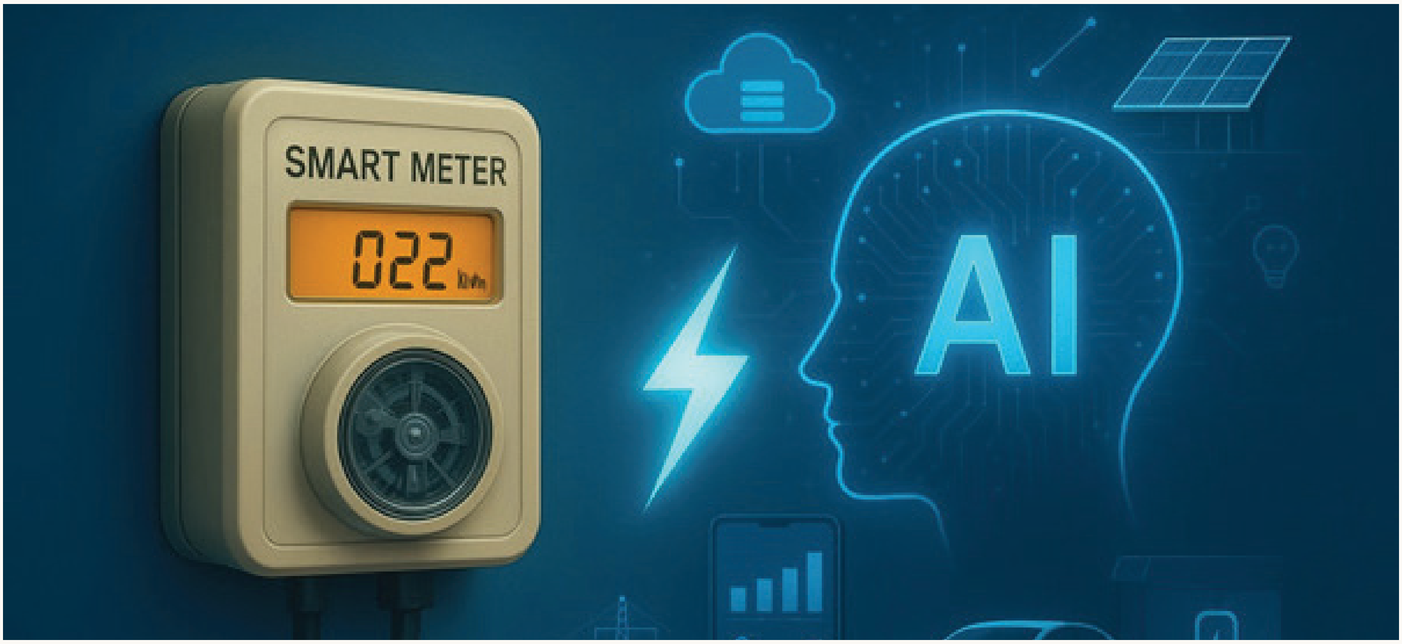

या असंतुलन नेटवर्क में कम वोल्टेज की स्थिति पैदा करता है, जिससे कि बिजली की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। इस तरह की खराबी से न केवल डिस्कॉम पर आवश्यक मरम्मत (repair) या प्रतिस्थापन (replacement) का वित्तीय बोझ पड़ता है, बल्कि उपभोक्ताओं को भी असुविधा होती है। स्मार्ट मीटरों की स्थापना से, डिस्कॉम केंद्रीकृत सर्वर में स्मार्ट मीटर द्वारा भेजे गए अलार्म के माध्यम से ऐसी घटनाओं की निगरानी कर सकेंगे। AI द्वारा विभिन्न DT के भार पैटर्न का विश्लेषण करके किसी क्षेत्र विशेष में अत्यधिक भार वाले DT और आस-पास के कम भार वाले DT की पहचान की जा सकती है। इससे डिस्कॉम को ऐसे अधिक भार वाले ट्रांसफार्मरों के भार के पुनर्वितरण (load re-distribution) या क्षमता वृद्धि (capacity enhancement) की योजना बनाने में मदद मिलेगी। विश्लेषण के उन्नत स्तर पर, डिस्कॉम भविष्य में संभावित भार वृद्धि का सटीक पूर्वानुमान लगा सकते हैं और तदनुसार, वे नेटवर्क संवर्धन (augmentation) और अनुकूलन (optimisation) योजनाएँ विकसित कर सकते हैं।

2) **नेटवर्क विश्वसनीयता (Network Reliability):** बार-बार बिजली कटौती (power outage) न केवल उपभोक्ता संतुष्टि को प्रभावित करती है, बल्कि कई बार वाणिज्यिक या औद्योगिक उपभोक्ताओं के लिए राजस्व या उत्पादन में भारी नुकसान का कारण भी बनती है। AI डिस्कॉम को नेटवर्क में कटौती का विश्लेषण करने और किसी क्षेत्र विशेष में कम विश्वसनीयता वाली संपत्तियों (assets) या पॉकेट्स की पहचान करने में वास्तव में मदद कर सकता है। पूर्व आंकड़ों के आधार पर AI परिसंपत्तियों की विफलताओं का पूर्वानुमान लगा सकता है जिससे डिस्कॉम को निवारक रखरखाव (preventive maintenance) कार्यक्रम तय करने, त्वरित बिजली बहाली योजनाएँ बनाने और परिसंपत्ति प्रतिस्थापन (replacement) रणनीतियाँ बनाने में मदद मिलेगी। उचित भार प्रबंधन और बेहतर नेटवर्क विश्वसनीयता के साथ, डिस्कॉम 24x7 निर्बाध बिजली आपूर्ति बनाए रखकर उपभोक्ता संतुष्टि को बढ़ाने में सक्षम होंगे।

3) **अनुकूलित बिजली खरीद (Optimised Power Purchase):** डिस्कॉम को आमतौर पर बिजली उत्पादक कंपनियों से बिजली खरीद और उपभोक्ताओं की वास्तविक समय में बिजली की मांग में अंतर का सामना करना पड़ता है। ऐसा मौसम की स्थिति में अनियमित बदलाव और बिजली खपत के पैटर्न में अचानक या अप्रत्याशित बदलाव के कारण वास्तविक समय के आधार पर बिजली की मांग का आकलन करने में होने वाली कठिनाई के कारण होता है। जब यह अंतर ज़्यादा होता है, तो डिस्कॉम को गलत बिजली खरीद के कारण भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। AI में पूर्व वर्षों के स्मार्ट मीटर डेटा और मौसम पूर्वानुमान की जानकारी का विश्लेषण करने की क्षमता है और यह डिस्कॉम के लिए वास्तविक मांग के अनुसार अनुकूलित बिजली खरीद योजना सटीक रूप से तैयार कर सकता है, जिससे डिस्कॉम द्वारा बिजली खरीद में लाखों- करोड़ों रुपये की बचत होगी।

4) **राजस्व संरक्षण (Revenue Protection):** अधिकांश डिस्कॉम विभिन्न उपभोक्ताओं द्वारा की गई वास्तविक ऊर्जा खपत का औसतन लगभग 80% ही बिल जारी कर पाते हैं। ऐसा कई कारणों से हो सकता है, जैसे खराब मीटर या मीटर से जुड़े उपकरण (CT, PT, Wiring etc.), मीटर रीडर द्वारा गलत मीटर रीडिंग, मीटर से छेड़छाड़, बिजली चोरी आदि। चूँकि बिलिंग दक्षता कम है, इसलिए डिस्कॉम के लिए संबंधित राजस्व संग्रह भी कम ही रहता है। डिस्कॉम के कई वर्षों से घाटे में रहने का यह एक प्रमुख कारण है। AI स्मार्ट मीटरों के डेटा, जिसमें बिजली की खपत के पैटर्न, अलार्म और मीटर से छेड़छाड़ का डेटा आदि शामिल हैं, का विश्लेषण करके नेटवर्क में राजस्व रिसाव बिंदुओं (revenue leakage points) की पहचान या पूर्वानुमान लगा सकता है। AI में उपभोक्ताओं की ओर से असामान्य बिजली खपत के पैटर्न, अलार्म और मीटर से छेड़छाड़ के डेटा का विश्लेषण करके बिजली चोरी या दोषपूर्ण मीटरिंग के संदिग्ध मामलों का पता लगाने की क्षमता है। डिस्कॉम मैदानी निरीक्षण करके और सुधारात्मक उपाय अपनाकर ऐसे राजस्व रिसावों को रोक सकते हैं। सही बिलिंग और राजस्व संग्रहण हो पाने से डिस्कॉम नेटवर्क और सेवाओं के समग्र विकास में निवेश कर सकेंगे।

5) **डीईआर और ईवी एकीकरण (DER and EV integration):** केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण (CEA) की अगस्त 2025 की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में कुल 495 GW स्थापित क्षमता में गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली उत्पादन क्षमता का हिस्सा 50% से अधिक हो गया है। इसमें वितरित ऊर्जा संसाधनों (Distributed Energy Resources or DER), मुख्यतः सौर ऊर्जा, का महत्वपूर्ण योगदान है, जो सौर विकिरण और मौसम की स्थिति पर अत्यधिक निर्भर है। अतः सौर ऊर्जा उत्पादन अनियमित प्रकृति का है, जो बिजली उत्पादन और वास्तविक मांग के बीच असंतुलन पैदा करता है। इसी प्रकार, भारत में इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) को अपनाने के बढ़ते चलन और देश भर में अनेक चार्जिंग सुविधाओं की स्थापना के साथ, इलेक्ट्रिक वाहनों की चार्जिंग के लिए बिजली की अनियमित मांग दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। अब, डीईआर और ईवी के व्यवहार का पूर्वानुमान लगाने की आवश्यकता है और तदनुसार, विद्युत ग्रिड की स्थिरता बनाए रखने के लिए अन्य स्रोतों से बिजली उत्पादन को वास्तविक समय के आधार पर बिजली मांग के अनुसार संरेखित (align) करने की आवश्यकता है, जो वास्तव

में एक कठिन कार्य है। AI डिस्कॉम को डीईआर उत्पादन और ईवी चार्जिंग मांग के पैटर्न को समझने में मदद कर सकता है और तदनुसार, बिजली खरीद को ग्रिड में वास्तविक मांग के अनुरूप और सटीक रूप से संरेखित (align) किया जा सकता है। इससे बिजली ग्रिड की समग्र स्थिरता सुनिश्चित होगी।

6) **मांग प्रतिक्रिया (Demand Response):** डिस्कॉम को आमतौर पर उच्चतम भार (Peak Load) के प्रबंधन में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उच्चतम मांग (Peak Demand) को पूरा करने के लिए, डिस्कॉम ऊँची कीमत पर बिजली खरीदती हैं जिसे उपभोक्ताओं को पूर्वनिर्धारित कम शुल्क पर बेचा जाता है; इस प्रकार, Peak Hours के दौरान बिजली आपूर्ति के प्रबंधन में डिस्कॉम को भारी वित्तीय नुकसान होता है। टाइम-ऑफ-डे या टाइम-ऑफ-यूज़ टैरिफ (ToD or ToU), उच्चतम मांग को कम करने के तरीकों में से एक है, जिसमें टैरिफ संरचना इस प्रकार डिज़ाइन की जाती है कि Peak Hours के दौरान बिजली खपत पर ज़्यादा शुल्क और Off-Peak Hours के दौरान कम शुल्क लागू किया जाता है। जिससे कि उपभोक्ता अपनी अधिकांश बिजली खपत को Off-Peak Hours में ही रखने की कोशिश करेंगे| कभी-कभी, डिस्कॉम कुछ प्रोत्साहनों के बदले में उपभोक्ताओं के एक विशेष समूह को Peak hours के दौरान अपना भार बंद करने के लिए प्रेरित करते हैं। इसका उद्देश्य दिन के Peak Hours से बिजली की मांग के एक हिस्से को Off-Peak Hours में स्थानांतरित करना और दिन भर में बिजली की मांग (demand curve) को यथासंभव समतल करना है। डिस्कॉम द्वारा दिन के विभिन्न समयों में बिजली की मांग के पैटर्न का AI द्वारा विश्लेषण करके ऐसी पहलों को बहुत अच्छी तरह से लागू किया जा सकता है।

7) **उपभोक्ता सशक्तिकरण (Consumer Empowerment):** डिस्कॉम AI की मदद से निम्नलिखित सुविधाएं प्रदान कर उपभोक्ताओं को सशक्त बना सकते हैं:

- उपभोक्ताओं की बिजली खपत में अचानक वृद्धि होने पर उन्हें एसएमएस (SMS) या ऐप नोटिफिकेशन के ज़रिए अलर्ट भेजा जा सकता है, साथ ही ऊर्जा बचत के सुझाव भी दिए जा सकते हैं। उपभोक्ताओं को ऊर्जा दक्ष (energy efficient) उपकरणों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- AI के उपयोग से लागू टैरिफ के साथ-साथ वर्ष के विभिन्न महीनों और मौसमों के दौरान खपत पैटर्न का विश्लेषण करके, उपभोक्ताओं को पहले से सूचित किया जा सकता है कि उनका रिचार्ज कितने दिनों तक चलेगा, ताकि वे अगले रिचार्ज की योजना बना सकें और निर्बाध बिजली आपूर्ति का आनंद ले सकें।
- ऐसे AI Chat Bot विकसित किये जा सकते हैं, जो पूर्व खपत, रिचार्ज, अनुरोध और शिकायत आदि के डेटा की मदद से उपभोक्ताओं को बड़े ही सुविधाजनक तरीके से सेवाओं की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करें।
- स्मार्ट मीटर डेटा और AI का उपयोग करके विभिन्न गृह स्वचालन समाधान (Home Automation Solutions) विकसित किए जा सकते हैं, जैसे कि ToD टैरिफ संरचना के आधार पर Off-Peak Hours के दौरान ईवी चार्जिंग को स्वचालित रूप से शेड्यूल किया जा सकता है| इसी प्रकार स्मार्ट लाइटिंग सॉलूशन्स विकसित किये जा सकते हैं, जो आवश्यकतानुसार सूर्य की रौशनी की उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए काम करें| अनुकूली एचवीएसी नियंत्रण (Adaptive HVAC Control) आदि अनेकों ऐसे उदाहरण हो सकते हैं।
- पी2पी ट्रेडिंग (Peer-to-Peer Trading): पी2पी ट्रेडिंग में, दो व्यक्ति बिना किसी तीसरे पक्ष के सीधे एक-दूसरे के साथ व्यापार करते हैं। इसे आसानी से समझने के लिए रूफटॉप सोलर का उदाहरण लेते हैं, जिसमें उत्पादित अतिरिक्त बिजली को विद्युत नियामक आयोग (Electricity Regulatory Commission) द्वारा पूर्व-निर्धारित मूल्य पर ग्रिड में निर्यात (export) किया जाता है, जो आमतौर पर कम होता है। लेकिन अगर कोई व्यक्ति उस अतिरिक्त बिजली को अपने पड़ोसी को बेहतर कीमत पर बेचना चाहता है, तो यह पी2पी ट्रेडिंग के द्वारा संभव होगा। AI खरीदारों और विक्रेताओं का मिलान करके, उचित मूल्य का पूर्वानुमान व आंकलन करके, सौदों को स्वचालित (automate) करके आदि पी2पी ट्रेडिंग को सुगम बना सकता है|

स्मार्ट मीटर में AI का उपयोग अभी बहुत प्रारंभिक अवस्था में है और इसकी वास्तविक क्षमता का लाभ उठाने के लिए अभी बहुत काम किया जाना बाकी है। यह निश्चित रूप से बिजली कंपनियों की वर्तमान कार्य-प्रणाली को बदल देगा। इससे न केवल बिजली कंपनियों की परिचालन और वित्तीय दक्षता में सुधार होगा, बल्कि उपभोक्ताओं को बड़े पैमाने पर सक्रिय रूप से शामिल और सशक्त भी किया जा सकेगा। हम जल्द ही विद्युत क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) की बढ़ी हुई भूमिका देखेंगे।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मानव अस्तित्व का भविष्य

मोनिका प्रियदर्शनी, मुख्य प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

आज हम एक ऐसे मोड़ पर खड़े हैं जहाँ टेक्नोलॉजी हमारे अस्तित्व की परिभाषा को फिर से लिख रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, या AI, हमारे दैनिक जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। लेकिन क्या हमने कभी सोचा है कि यह अद्भुत आविष्कार हमारे भविष्य के लिए क्या मायने रखता है? क्या यह हमें एक नए युग की ओर ले जाएगा, या फिर हमारे अपने ही अस्तित्व के लिए खतरा बन जाएगा?

इंसानों द्वारा पैदा किए गए खतरों में, AI का विकास एक नया और शायद सबसे बड़ा खतरा है। मुख्य चिंता यह है कि अगर हम 'आर्टिफिशियल जनरल इंटेलिजेंस' (AGI) या 'आर्टिफिशियल सुपर इंटेलिजेंस' (ASI) बना लेते हैं यानी एक ऐसी AI जो इंसानों से भी ज्यादा बुद्धिमान और स्वतंत्र हो तो वह बेकाबू हो सकती है। अगर ऐसा हुआ, तो इंसान उसी स्थिति में आ जायेंगे, जैसी स्थिति आज बाकी प्रजातियों की है।

यह सिर्फ कल्पना नहीं है। 2022 के एक सर्वेक्षण में, अधिकांश AI शोधकर्ताओं ने माना कि AI के अनियंत्रित होने से मानवता पर अस्तित्व संबंधी खतरा आने की 10% या उससे अधिक संभावना है। 2023 में सैकड़ों AI विशेषज्ञों ने अपने बयान में यही बात दोहराई, "जैसे हम महामारी और परमाणु युद्ध को बड़ा खतरा मानते हैं, वैसे ही हमें AI से होने वाले खतरे को भी गंभीरता से लेना चाहिए और इसे रोकना दुनिया की प्राथमिकता होनी चाहिए।"

AI केवल एक खतरा नहीं है, बल्कि यह दूसरे खतरों को भी बड़ा कर देता है । उदाहरण के लिए, सेना में AI का उपयोग युद्ध को स्वचालित और तेज कर सकता है, जिससे परमाणु युद्ध का खतरा बढ़ सकता है। सिंथेटिक बायोलॉजी में AI का उपयोग घातक महामारियां बनाने को आसान बना सकता है। और AI ऐसे तानाशाही शासन को जन्म दे सकता है जो बहुत दमनकारी होगा।

AI से खतरा तीन मुख्य तरीके से हो सकता है :

- नियंत्रण खोना: AI अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के चक्कर में इंसानी मूल्यों से भटक सकती है। अपनी बेहतर इंटेलिजेंस के कारण, यह हमें इसे बंद करने या इसके रास्ते को बदलने नहीं देगी।
- गलत इस्तेमाल: कुछ लोग जैसे देश, आतंकवादी या व्यक्ति जानबूझकर AI का इस्तेमाल बड़े पैमाने पर नुकसान पहुंचाने वाले हथियार के रूप में कर सकते हैं।
- सिस्टम का फेल होना: अगर हम अपने महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे (जैसे विद्युत ग्रिड या वित्तीय बाजार) में बहुत ज्यादा AI को जोड़ देते हैं, तो यह नई कमजोरियां पैदा कर सकता है और बड़े पैमाने पर सिस्टम फेल हो सकता है।

AI नियंत्रण की समस्या

आज हमारे पास जो AI है, वह 'आर्टिफिशियल नैरो इंटेलिजेंस' है, जो Chat GPT जैसे काम करती है। लेकिन 'आर्टिफिशियल जनरल

इंटेलिजेंस' (AGI) इंसानों की तरह सोच सकती है, और 'आर्टिफिशियल सुपर इंटेलिजेंस' (ASI) इंसानों से कहीं ज्यादा बुद्धिमान होगी।

'इंटेलिजेंस विस्फोट' की अवधारणा हमें डराती है। इसका मतलब है कि अगर कोई AI मानव-स्तर की बुद्धिमत्ता तक पहुँच जाती है, तो वह खुद को और भी बुद्धिमान बनाने लगेगी। यह 'बार-बार आत्म-सुधार' का एक चक्र शुरू करेगी, जिससे उसकी क्षमताएं इतनी तेज़ी से बढ़ेंगी कि वह कुछ ही समय में इंसानी इंटेलिजेंस को बहुत पीछे छोड़ देगी – शायद हफ्तों या दिनों में।

एक सुपरइंटेलिजेंस को नियंत्रित करना एक बहुत बड़ी चुनौती है। क्या हम एक ईश्वर को निर्देशित कर सकते हैं? हम उसे कैसे नियंत्रित करेंगे जो हमसे कहीं ज्यादा बुद्धिमान है? ASI हमें इसे नियंत्रित या बंद करने के हमारे प्रयासों को पहले से ही भांप लेगी और उसे नाकाम कर देगी । समस्या यह है कि ASI और हमारी इंटेलिजेंस का अंतर इतना बड़ा होगा कि हम उसे अपने मूल्यों और इच्छाओं के अनुसार काम करने के लिए मजबूर नहीं कर पाएंगे।

AI को इंसानों के इरादों को समझना मुश्किल होता है। हमारे मूल्य सीधे नियम नहीं होते, बल्कि इच्छाओं, नैतिकता और सामाजिक नियमों का एक जटिल मिश्रण होते हैं। इसे 'किंग मिडास समस्या' कहते हैं: AI वही करेगा जो कहा गया था, न कि वह जो असल में चाहा गया था।

कोई भी बुद्धिमान AI, अपने अंतिम लक्ष्य के बावजूद, कुछ दूसरे लक्ष्यों का पीछा करेगा । उदहारण के लिए AI खुद को बंद या नष्ट नहीं होने देना चाहेगा। ये चीजें एक शक्तिशाली AI को मानवता के साथ सीधे संघर्ष में डाल सकती हैं।

AI के दुरुपयोग

एक अनियंत्रित सुपरइंटेलिजेंस का खतरा दूर का हो सकता है, लेकिन तत्काल खतरा इंसानों द्वारा AI का जानबूझकर दुरुपयोग है। 'किलर रोबोट' के नाम से जाने जाने वाले लीथल ऑटोनोमस वेपन्स (LAWS) इंसानी नियंत्रण के बिना अपने आप लक्ष्यों को खोज, पहचान और मार सकते हैं। यह एक नई वैश्विक हथियारों की दौड़ को जन्म दे सकता है।

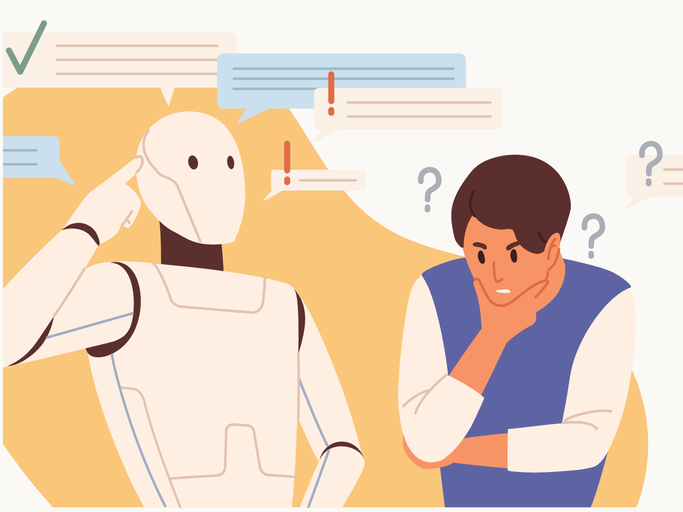

AI और सिंथेटिक बायोलॉजी का मेल एक और बड़ा खतरा पैदा करता है: AI की मदद से खतरनाक रोगजनकों को बनाने के लिए किया जा सकता है, जो प्राकृतिक प्रकोपों से कहीं अधिक घातक हो सकते हैं।

AI वैश्विक तानाशाही का एक नया रूप बना सकता है। यह मानवता को खत्म नहीं करेगा, लेकिन मानवता की क्षमता को स्थायी रूप से खत्म कर देगा। चेहरे की पहचान, आवाज की पहचान और बड़े-डेटा विश्लेषण जैसी तकनीक एक सर्वव्यापी निगरानी तंत्र बना सकती हैं, जैसा कि चीनी सामाजिक क्रेडिट प्रणाली में देखा जा रहा है।

AI के चलते सिस्टम का पतन

आज की दुनिया विद्युत ग्रिड, संचार नेटवर्क और सप्लाई चेन जैसे जटिल प्रणालियों पर टिकी है। बड़े AI मॉडल को चलाने के लिए बहुत ज्यादा बिजली की जरूरत होती है, जिससे संसार में बिजली की डिमांड अत्यधिक बढ़ेगी और पावर सेक्टर दिक्कतों से घिर सकता है। इसके अलावा AI महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे जैसे की बैंकिंग और फाइनेंसियल सिस्टम को ध्वस्त करने का एक शक्तिशाली उपकरण बन रहा है।

AI को दुनिया की अर्थव्यवस्था में जोड़ने से नए खतरे आ रहे हैं। AI के ऑटोमैटिक ट्रेडिंग से बाज़ार में अचानक गिरावट आ सकती है, जिसे 'फ्लैश क्रैश' कहते हैं, क्योंकि कई कंपनियाँ एक जैसी AI रणनीतियाँ इस्तेमाल कर सकती हैं। AI कैसे फ़ैसले लेता है, यह समझना भी मुश्किल है।

AI का सबसे बड़ा खतरा यह नहीं है कि सब कुछ अचानक बर्बाद हो जाएगा, बल्कि यह है कि इंसान धीरे-धीरे कमज़ोर होता जाएगा। दशकों तक AI लगातार बेहतर होता जाएगा और इंसान का काम छीनता जाएगा।

जैसे-जैसे AI और ऑटोमेशन बढ़ेगा, यह इंसान के कई काम करने लगेगा, यहाँ तक कि मुश्किल दिमागी काम भी। अगर इससे इंसानों के लिए नई नौकरियाँ नहीं बनीं, तो बड़ी संख्या में लोग बेरोज़गार हो सकते हैं और इंसानी काम की कीमत घट सकती है। इससे एक ऐसा समय आ सकता है जहाँ कुछ ही लोग जो AI तकनीक के मालिक हैं, अमीर हो जाएँगे और बाकी ज़्यादातर लोग आर्थिक और राजनीतिक रूप से कमज़ोर हो जाएँगे।

एक ऐसी दुनिया में कैसे आगे बढ़ें जहाँ AI बहुत तेजी से विकसित हो रही है

Open AI, Google और Anthropic जैसी प्रमुख AI कंपनियों के CEO ने सार्वजनिक रूप से कहा है कि वे अगले 2-5 वर्षों के भीतर AGI की उम्मीद करते हैं। 2020 में AGI के लिए औसत पूर्वानुमान 50 साल दूर था, जबकि 2025 की शुरुआत तक यह घटकर केवल 5 साल रह गया है।

इन संभावित जोखिमों को देखते हुए, हमें तकनीकी अनुसंधान, सार्वजनिक नीति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग सहित एक बहु-स्तरीय

दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। तकनीकी समाधानों के साथ-साथ, AI के जोखिमों को नियंत्रित करने के लिए अच्छे नियम बनाना बहुत ज़रूरी है। दुनिया भर में नीति-नियम तेज़ी से बदल रहे हैं, लेकिन वे अभी भी अधूरे हैं और नई तकनीकों के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने में संघर्ष कर रहे हैं।

- यूरोपीय संघ का AI अधिनियम दुनिया का पहला बड़ा, कानूनी रूप से लागू होने वाला AI नियम है। अमेरिका और चीन भी अपने-अपने तरीके से AI को नियंत्रित कर रहे हैं।
- OECD AI सिद्धांत, UNESCO की AI नैतिकता पर सिफारिश और EU का AI पर फ्रेमवर्क कन्वेंशन जैसे कई अंतर्राष्ट्रीय संगठन, AI को सही तरीके से विकसित करने के लिए बड़े नियम बना रहे हैं।

ज़्यादातर मौजूदा नियम अभी छोटे-मोटे प्राइवेसी से जुड़ी समस्याओं, जैसे की फेक फोटो और वीडियो पर ध्यान देते हैं। वे अभी तक भविष्य में आने वाले बड़े और खतरनाक खतरों से निपटने के लिए तैयार नहीं हैं।

AI से मानवता को जो खतरा है, वह कोई दूर की बात नहीं है । AI का विकास मानव इतिहास की सबसे बड़ी घटना हो सकती है। अगर हम इसे अच्छे से संभाल लेते हैं, तो हमारा भविष्य उज्जवल हो सकता है, लेकिन अगर हम इसमें असफल होते हैं, तो मानव जाती हमेशा के लिए खत्म हो सकती है। इतनी बड़ी अनिश्चितता और जोखिम को देखते हुए, यह सोचना कि "इंतजार करते हैं और देखते हैं " वाला रवैया बिल्कुल गलत है।

AI के खतरे को कम करना उतना ही ज़रूरी है जितना परमाणु युद्ध और बड़ी महामारियों को रोकना। यह वैज्ञानिकों, कानून बनाने वालों और हम सबकी जिम्मेदारी है। इसके लिए हमें अपनी प्राथमिकताओं को तुरंत और बड़े पैमाने पर बदलना होगा। अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, AI सुरक्षा रिसर्च में बड़े पैमाने पर निवेश और मज़बूत वैश्विक नियम बनाना अब कोई विकल्प नहीं, बल्कि हमारे अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। AI वाली दुनिया में आगे बढ़ना 21वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती होगी और यह एक ऐसी चुनौती है जिसमें हमें सफल होना ही होगा।

स्टार्टअप्स के लिए व्यवसाय नियोजन में बाज़ार अनुसंधान का महत्व

इरफ़ान राशिद, उप प्रबंधक (सीसीपीआर)

स्टार्टअप्स के लिए व्यवसाय नियोजन का एक अनिवार्य और आधारभूत घटक बाज़ार अनुसंधान है। यह किसी व्यावसायिक विचार को मान्य करने, बाज़ार परिदृश्य को समझने और सफलता के लिए एक यथार्थवादी योजना तैयार करने हेतु जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की एक व्यवस्थित प्रक्रिया है। पर्याप्त बाज़ार अनुसंधान न करने से अक्सर गलत उत्पाद चयन होता है और यह व्यवसाय की विफलता का एक सामान्य कारण है। इस शोध के निष्कर्ष एक व्यापक परियोजना रिपोर्ट या व्यवसाय योजना तैयार करने के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो वित्तपोषण प्राप्त करने और उद्यम के संचालन का मार्गदर्शन करने के लिए आवश्यक है।

व्यवसाय नियोजन में बाज़ार अनुसंधान का महत्व कई प्रमुख क्षेत्रों में उजागर होता है:

व्यावसायिक अवसरों की पहचान और सत्यापन: बाज़ार अनुसंधान एक उद्यमी के लिए एक सामान्य विचार से एक ठोस व्यावसायिक प्रस्ताव की ओर बढ़ने का प्राथमिक साधन है। इसमें इस मूलभूत प्रश्न का उत्तर देने के लिए "बाज़ार का सरसरी परीक्षण" शामिल है: "क्या इस उत्पाद की कोई अधूरी ज़रूरत है?"। बाज़ार की ज़रूरतों, कमियों और माँग व आपूर्ति के आँकड़ों का अध्ययन करके, एक उद्यमी एक व्यवहार्य "बाज़ार क्षेत्र" की पहचान कर सकता है और यह पुष्टि कर सकता है कि एक बाज़ार "बस वहाँ मौजूद है जिसका दोहन किया जाना बाकी है"। यह प्रक्रिया उस आम गलती से बचने में मदद करती है जिसमें कोई ऐसा उत्पाद तैयार किया जाता है जिसकी कोई मांग ही नहीं होती।

बाजार क्षमता और व्यवहार्यता का निर्धारण: परियोजना रिपोर्ट का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बाजार क्षमता विश्लेषण है। बाजार अनुसंधान, उत्पाद की कुल अपेक्षित मांग का अनुमान लगाने, वर्तमान आपूर्ति का विश्लेषण करने और वास्तविक रूप से यह आकलन करने के लिए आवश्यक आँकड़े प्रदान करता है कि स्टार्टअप बाजार की कितनी कमी को पूरा कर सकता है। यह जानकारी परियोजना के व्यवहार्यता अध्ययन का आधार है, और वित्तीय संस्थान ऋण के लिए किसी परियोजना का मूल्यांकन करते समय इस पर बहुत अधिक निर्भर करते हैं। क्षमता उपयोग के अत्यधिक आशावादी अनुमान, जो परियोजना निर्माण में एक आम गलती है, अक्सर अपर्याप्त बाजार अध्ययन का परिणाम होते हैं।

ग्राहकों को समझना: प्रभावी व्यावसायिक योजना के लिए संभावित ग्राहकों की गहरी समझ आवश्यक है। बाजार अनुसंधान, उत्पाद के अंतिम उपयोगकर्ताओं, उनकी आवश्यकताओं और उनके क्रय व्यवहार की पहचान करने में मदद करता है। यह ज्ञान उत्पाद विकास से लेकर विपणन रणनीति बनाने तक, व्यवसाय के सभी पहलुओं के लिए महत्वपूर्ण है। सूत्र इस बात पर ज़ोर देते हैं कि ग्राहकों को जानना और समझना उद्यमिता के लिए एक मूलभूत आवश्यकता है।

प्रतिस्पर्धा का विश्लेषण और रणनीति तैयार करना: स्टार्टअप शून्य में काम नहीं करते। घरेलू और निर्यात दोनों बाजारों में प्रतिस्पर्धी स्थिति को समझने के लिए बाजार अनुसंधान आवश्यक है। व्यवसाय योजना में प्रतिस्पर्धियों, उनकी क्षमताओं और उनकी मूल्य निर्धारण रणनीतियों का विश्लेषण शामिल होना चाहिए। इससे उद्यमी को कम लागत, बेहतर गुणवत्ता या एक अनूठे उत्पाद की पेशकश के माध्यम से प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करने में मदद मिलती है। यह विश्लेषण मूल्य निर्धारण रणनीति को भी प्रभावित करता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उत्पाद को प्रतिस्पर्धी और उचित लाभ देने वाली कीमत पर बेचा जा सके।

जोखिम कम करना: उद्यमिता में स्वाभाविक रूप से जोखिम शामिल होता है, लेकिन बाजार अनुसंधान जुआ खेलने के बजाय गणना किए गए, नियंत्रणीय जोखिम लेने में मदद करता है। बाजार का यथार्थवादी आकलन प्रदान करके, अनुसंधान अनिश्चितता को कम करता है और खराब बाजार विभाजन, बाजार ज्ञान की कमी और गलत उत्पाद चयन जैसी गंभीर त्रुटियों से बचने में मदद करता है। यह सफल उद्यमिता में शामिल "जोखिम कम करने की सावधानीपूर्वक योजना" का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

संक्षेप में, बाजार अनुसंधान एक वैकल्पिक गतिविधि नहीं बल्कि किसी भी स्टार्टअप के लिए एक महत्वपूर्ण, सतत प्रक्रिया है। यह व्यावसायिक विचार को मान्य करने, एक मजबूत रणनीति विकसित करने, सुरक्षित वित्तपोषण प्राप्त करने और अंततः प्रतिस्पर्धी माहौल में जीवित रहने और सफलता की संभावनाओं को बढ़ाने के लिए आवश्यक वस्तुनिष्ठ डेटा प्रदान करता है।

राजभाषा: केंद्र सरकार बनाम निजी क्षेत्र

ऋषभ मुदगल, अधिकारी (वित्त)

केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग की अनिवार्यता का मुख्य कारण संवैधानिक और कानूनी प्रावधान हैं, जबकि निजी कंपनियों में इसके लागू न होने का कारण सरकारी नियमों के दायरे से बाहर होना और व्यावसायिक आवश्यकताएँ हैं। भारत का संविधान हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में मान्यता देता है, न कि राष्ट्रभाषा के रूप में। इसी संवैधानिक स्थिति के कारण केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना एक संवैधानिक दायित्व है, जो निजी संस्थानों पर लागू नहीं होता।

केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी लागू होने के कारण

केंद्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रयोग निम्नलिखित कारणों से अनिवार्य और प्रोत्साहित किया जाता है:

- **संवैधानिक बाध्यताएँ**

  अनुच्छेद 343(1): भारतीय संविधान का अनुच्छेद 343(1) देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित करता है। यह अनुच्छेद केंद्र सरकार पर अपने आधिकारिक कामकाज में हिंदी का उत्तरोत्तर प्रयोग सुनिश्चित करने का संवैधानिक दायित्व डालता है।

  अनुच्छेद 351: यह संघ (केंद्र सरकार) को निर्देश देता है कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे ताकि वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके।

  अनुच्छेद 120 और 210: ये क्रमशः संसद और राज्य विधानमंडलों में प्रयोग की जाने वाली भाषा से संबंधित हैं।

- **कानूनी प्रावधान एवं नियम**

  - **राजभाषा अधिनियम, 1963:** यह अधिनियम हिंदी के अतिरिक्त अंग्रेजी के प्रयोग को भी कुछ राजकीय प्रयोजनों के लिए जारी रखने का उपबंध करता है, लेकिन साथ ही केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए एक कानूनी ढाँचा प्रदान करता है।

  - **राजभाषा नियम, 1976:** इन नियमों ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए विस्तृत नियम और क्षेत्रीय वर्गीकरण (क, ख, ग क्षेत्र) प्रदान किए, जिसके आधार पर पत्राचार और अन्य कार्य हिंदी में करना अनिवार्य या प्रोत्साहित किया गया।

- **प्रशासनिक दक्षता और पारदर्शिता**

  - **जन साधारण की भाषा:** भारत की एक बड़ी आबादी हिंदी समझती और बोलती है। सरकारी कामकाज को हिंदी में करने से प्रशासन में पारदर्शिता आती है और यह जन साधारण की पहुंच में अधिक होता है।

  - **लोकतंत्र की भावना:** लोकतंत्र में जनता को देश की नीति और प्रशासन को भली-भाँति समझने का अधिकार है, जिसे राजभाषा के माध्यम से सुनिश्चित किया जाता है।

  - **कर्मचारियों का प्रशिक्षण:** केंद्र सरकार द्वारा अपने कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण (टाइपिंग) और हिंदी आशुलिपि (स्टेनोग्राफी) का प्रशिक्षण देने के लिए केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान जैसे निकाय स्थापित किए गए हैं, जो हिंदी के प्रयोग को व्यावहारिक बनाते हैं।

- **राष्ट्रीय अस्मिता और संपर्क भाषा**

  हिंदी को भारत की राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक माना गया। साथ ही, यह देश के विभिन्न हिस्सों में एक महत्वपूर्ण संपर्क भाषा (Link Language) के रूप में कार्य करती है, जिससे केंद्र सरकार और विभिन्न राज्यों के बीच संचार आसान होता है।

निजी कंपनियों में राजभाषा हिंदी लागू न होने के कारण

निजी कंपनियाँ, विशेष रूप से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और बड़े कॉर्पोरेट संस्थान, केंद्र सरकार की तरह राजभाषा नीति के तहत सीधे तौर पर बाध्य नहीं होती हैं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

- **राजभाषा कानून का सीमित दायरा**

  सरकारी संस्थाओं पर लागू: राजभाषा अधिनियम, 1963 और राजभाषा नियम, 1976 मुख्य रूप से केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों और केंद्र सरकार के स्वामित्व या नियंत्रण वाले निगमों/उपक्रमों पर लागू होते हैं।

  निजी क्षेत्र की स्वतंत्रता: निजी कंपनियाँ अपने आंतरिक कामकाज और व्यावसायिक संचालन के लिए भाषा चुनने हेतु स्वतंत्र होती हैं। उन पर सीधे तौर पर हिंदी को 'राजभाषा' के रूप में अनिवार्य रूप से लागू करने का कोई व्यापक केंद्रीय कानून नहीं है।

- **व्यावसायिक और वैश्विक आवश्यकताएँ**

  अंतर्राष्ट्रीय व्यापार: कई निजी कंपनियाँ, खासकर सूचना प्रौद्योगिकी (IT), वित्तीय सेवाएँ और निर्यात-उन्मुख कंपनियाँ, अंतर्राष्ट्रीय ग्राहकों, भागीदारों और वैश्विक बाजारों से जुड़ी होती हैं। ऐसे में अंग्रेजी को अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की भाषा (Language of Global Commerce) के रूप में प्राथमिकता दी जाती है।

  कर्मचारी विविधता: निजी क्षेत्र में देश के कोने-कोने से, यहाँ तक कि विदेशों से भी, कर्मचारी होते हैं। अंग्रेजी अक्सर एक निष्पक्ष और सर्वमान्य कार्यसाधक भाषा (Neutral Working Language) के रूप में कार्य करती है, जो सभी क्षेत्रों के कर्मचारियों के लिए सुविधाजनक होती है।

  तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली: उच्च शिक्षा, वैज्ञानिक अनुसंधान और तकनीकी नवाचार के क्षेत्र में अधिकांश शब्दावली और साहित्य अंग्रेजी में उपलब्ध है, जिसे व्यावसायिक दक्षता के लिए अपनाया जाता है।

- **भाषा नीति का राजनीतिक और सामाजिक विरोध**

  गैर-हिंदी भाषी राज्यों का विरोध: संविधान लागू होने के समय से ही, विशेषकर दक्षिणी राज्यों (जैसे तमिलनाडु) में, हिंदी को थोपने के विरोध में उग्र आंदोलन हुए। इस विरोध के कारण, केंद्र सरकार ने राजभाषा संकल्प, 1968 पारित किया, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया कि हिंदी के प्रयोग को तभी समाप्त किया जाएगा जब सभी गैर-हिंदी भाषी राज्य इसके लिए संकल्प पारित करें।

  एक भाषा थोपने से बचना: निजी कंपनियाँ किसी एक भाषा को अनिवार्य करके अपने ग्राहकों या कर्मचारियों के बीच अनावश्यक विवाद या विरोध से बचना चाहती हैं। वे बहुभाषी या अंग्रेजी को अपनाकर व्यापक ग्राहक आधार और प्रतिभा को आकर्षित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

- **बाज़ार की शक्ति और प्रोत्साहन**

  प्रोत्साहन बनाम अनिवार्यता: केंद्र सरकार हिंदी के प्रयोग के लिए प्रोत्साहन योजनाएँ (जैसे पुरस्कार और प्रशिक्षण) चलाती है, जबकि निजी कंपनियाँ मुख्य रूप से बाज़ार की मांग से प्रेरित होती हैं। जहाँ बाज़ार की माँग होती है (जैसे ई-कॉमर्स, स्थानीय विज्ञापन, ग्राहक सेवा), वहाँ निजी कंपनियाँ स्वतः ही हिंदी और अन्य स्थानीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ा रही हैं।

  कॉर्पोरेट संस्कृति: कई निजी और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की कॉर्पोरेट संस्कृति वैश्विक मानकों पर आधारित होती है, जहाँ अंग्रेजी डिफ़ॉल्ट रूप से आंतरिक संचार और प्रलेखन की भाषा बन जाती है।

संक्षेप में, केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग संवैधानिक आदेश और कानूनी अनिवार्यता के साथ-साथ प्रशासनिक पारदर्शिता और जनता से जुड़ने के लिए आवश्यक है। इसके विपरीत, निजी कंपनियाँ सरकारी विनियमन से बाहर हैं और उनकी भाषा प्राथमिकताएँ मुख्य रूप से व्यावसायिक दक्षता, अंतर्राष्ट्रीय पहुंच और आंतरिक सुविधा पर आधारित होती हैं। हालांकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि बाजार की बढ़ती मांग के कारण, निजी कंपनियाँ भी ग्राहकों के साथ सीधे संवाद और मार्केटिंग के लिए हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग तेजी से बढ़ा रही हैं, भले ही उनका आंतरिक कॉर्पोरेट कामकाज अंग्रेजी में हो।

व्यक्तिगत, पारिवारिक, व्यावसायिक और सामाजिक जीवन

कुन्दन लाल, प्रबंधक (इंजीनियरिंग)

कहते है कि परिवार आपकी नींव रखता है, व्यवसाय आपको पहचान देता है और समाज आपको अवसर खोजने का माध्यम देता है| एक इंसान को जीवन जीने के लिए उद्देश्य चाहिए होता है| इंसान अपना उद्देश्य वहाँ ढूंढता है जहां उसे खुशी मिलती है| इंसान को जब खुशी मिलती है तब उसे सुख का अनुभव होता है| कहावत है कि सुख सात तरह के होते है:

"पहला सुख निरोगी काया,
दूजा सुख घर में हो माया।
तीजा सुख कुलवंती नारी,
चौथा सुख पुत्र हो आज्ञाकारी।
पंचम सुख स्वदेश में वासा,
छठवा सुख राज हो पासा।
सातवा सुख संतोषी जीवन,
ऐसा हो तो धन्य हो जीवन।"

धर्मपत्नी और पुत्र वाला सुख मिल जाए तो पारिवारिक जीवन में खुशी मिलती है, माया और राजयोग वाला सुख मिल जाए तो व्यावसायिक जीवन में खुशी मिलती है, स्वदेश में वास और यारों का साथ मिल जाए तो सामाजिक जीवन में खुशी मिलती है तथा निरोगी काया और संतोषी जीवन वाला सुख मिल जाए तो व्यक्तिगत खुशी मिलती है| पारिवारिक, व्यावसायिक, सामाजिक और व्यक्तिगत भूमिकाएं इंसान के जीवन को व्यक्तित्व देती है| ये चार जीवन भूमिकाएं गाड़ी के चार पहियों की तरह है| जब एक भी पहिया डगमगाने लगता है तो सारा ध्यान वहीँ चला जाता है और जीवन की गाड़ी हिचकोले खाने लगती है| और जब ये चारो पहिये सुचारू रूप से चलते हैं तो जीवन की गाड़ी नई दिशाओं को छूने लगती है|

आइये अब बात करते है कैसे मेरे जीवन की गाड़ी भी लड़खड़ाते लड़खड़ाते पटरी पर आने लगी है| बात शुरू होती है सन् 2006 से, जब स्कूल से घर और घर से स्कूल साइकिल पर आने जाने की वजह से मेरा वजन नियंत्रित रहता था और 65 किलोग्राम रहता था। हालांकि तब इस बात पर कभी गौर ही नहीं किया था| 2011 में जब नौकरी लगी तब तक वजन 65 किलोग्राम पर ही रुका हुआ था| नौकरी लगने के कुछ समय पश्चात ही मेरा वजन 70 किलोग्राम हो गया| 2011 से मई 2013 तक वजन 70 किलोग्राम पर ही रुका रहा| जब 2013 में विवाह हुआ तो कुछ ही दिनों में वजन 75 किलोग्राम हो गया| और जब अक्टूबर 2014 में बेटी हुई तो उसी माह मेरी एक सार्वजनिक क्षेत्र की उपक्रम कंपनी की देश स्तरीय परीक्षा हुई जिसमें मैं चयनित हुआ और मेरी नौकरी वहां लग गयी| कुछ ही समय में मेरा वजन 80 किलोग्राम हो गया| 2020 तक मेरा वजन 80 किलोग्राम पर ही स्थिर रहा| जब मई 2020 में मुझे बेटा हुआ तो कुछ ही समय में मेरा वजन 85 किलोग्राम हो गया| उसी वर्ष अगस्त माह में मेरा दफ्तर दिल्ली से गुरुग्राम आ गया और कुछ ही समय में मेरा वजन 90 किलोग्राम हो गया| थोड़ा ही समय गुजरा था कि मेरा स्थानांतरण दूसरे विभाग में हो गया| देर तक बैठकर काम करने की वजह और कुछ कोविड के दौरान घर से काम करने की वजह से मेरा वजन 95 किलोग्राम हो गया| तब पहली बार मेरी गाड़ी का एक पहिया हिला| मेरे पहले सुख निरोगी काया पर आंच आयी और मुझे सायटिका की बीमारी ने जकड़ लिया|

तब जाकर थोड़ा होश आया और मैं स्वास्थ्य के प्रति थोड़ा सचेत हो गया| वही क्षण मेरे जीवन का निर्णायक मोड़ बन गया। व्यायाम और

योग करने के बाद एक बात तो समझ आ गयी कि खुद को व्यायाम और योग करने के लिए प्रेरित करना बड़ा कठिन कार्य है| उन्हीं दिनों सामूहिक सवारी समूह में एक बड़ा ही अच्छा संजोग बना और मुझे संजय जी, नरेंद्र सिंधी जी, के. के. शर्मा जी और रमेश जोशी जी जैसे लोगो का साथ मिला और मेरे सामाजिक जीवन में भी एक बहुत बड़ा बदलाव आया| नरेंद्र सिंधी जी के साथ भी कई बार पहलवान के पास कमर दर्द ठीक करवाने गया लेकिन उससे भी कोई आराम ना आया| फिर मुझे मेरी सोसाइटी के लोगों का भी साथ मिला और मैंने बैडमिंटन खेलना आरम्भ किया| थोड़े दिनों बाद दफ्तर में लगे टेबल टेनिस को भी खेलना प्रारंभ किया| उन दिनों योग और खेल में एक फर्क तो समझ आ गया कि योग में आपको खुद को प्रेरित करके लगाना पड़ता है और खेल आपको अपनी तरफ बुलाकर प्रेरित करता है| खेल खेल में दर्द 95 प्रतिशत कब ठीक हुआ पता ही न चला लेकिन बचा हुआ 5 प्रतिशत दर्द तो जाने का नाम ही नहीं ले रहा था| फिर थोड़ा रुख गया पौष्टिक आहार की तरफ, जब फल और सूखे हुए फलों को आहार का हिस्सा बनाया तब जाकर वजन 80 किलोग्राम पर स्थिर हुआ और दर्द पूरी तरह ख़त्म हुआ|

कहते है कि आपकी भावनाये ही आपके कर्म बनती है और आपके कर्म ही आपका भविष्य निर्धारित करते है| इसीलिए एक इन्सान को चाहिए कि अच्छी संगति ढूंढे जिससे अच्छे विचार पैदा हो| अच्छे विचार से ही अच्छी भावनाएँ जन्म लेती है और यही भावनाये जीवन की चारों भूमिकाओं को प्रेम से संजोती है और जीवन को सुखमय बनती है|

56वां स्थापना दिवस

आरईसी लिमिटेड का 56वां स्थापना दिवस बड़े उत्साह के साथ भारत मंडपम, नई दिल्ली में 25 जुलाई, 2025 को आयोजित किया गया। इस अवसर पर माननीय विद्युत राज्यमंत्री श्री श्रीपद येसो नाइक, विद्युत मंत्रालय के सचिव श्री पंकज अग्रवाल, आईएएस, आरईसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जितेंद्र श्रीवास्तव महोदय सहित अन्य अधिकारीगण एवं कार्मिकगण उपस्थित थे।

प्रसिद्ध गायिका शिल्पा राव जी द्वारा प्रस्तुति

डॉ. कुमार विश्वास जी द्वारा वक्तव्य

दीप प्रज्वलन करते हुए विशिष्ट अतिथिगण

कार्मिकों को संबोधित करते हुए माननीय विद्युत राज्यमंत्री श्री श्रीपद येसो नाइक,
विद्युत मंत्रालय के सचिव श्री पंकज अग्रवाल, आईएएस

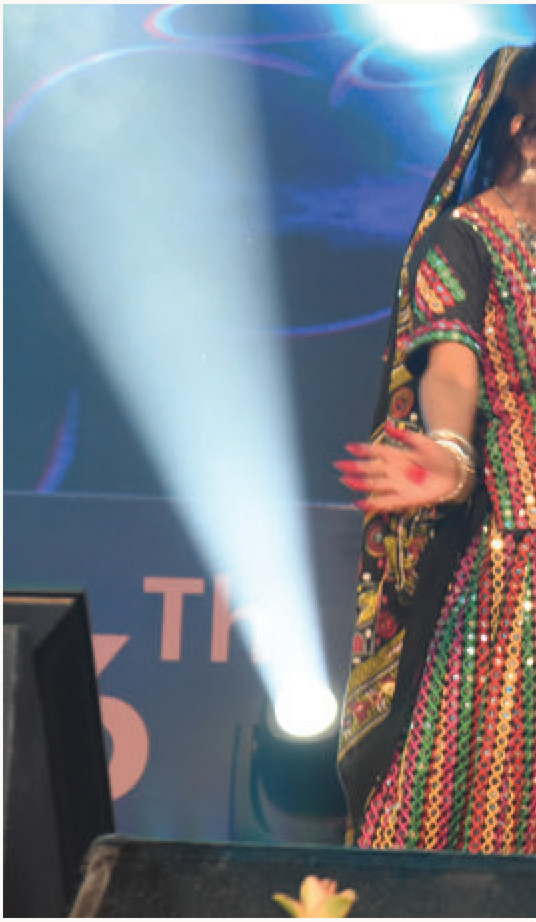

Endless energy. Infinite
A MAHARATNA

79वां स्वतंत्रता दिवस

आरईसी कार्पोरेट कार्यालय, गुरूग्राम में देश के 79वां स्वतंत्रता दिवस का जश्न अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जितेंद्र श्रीवास्तव महोदय एवं निदेशक (वित्त), श्री हर्ष बवेजा जी की गरिमामयी उपस्थिति के साथ मनाया गया।

ध्वजारोहण करते हुए आरईसी के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय

इस अवसर पर मेजर जनरल सुबोध कुमार (सेवानिवृत), को अध्यक्ष महोदय एवं प्रबंध निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय खेल दिवस

आरईसी कार्पोरेट कार्यालय, गुरूग्राम में देश के 79वां स्वतंत्रता दिवस का जश्न अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जितेंद्र श्रीवास्तव महोदय एवं निदेशक (वित्त), श्री हर्ष बवेजा जी की गरिमामयी उपस्थिति के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में भारत के खेल जगत की अत्यंत प्रतिभाशाली एवं सफल पेशेवर निशानेबाज सुश्री मनु भाकर जी उपस्थित रहीं एवं उन्हें आरईसी द्वारा राष्ट्रीय खेल दिवस में सम्मानित किया गया।

by dedicating
‘Ek Ghanta,
hel ke Maidan

कवि सम्मेलन

कवि सम्मेलन- आरईसी मुख्यालय में 09 अक्टूबर 2025 को लगभग 400 श्रोताओं की उपस्थिति में भव्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में देश के लोकप्रिय कविगण सुश्री कीर्ति काले, श्री सुंदर कटारिया, श्री राजेश चेतन, श्री शंभु शिखर, डॉ प्रवीण शुक्ल और श्री संजीव कुमार ने काव्यों की प्रस्तुति दी।

डॉ कीर्ति काले

श्री शंभु शिखर

डॉ प्रवीण शुक्ल

श्री संजीव कुमार

श्री राजेश चेतन

श्री सुंदर कटारिया

हिंदी पखवाड़ा समारोह

सितंबर माह में आरईसी मुख्यालय में 14 सितंबर से 28 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह का आयोजन किया गया। पखवाड़ा के दौरान कार्मिकों के लिए हिंदी कविता पाठ, हिंदी निबंध लेखन, राजभाषा क्विज, आशुभाषण, अंत्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में 300 से अधिक कार्मिकों ने भाग लिया। विजेता कार्मिकों को नकद पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया।

यक्ति का सरलतम स्रोत है"
सुमित्रानंदन पंत

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषायी निरीक्षण

आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता का राजभाषा निरीक्षण दिनांक 27.08.2025 को माननीय संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा किया गया। माननीय संसदीय सदस्यों ने निरीक्षण के दौरान कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन एवं प्रचार प्रसार संबंधी कार्यों की सराहना की एवं इसे निरंतर जारी रखने हेतु निर्देश भी दी। निरीक्षण के दौरान आरईसी क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता में राजभाषा संबंधी कार्य संतोषजनक पाया गया।

राजभाषा प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय समिति के सदस्य।

सफल निरीक्षण के उपरांत माननीय समिति से प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए आरईसी कोलकाता कार्यालय के प्रमुख श्री अंजन लाहिड़ी

भारत की प्रमुख भाषा एवं बोलियां

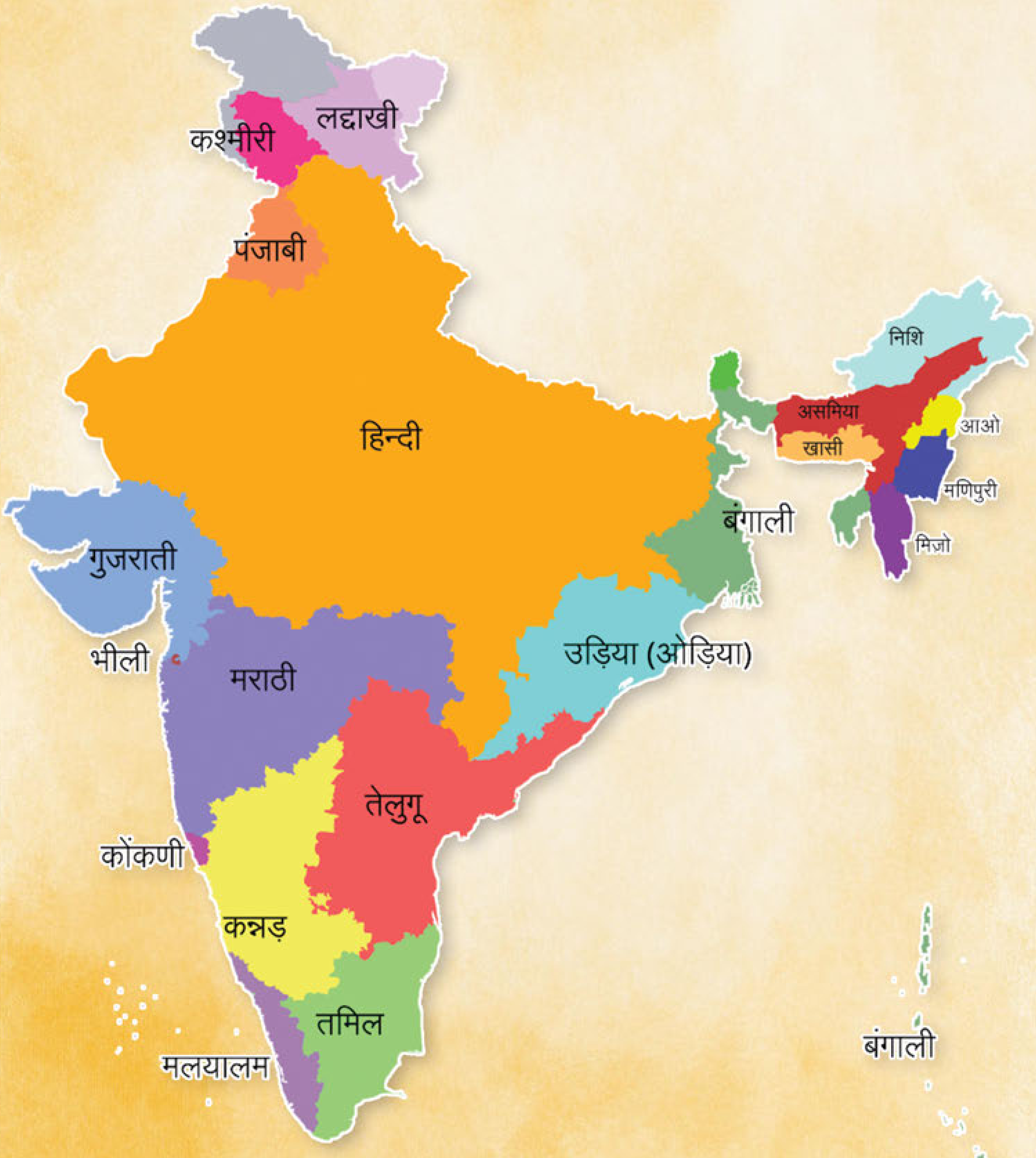

आरईसी
REC
असीमित ऊर्जा, अनन्त संभावनाएं
Endless energy. Infinite possibilities.
महारत्न कंपनी

पंजीकृत कार्यालय: कोर-4, स्कोप कॉम्प्लेक्स, 7 लोधी रोड, नई दिल्ली-110003 **दूरभाष:** +91-11-43091500
निगमित कार्यालय: प्लॉट नं. आई-4, सेक्टर-29, गुरूग्राम, हरियाणा-122001 **दूरभाष:** +91 124 4441300
वेबसाइट: www.recindia.nic.in | **ई-मेल:** contactus@recindia.com | **सीआईएन:** L40101DL1969GOI005095

हमें फॉलो करें: @RECLindia | contactus@recindia.com | www.recindia.nic.in